मनवता में व्यावहारिक अनुसंधान के उपरांत प्रस्तुत शोध प्रबंध

अनुसंधान का विषय–समाज सेवा और मानवता

शोधार्थी का नाम–प्रकाश चन्द टेलर

पंजीयन संख्या–HR/369/4

दिनांक–08 / 05 / 2023

शोधार्थी का पता–कुचामन सिटी, राजस्थान

–:मार्गदर्शकः–

डॉ. अभिषेक कुमार

दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केंद्र

DIVYA PRERAK KAHANIYAN HUMANITY RESEARCH CENTRE

An ISO 21001:2018 Certified Research33 Institution

Regd. Under Indian Trust Act 1882, Government of India

पंजीकृत कार्यालय– ठेकमा, जिला आजमगढ, उत्तर प्रदेश (भारत)

शोधार्थी घोषणा पत्र

मैं प्रकाश चन्द टेलर (शोधार्थी दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केन्द्र) यह प्रमाणित करता हुँ कि प्रस्तुत शोध प्रबंध समाज सेवा और मानवता जो व्यावहारिक अनुसंधान का मूल भाग है तथा अप्रकाशित है। इस शोध प्रबंध को डॉ. अभिषेक कुमार के मार्गदर्शन में हमनें पूरा किया है। मैं यह घोषणा करता हुँ कि इस शोध कार्य में किसी प्रकार की साहित्याक चोरी नहीं की गई है तथा इससे पहले किसी अन्य डिग्री व डिप्लोमा के लिए उपयोग नहीं किया गया है। यह भी प्रमाणित करता हुँ कि हमनें अपना अनुसंधान कार्य दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केन्द्र द्वारा प्रतिपादित सभी नियम व निर्देशों के तहत 7 माह व 13 दिनों में पूर्ण किया है।

दिनांक–21 / 12 / 2023

शोधार्थी के हस्ताक्षर

मार्गदर्शक घोषणा पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केन्द्र के अंतर्गत समाज सेवा और मानवता विषय पर शोधार्थी श्री प्रकाश चन्द टेलर द्वारा किया गया प्रस्तुत अनुसंधान मूल व अप्रकाशित भाग है। इनके द्वारा मेरे मार्गदर्शन में यह शोध कार्य किया गया है एवं शोघ प्रबंध साहित्यिक चोरी रहित, बहुत ही उत्कृष्ठ है तथा शोध प्रकाशन के लिए उपयुक्त है।

वर्तमान में यह व्यावहारिक अनुसंधान कार्य समाज में सामाजिक समरसता, आपसी एकता, प्रेम, सहयोग, परोपकार तथा नैतिकता, मानवतायुक्त सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने में अतिमहत्वपूर्ण साबित होगा। इस तरह का अनुसंधान कार्य करना, अनुसंधान कर्ता की कार्य कुशलता व सच्ची मानवता के प्रति समर्पण को दर्शाता है। यह भी प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी ने अपना अनुसंधान कार्य दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केन्द्र द्वारा प्रतिपादित सभी नियम व निर्देशों के तहत पूर्ण किया है।

दिनांक–21 / 12 / 2023

मार्गदर्शक के हस्ताक्षार

डॉ. अभिषेक कुमार

समाज सेवा और मानवता

दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केन्द्र

शोध प्रबन्ध

शोधार्थीः–प्रकाश चन्द टेलर

पंजीयन संख्या

HR/369/4, 08-05-2023

मार्गदर्शकः–डॉ. अभिषेक कुमार

मुख्य प्रबन्ध निदेशक

डॉ. नानकदास जी

डॉ. अभिषेक कुमार जी

दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केन्द्र

मानव का कल्याण तभी हो सकता है जब वो दूसरों के कल्याण की कामना करें

–:जय मानवताः–

ks typewriting:-✆ 8875154921, ✉ksharma9840@gmail.com

कृतज्ञता ज्ञापन

प्रस्तुत मेरा शोध अध्ययन शीर्षक–समाज–सेवा व मानवता है। इस शोध अध्ययन के माध्यम से समाज में की जाने वाली मानव के द्वारा समाज–सेवा का पक्ष–विपक्ष, समाज–सेवा एवं मानवता में आने वाली समस्याओं, चुनौतियों एवं समाज–सेवा की आवश्यकता, महत्व को समझने का प्रयास किया गया है।

समाज–सेवा तो प्राचीन समय में हुआ करती थी, हो रही है, और आगे भी होती रहेगी। मगर समय के बदलाव के अनुसार वर्तमान में समाज–सेवा भी एक जुनून बन गया है। विभिन्न प्रकार की चुनौतियों के बावजूद मानवता के लक्षण लोगों में देखने को मिल रहे है।

संत कबीरदास जी से प्रेरित मुझे भी समाज–सेवा का शौक शुरू से ही था, फिर समाज–सेवा, साहित्यप्रेमी राष्ट्रीय पुस्कार प्राप्त, साहित्यकार, आदरणीय डॉ. नानकदास जी मंहत, राष्ट्रीय साहित्यकार से अलंकृत डॉ. अभिषेक कुमार जी मैनेजिंग डाइरेक्टर, दिव्य प्रेरक कहानियां, मानव अनुसंधान केन्द्र के निर्देशन में मैंने समाज–सेवा व मानवता में अनुसंधान करने की मन में सोची, क्योंकि अन्य सभी विषयों पर तो कई शोध हो चुके है, हो रहे है। मगर मानवता पर रिसर्च पहली बार हो रहा है। इनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा प्रथम कर्तव्य है।

इस अनुसंधान केन्द्र के सूचना अनुसंधान अधिकारी आर. सी. यादव व अनुसंधान समन्वयक सूर्यप्रकाश जी त्रिपाटी व डॉ. सौरभ जी पाण्डेय का मैं तहदिल से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने समय–समय पर मुझे इस शोध कार्य में अपना अमूल्य मार्गदर्शन दिया। मैं, कमल कुमार आर्य, कुचामन पुस्तकालय, कुचामन सिटी (नागौर) राजस्थान का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मुझे समाज–सेवा संबन्धी, साहित्य, ग्रन्थ उपलब्ध कराये।

मैं, कृष्ण कान्त शर्मा आकोदा (मौलासर) का भी धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने मेरे इस शोध कार्य को लिपिबद करके महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मेरे जीवन में सबसे बड़ा योगदान मेरे स्व. माता–पिता का आशीर्वाद रहा है। तथा मेरे जीवन साथी का तो अनुपम योगदान है, मुझे इस रिसर्च कार्य में बड़ा संबल प्रदान किया।

इसके अलावा मेरे इस पुनित शोध कार्य समाज–सेवा व मानवता पर किये गये अनुसंधान में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से मिले प्रत्येक व्यक्ति के सहयोग के लिए धन्यवाद, आभार प्रकट करता हूँ। आशा करता हूँ मेरा यह अनुसंधान समाज, राष्ट्र एवं विश्व में समाज–सेवा करने के लिए और अधिक प्रेरित करेगा। देश में खुशहाली, शांति एवं प्रेम की भावना में वृद्धि करेगा। तथा लोगों को यह प्रेरणा देगा कि समाज–सेवा व मानवता मनुष्य के जीवन का मुख्य अंग है।

शोधार्थी

प्रकाशचन्द टेलर

संदर्भ / साक्ष्य स्त्रोत

- समाज–विकिपीडिया व गूगल
- समाज सेवा करना व तरीके–गूगल व समाचार पत्र
- स्वामी विवेकान्द जी–उनकी जीवनी पढ़कर, सार
- मानवता का उदाहरण–गूगल
- नारायण सेवा संस्थान की जानकारी–पुस्तक, गूगल व संस्थान के साधक
- मदरटेरेसा–गूगल पत्रिकाएँ मदरटेरेसा व मानवता
- समाजसेवा व विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ–गूगल
- समाजसेवा व सहानुभूति और उदारता का प्रतिक–ब्रह्मलीन योगिराज श्री देवराह बाबाजी के अमृत वचन–कल्याण सेवा गीता प्रेस, पेज संख्या 61
- नाग महाशय, ईश्वर चन्द विद्यासागर–गीताप्रेस सेवा अंक वर्ष 1989 पेज संख्या 215
- अच्छे मानव की पहचान–गूगल अच्छे इंसान के लक्षण
- समाजसेवा तार्किक विश्लेषण–समाज कार्य शिक्षा 2023 गूगल
- मानवतावाद–डॉ. अभिषेक जी की अमृत वाणी

—:अनुक्रमणिका:—

क्र.सं.	अनुसंधान पत्र की रूपरेखा के मुख्य बिन्दु	पृष्ठ संख्या
1	भूमिका	1—4
2	शोध का उद्देश्य	4—5
3	शोध की उपयोगिता	5
4	शोध की संभावना	5—6
5	समाज सेवा की परिकल्पना	6—7
6	समाज सेवा एक तार्किक विश्लेषण	8—9
7	समाज सेवा की भाषा शैली	9—11
8	समाज सेवा व मानवता संदर्भ व्याख्या	12—13
9	समाज की परिभाषाएँ एवं विशेषताएँ	13—17
10	समाज सेवा क्यों आवश्यक है	17—20
11	समाज सेवा कैसे की जा सकती है	20—21
12	मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है	21—23
13	मानवता का अर्थ परिभाषा व जनक	23—25
14	मानवता का उदाहरण	25—28
15	मानवता के विभिन्न लक्षण	28—29
16	जीवन में समाज सेवा का महत्व	29—32
17	वाणी से सेवा कार्य	32—33
18	सजीव प्राणी व मानवता	33—37

19	नारायण सेवा संस्थान व समाज सेवा	37–43
20	मानवतावाद व स्वामी विवेकान्द, कबीरदास जी व महात्मा गाँधी	43–44
21	समाज सेवा व विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ	44–47
22	सेवामय जीवन से समाज सेवा करो	47–49
23	समाज सेवा सहानुभूती व उदारता का प्रतिक	49–51
24	मानवता ही एक असली जीवन है	51–55
25	मानवता की पहचान कैसे हो	55–60
26	मानवता का पतन	60–61
27	समाज सेवा एक चुनौतिपूर्ण कार्य	61–67
28	अच्छे मानव की क्या पहचान	67–70
29	मानव ने मानवता खो दी	70–72
30	मानवता पर अहंकार का हावी होना	72–73
31	मानवतावाद का प्रभाव	73–76
32	मान्यतावाद एक अभिशाप, जिसका हल मानवतावाद	76–78
33	स्वाभिमत (खुद का नजरिया) समाज सेवा	78–83
34	समाज सेवा व मानवता का सार	83–90

समाज–सेवा व मानवता

भूमिका

मनुष्य सर्वशक्मिान ईश्वर की एक अनुपम और अलौकिक कृति है। चराचर जगत में विद्यमान सभी प्राणियों में मनुष्य ही सर्वश्रेष्ठ और विकसित मस्तिष्क का स्वामी है। अपनी प्रखर प्रज्ञा के समुचित उपयोग से नित–नई चुनौतियों का सामना करते हुऐ नऐ आविष्कार को जन्म देने वाला मनुष्य निश्चित रूप से अति संवेदनशील और विकसित मस्तिष्क का स्वामी है। मनुष्य के पास जीवन जीने के लिये संघर्ष युक्तियां और विषम परिस्थितियों से लड़ने के लिए बल भी है। अपने पुरूषार्थ के बल पर मनुष्य नित–नए कीर्तिमान स्थापित करता है।

अपनी इन्ही विशेषताओं की वजह से मनुष्य ऐसे वातावरण का निर्माण करता है जहां उसे अपने दैनिक जीवन में सामंजस्य स्थापित करने वाली हर प्रकार आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता और उपयोगिता सुनिश्चित होती है जिससे वह एक सुखी और खुशहाल जीवन जीने के लिए समर्थ हो जाता है। ऐसे वातावरण को समाज की सज्ञां दी जाती है। समान विचारधारा का आदान प्रदान, नैतिक मूल्यों के वाहक, परिस्थितियों के अनुरूप एक–दूसरें का साथ, सहयोग और जरूरत पड़ने पर जरूरतमंद लोगों की सामर्थ्य अनुसार मदद करने वाले एक से अधिक लोगों के समुदायों से मिलकर बनें एक–दूसरें के प्रति उचित सम्मान और आचरण रखते है और मानवीय मूल्यों को सर्वोपरि रखते हुऐ अपने दैनिक क्रियाकलाप से नित नए आयाम स्थापित करने के लिए तत्पर रहते है।

मानवीय गुणों से परिपूर्ण व्यक्ति एक सभ्य, शिक्षित और विकसित समाज का निर्माण करता है जहां आचरण, सामाजिक सुरक्षा और कर्तव्यों के निर्वहन की जिम्मेंदारी सुनिश्चि होती है। समाज स्वजातीय बंधुओं का वह समूह है जिसमें व्यक्ति हास परिहास और हंसी–ठिठोली के साथ एक दूसरें के सुख दुःख का भागीदार भी होता है। व्यक्ति की मधुर वाणी, उत्तम विचार व व्यवहार और आचरण से सामाजिक समरसता का सृजन होता है। समाज अन्य लोगों के साथ सहयोगात्मक संबन्ध स्थापित करने वाला व्यक्ति ही सर्वश्रेष्ठ प्राणी का स्वरूप प्राप्त करता है।

न हीदृशं संवननं त्रिषु लोकेषु वर्तते।

दया मैत्री च भूतेषु दानं च मधुरा च वाक ।।

अर्थातः प्राणियों के प्रति दया, सौहार्द्र, दान–कर्म, एवं मधुर वाणी के व्यवहार के जैसा कोई वशीकरण का साधन तीनों लोकों में नहीं है।

"There is no other means of subjugation in all the three worlds like the behavior of kindness, cordiality, charity, and sweet speech towards animals,"

अपनी प्रखर प्रज्ञा, बुद्धि, विवेक, विचार और सूझबूझ से मनुष्य नई क्रान्ति लाकर समाज को नई दिशा और गति देता है। मनुष्य विशाल हृदय का स्वामी है जिसमें दूसरों के लिए संवेदना और सहानुभूति के साथ–साथ प्रेम–वात्सल्य, दया, साथ और सहयोगात्मक प्रवृति कूट–कूटकर भरी होती है। संवेदना और सहानुभूति की कसौटी पर खरा उतरने वाला व्यक्ति जब समाज में जरूरतमंद लोगों को देखता है तो उसका हृदय द्रवित हो जाता है और उसके अंतर्मन में समाज कल्याण की भावना जागृत होती हैं और मनुष्य असहाय और जरूरतमंद लोगों की सेवा–सुश्रुसा में लगकर अपना सम्पूर्ण जीवन समाज के लिए ही समर्पित कर देता है। व्यक्ति का जन्म जरूरतमंद लोगों की सेवा, साथ और सहयोग के लिए ही हुआ है। दूसरों के प्रति संवेदना ही मनुष्य के अंतर्मन में सामाजिक परोपकार की भावना को जन्म देती है। परोपकार के संबन्ध में शास्त्रों में निहित वर्णन के अनुसारः

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः।

परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थ मिदं शरीरम्।।

अर्थातः वृक्ष परोपकार के लिए ही फल देते है, नदियां परोपकार के लिए ही बहती है और परोपकार के लिए गाय दूध देती है। सर्वशक्तिमात ईश्वर ने मानव शरीर का निर्माण भी परोपकार के लिए ही किया है।

"Trees give fruits only for charity, rivers flow only for charity and cows give milk for charity. Almighty God has also created the human body for charity."

समाज–सेवा मनुष्य के अंतर्मन में अंकुरित होने वाला एक ऐसा वटवृक्ष रूपी विचार है जिसकी छत्रछाया में असंख्य असहाय, निर्बल, दीन दुःख और जरूरतमंद लोगों को आश्रय मिलता है। जिस मनुष्य के मन में समाज–सेवा का भाव उत्पन्न होता है उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व मानवता से सराबोर हो जाता है। ऐसा मनुष्य मानवता की सेवा के लिए स्वयं को परोपकार के लिए समर्पित कर देता है। उसे अपना और अपनेपन का कोई ख्याल नहीं रहता, उसे स्वहित के बजाय परहित से विशेष लगाव हो जाता है और ऐसा मनुष्य वैराग्य स्वरूप धारण कर सामाजिक चेतना को जागृत करते हुऐ मानवता के लिए खुद को समर्पित कर देता है। ऐसा मनुष्य संपूर्ण धरती को अपना परिवार समझने लगता है। वह अपना सुख–ऐश्वर्य त्यागकर परोपकारी गुण धारण कर मानवता की सेवा में समर्पित हो जाता है, इस पुनित कार्य में उसे अनुपम सुख, शांति और संतोष की अनुभूति होती है।

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटम्बकम्।।

अर्थातः निम्न कोटि का प्रज्ञा हीन मनुष्य अपने और दूसरों में अपनापन और पराएपन का का भेद रखता है। परन्तु ज्ञानी और श्रेष्ठ मनुष्य की दृष्टि में उसके सम्पूर्ण पृथ्वी ही उसका परिवार है।

"A man without intelligece of low class keeps the difference between his own and others' affinity and alienation. But in the eyes of a wise and elevated man, his whole earth is his family,a"

मनुष्य के अंतर्मन में निहित उसके मानवीय गुण ही उसे मानवता के पथ पर अग्रसर करते है। मानवीय गुण हमारी अंतरात्मा की वह प्रतिध्वनि है जिसे मनुष्य सहज भाव से श्रवण करता है और उसे आत्मसात करते हुऐ ईश्वर द्वारा दिखाऐ मार्ग का अनुसरण करता है।

"Only his human qualities inherent in the heart of man lead him on the path of humanity. Human qualities are that echo of our conscience which

man listens instinctively and imbibes it and follows the path shown by God,

चिंतनशील मनुष्य जब मानवता की राह पर चलता है तो वह सबसे पहले उस तरफ ध्यान देता है जहां उसे शून्यता नजर आती है। जहां जन मानस के पास जीवनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं का अभाव होता है। दैनिक जीवन में आवश्यक वस्तुओं के अभाव में जिदंगी जी रहे लोग समाज की मुख्य धारा से कट जाते है और गुमनाम जीवन जीने के लिए मजबूर हो जाते है। ऐसे लोगों का साथ और सहयोग देना तथा उनके प्रति प्रेम–भाव प्रदर्शित करता ही मानवता है।

"आपको मानवता में विश्वास नहीं खोना चाहिऐ।

मानवता एक समंदर है, अगर समुंद्र की कुछ बूँदें गन्दी है,

तो समुद्र गन्दा नहीं बन जाता।"

–:महात्मा गाँधीः–

शोध का उद्देश्य

समाज–सेवा व मानवता पर अनुसंधान करने का मुख्य उद्देश्य यही है कि समाज में व्याप्त पुरानी परम्पराओं के मुताबिक जो मान्यतावाद का सिद्धान्त लोगों में विद्यामान है। उसे मान्यतावाद से निकालकर मानवतावाद पर लाने की सोच में बदलाव लाया है, जिससे समाज में समाज–सेवा के माध्यम से लोगों में प्रेम, सद्भाव, भाईचारे की भावना का विकास हो सके।

पुरानी अंधविश्वास की धारणाओं को छोड़कर समाज में सभी बेसहारों, दुखियों तथा गरीबो के प्रति सेवा–भावना प्रस्फुटित हो सकेगी।

शोधार्थी प्रकाश चन्द टेलर इस अनुसंधान कार्य को करके अपनी महत्वपूर्ण सेवा भावना को जनकल्याण से जोड़कर जीवन मूल्यों में सेवा–भावना को दर्शाना चाहता है। आज के वर्तमान युग में मनुष्य में मानवता का पतन देखा जा रहा है। इंसानियतता खो गई है।

उसे इस अनुसंधान कार्य के द्वारा लोगों में समाज–सेवा के प्रति पुनः जागरूकता लाने का प्रयास किया गया है। इंसान सेवा–कार्य के प्रति मानसिक रूप से अवश्य तैयार होगा, जिससे समाज, राज्य, राष्ट्र यहाँ तक कि विश्व में समाज–सेवा व मानवता का एक पुनित संदेश प्रसारित होगा। जिससे विश्वबन्धुत्व की भावना में उत्तरोतर वृद्धि हो सकेगी।

करते है सच्चे दिल से जो सामाजिक सेवा

वो दिखावा कभी नहीं करते

लाख आते है रास्ते में रोकने वाले

यह लोग किसी से नहीं ड़रते

शोध की उपयोगिता

समाज–सेवा व मानवता पर किये गये इस अनुसंधान से समाज में यह संदेश जाऐगा, कि इस दुनियाँ में आये ही है, तो क्यों नहीं आपस में इंसान एक दूसरे से प्यार, स्नेह, भाईचारे व परोपकार की भावना से कार्य करे। समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन करके समाज को नई दिशा प्रदान करने में इस शोध पत्र की बड़ी उपयोगिता होगी। लोगों में सद्भाव, सौहार्द, प्रेम, सच्ची इंसानियतता का प्रादुर्भाव होगा। इंसान में सकारात्मक सोच विकसित होगी।

मध्यमवर्ग का जीना बेकार है

अमीरों के हाथों में सरकार है

शोध की संभावनाएँ

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में अनुसंधान कर्ता ने समाज में व्याप्त सामाजिक असमानताओं, विषमताओं पर, समाज–सेवा में आने वाली विभिन्न चुनौतियों एवं समस्याओं का विश्लेषण करके यह बताने का कार्य किया है कि इंसान विकट संघर्षो का सामना करते हुऐ भी समाज–सेवा का कार्य निर्बाध रूप से कर सकता है। विभिन्न विद्वानों, लेखकों, तथा सामाजिक संस्थाओं के द्वारा किये गये

समाज–सेवा व मानवता के महत्व को समझकर मानवता की उपयोगिता को स्थान दिया गया है।

इस शोध कार्य में शोधकर्ता ने समाज–सेवा व मानवता पर समाज में बेसहारा, गरीबवर्ग, दलितवर्ग व कमजोर व्यक्तियों के समूह की सहायता करने की सलाह देकर एक बहुत बड़ा पुन्य का कार्य किया है। जो मानवता के महत्व को उजागर करता है। इस अर्थ तन्त्र मे भी समाज–सेवा के महत्व को बताते हुऐ लोगों को सेवा–कार्य करने के लिए उनमें नई सकारात्मक विचारधारा को उत्पन्न करने का नेक कार्य किया है।

आज तक कई विषयों पर शोध कार्य किये गये है, हुऐ है, हो रहे है, मगर मानवता के इस विषय पर कभी अनुसंधान नहीं हुआ। मानवता की गहराई इतनी है, मनुष्य वहाँ तक पहूँच ही नहीं पाता। मानव होने के नाते उसका मानवता के विषय में जानना जरूरी हो गया। इसीलिए मानवता पर अनुसंधान समाज–सेवा के माध्यम से किया गया है। क्योंकि समाज मानवों का ही समूह होता है। यहाँ मानव होगा, वहाँ समाज का निर्माण होगा। तदुपरांत समाज–सेवा प्रस्फुटित होगी।

अतः उक्त विषय समाज–सेवा व मानवता पर अनुसंधान की संभावना ने जन्म लिया, और शुरू हो गई इसकी प्रक्रिया। इससे प्रत्येक व्यक्ति जो समाज–सेवा से नहीं जुड़ा हुआ था, वह भी जुड़ जाऐगा और मानवतावादी दृष्टिकोण अपना कर मानव सेवा के कार्य को अंजाम देने लेगेगा।

इंसान बन कर इंसानों की मदद करो

यूँ मज़हब के नाम पर ना अब लड़ो

समाज–सेवा की परिकल्पना

अनेको विषयों पर अनुसंधान हो रहा है, हुआ है, मगर इस विषय पर अनुसंधान करना मेरा ध्येय इसलिए बना कि जो भी आज तक किसी विषय पर रिचर्स हुआ है, उसे करने वाला मानव ही है। इस काली खोपड़ी वाले के दिमाग का ही सारा खेल है। मानव वैसे भी मानव समाज में ही निवास करता है। लोगों के बीच में ही रहकर जीवन की सारी गतिविधियों को संचालित करता है। मेरे दिमाग

में भी एक कल्पना ने जन्म लिया, समाज–सेवा व मानवता दोनों एक दूसरे के साथी है।

आज तक कई शास्त्रों में, कई पत्रिकाओं में, कई ग्रन्थों एवं उपनिषदों से मनुष्य की गतिविधियों की जानकारी हो गई है। जिनमें मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य की सेवा करना सब सेवाओं से पृथक का उल्लेख मिलता हे। आदिकाल से लेकर आधुनिककाल का सफर मानव की कहानी बताती है। पहले का मानव क्या था, और आज वह कहाँ तक पहूँच चुका है। सर्वविदित है।

मेरे मन में एक कल्पना का उदय हुआ पहले भी लोग समाज सेवा से जुड़े हुऐ थे। एक दूसरे के दुःख दर्द को समझते थे, एक दूसरे की मदद करते थे। मगर आज के इस युग की समाज–सेवा व मानवता का आज के परिपेक्ष्य में क्या स्थान रह गया है।

मैं समाज–सेवा पर इसलिए अनुसंधान करना चाहता हूँ, जिससे मेरे द्वारा इस विषय पर दी गई सलाह से नयी शैली व सेवा करने के तरीके से मनुष्य की भावना बदलेगी। उसके मन से मानवता (इंसानियतता) के मोती निकलेंगे। वापस मानव के प्रति प्रेम, सौहार्द्र जागेगा।

इसके लिए सबसे पहले मैं समाज–सेवा की भावना स्वयं से ही करना शुरू करूँगा।

उसके बाद आगे की रणनीति अपनाकर समाज में उसे क्रियान्वित करूँगा। ताकि लोग यह नहीं कहे कि खुद तो सेवा से दूर है। और हमें समाज–सेवा करने को प्रेरित कर रहा है। इसके लिए स्वयं का अवलोकनं करूँगा, फिर समाज में इसे लागू करने का प्रयास किया जाऐगा। कड़ी से कड़ी जुड़ती जाऐगी, तथा एक वैज्ञानिक सिद्धान्त के अनुसार सब लोग उसका अनुसरण करने लग जाऐंगे। इस प्रकार प्रत्येक मानव में समाज के प्रति सेवा की भावना में वृद्धि होगी। मानवता का प्रकाश फैलना शुरू हो जाऐगा। इस प्रकार की परिकल्पना करके एक मानवता के वातावरण बनाने में मदद मिलेगी।

किसी का किया एहसान कभी भूलो मत

अपना किया एहसान कभी याद करो मत

समाज सेवा एक तार्किक विश्लेषण

मैं इस समाज–सेवा मानवता के प्रमुख बिन्दु से जोड़कर विश्लेषण करना चाहता हूँ। व्यक्ति व समाज आपस में एक दूसरे से जुड़े होते है। मानव समाज में ही रहने के कारण उसमें समाज के प्रति कुछ करने का मानस बनता है। समाज के बिना वह कुछ नहीं कर सकता। व्यक्ति का कोई अस्तित्व ही नहीं है।

मनुष्य की आवश्यकता की पूर्ति समाज से ही संभव होती है, और समाज का अस्तित्व भी व्यक्ति के बिना कुछ नहीं होता। जब हम मानव जीवन का विश्लेषण करने लगते है तो हमारे सामने दो आधार आते है।

1. प्राणी शास्त्रीय आधार
2. सामाजिक आधार

इन्ही आधारों पर ही मनुष्य को समाज में स्थान मिल पाता है। यदि ये आधार नहीं होते तो शायद मानव समाज के बीच नहीं रह पाता। मनुष्य जब इस धरती पर आता है तो वह केवल प्राणी–शास्त्री प्राणी कहलाता है। वंशानुक्रम से उसे कुछ मानसिक एवं शारीरिक विशेषताएँ मिलती है। मगर उसे सुयोग्य समाजिक प्राणी के रूप में विकसित करने में समाज की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है।

अतः हम निष्कर्ष के तौर पर कह सकते है कि मानव के सामाजिक विकास का आधार समाज ही है।

हाँ हमने यह भी देखा है कि प्राणीशास्त्री गुण रहने के उपरांत मनुष्य समाज के सम्पर्क में ही रहता तो वह मनुष्य नहीं बन सकता। यहाँ पर यह बात निकलकर आती है कि समाज भी किसी सामाजिक प्राणी का विकास तब तक नहीं कर सकता जब तक उसे प्राणीशास्त्री रूप में मानव प्राप्त न हो। अतः सामाजिक प्राणी का निर्माण करना कोई चमत्कार नहीं है। अपितु व्यक्ति व समाज के आपसी तालमेल का ही परिणाम है। उसी के आधार पर वह सामाजिक प्राणी बनता है। इसलिए व्यक्ति और समाज दोनों का ही होना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। दोनों ही एक दूसरे के पूरक माने गये है।

कई शताब्दियों से अनेक लेखकों ने मानव व समाज के आपसी संबंध में कई उपागमों व दृष्टिकोणों का प्रतिपादन किया। मनुष्य व समाज के आपस के संबन्धों को समझने के लिए हमें इनके दृष्टिकोणों को जानना होगा। तभी मानव–सेवा की आगे की कार्यवाही संभव हो पायेगी। मानवता से ही मानव–सेवा का जन्म होता है। सुसंस्कृत यदि मानव होगा, तो अवश्य ही समाज–सेवा भी उत्कृष्ट ही होगी।

समाज सेवा का मौका दो

यह कहकर वो जीत जाते है

जनता को लूट कर पांच साल

फिर आकर हाथ फैलाते है

समाज–सेवा की भाषा शैली

कोई भी अनुसंधान हो, लेखन शैली ऐसी होनी चाहिऐ कि जिस विषय पर लेखन कार्य किया जा रहा है वह लिखाई स्पष्ट और संक्षिप्त होनी चाहिऐ। ऐसे में साधारण हिन्दी शब्दों का प्रयोग अपेक्षित है। यदि आज कलिष्ट शब्दों का उपयोग करेंगे तो पाठकगण उसे पढ़ने मे रूचि नहीं लेंगे। तकनीकी, अध्ययनशील एवं कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिऐ। जो लिखाई लेखक अनुसंधान कर्ता ने लिखी है वह एक साधारण हिन्दी भाषियों के समझ में आ जानी चाहिऐ। इसके लिए उच्च स्तर की हिन्दी या किसी क्षेत्र में विशेष अध्ययन की आवश्यकता नहीं है।

प्रस्तुत अनुसंधान पत्र में अनुसंधानकर्ता श्री प्रकाश चन्द टेलर ने समाज–सेवा मानवता पर जो अपने विचार रखे है, वो वाकई सुधरे हुऐ आसान, सरल एवं एक साधारण हिन्दी का जानकार मानव आसानी से ग्रहण कर सकेगा।

समाज–सेवा करने की अपनी एक अलग ही पद्धति होती है, उसकी शैली अलग ही होती है, जिसके माध्यम से समाज–सेवा के लोगों की सेवा की जा सकती है। प्राचीनकाल से चली आ रही रूढ़ियाँ है–सांप्रदायिकता अंधविश्वास है, दृढधर्मिता जागृति की कमी होना है। इन सबका सामना करते हुऐ समाज को सही रास्ते पर खीच लाना एक साधारण इंसान का कार्य नहीं हो सकता। एक ऊँची सोच, सकारात्मकता एवं सेवाभावी इंसान ही इस कार्य को करने की सोच सकता है।

आज समाज में सभी व्यक्ति एक दूसरे पर खीचातानी करते है। उनसे समाज–सेवा की कैसे उम्मीद की जा सकती है। समाज–सेवा करने में व्यक्ति को कई सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक, मानसिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। आधुनिक परिपेक्ष में आज का मानव स्वार्थता के जाल में फँस चुका है। ऐसे में उपर उठकर यदि मनुष्य मानव सेवा करता है, तो इससे बढ़कर पुण्य का काम और क्या होगा? वह अपने तरीके से लोगों को समझाबुझा कर उनमें दया कमजोर वर्गो की सेवा सहायता करने के लिए अभिप्रेरित कर सकेगा।

यह सब समाज–सेवा करने वाले के कार्य करने की शैली पर निर्भर करेगा। वह किस प्रकार इंसानों को समाज–सेवा करने के लिए अभिप्ररित करता है। यही समाज–सेवा करने की भाषा शैली कहलायेगी।

समाज–सेवा करने वाले को एक ऐसे व्यक्तित्व को लोगों के सामने वालों के सम्मुख रखना होगा, कि उसके व्यवहार को देखते ही लोग उसका कहना माने और सेवा–कार्य में उसके साथ जुट जाऐ।

इंसान जो सेवा कार्य कर रहा है, समाज के दूसरे लोग जिनके पास पैसा तो बहुत है, मगर वो सेवा कार्य से अनभिज्ञ होते है। ऐसे में आवश्यकता है, उन्हें सेवा कार्य करने के लिए अभिप्रेरणा की। यह अभिप्रेरणा एक समाज–सेवा करने वाला इंसान ही उन घनाठ्य व्यक्तियों का उनके मानस पटल पर आये हुऐ मैल को हटा सकता है। सेवाभावी इंसान को कार्यकलापों को देखकर उनके ह्रदय को बदला जा सकता है।

मानवता की सुगन्ध को चहूँओर बिखेरना होगा। समाज में प्रत्येक वर्ग के लोगों तक समाज सेवा के महत्व को समझाते हुऐ मानवता के इस पावन पवित्र कार्य का प्रचार–प्रसार करना होगा।

मनुष्य के सामाजिक कार्यो में अपने को समाहित करना उसके कार्य शैली पर निर्भर करता है। हमारा देश सर्वधर्म, धर्म निरपेक्षता, समानता वाली विचारधारा वाला राष्ट्र है। यहाँ सभी मतों को मानने वाले निवास करते है। सभी जाति, बिरादरी, धर्मावलम्बी मानव का निवास है। इसलिए इन सबका ध्यान रखते हुऐ समाज–सेवा कार्य को अंजाम देने वाले के साहस को कोटि–कोटि प्रणाम करता हूँ।

"न देवालय होगा, न देव में विश्वास होगा।

इंसान ही इंसान के लिए आराध्य होगा।।"

आनेवाले समय में मनुष्य में मान्यतावाद को सोच हट जाऐगी, और मानवतावाद की खुशबू चहूँओर फैलेगी।

दुनियाँ में ऐसी क्या चीज है, जिसे प्राप्त नहीं किया जा सकता बस आवश्यकता है, मनुष्य के दृढ़ संकल्प की। मनुष्य को समाज–सेवा के द्वारा उन बेसहारा, दीनदुखियों, गरीबों की सेवा करके उनके हृदय से निकले आशीर्वाद एवं दुआओं को प्राप्त करना होगा।

"कुछ कर गुजरने के लिए, मौसम नहीं मन चाहिऐ।

साधन सभी जुट जाएँगे, दृढ़ संकल्प का धन चाहिऐ।।"

अतः समाज–सेवा का संकल्प हमें सभी को लेना है, तभी मानवता के सच्चे सिद्धान्त को समझकर मान्यतावाद से मानवतावाद की सुगन्ध इस विश्व में फैलाने में हम कामयाब हो सकेंगे।

जो जरूरतमंद लोगों की मदद करता है

बदले में दुआओं से अपनी झोली भरता है

लोग भी उसके साथ चलने लेगते है

जो भी समाजसेवा के रास्ते पर चलता है

समाज–सेवा व मानवता संदर्भ व्याख्या

समाज–सेवा से बढ़कर दुनियाँ में कोई भी व्यवसाय, धन्धा, अन्य कार्य बड़े नहीं हो सकते है। समाज–सेवा यानि व्यक्ति इंसान की सेवा प्रभु की सेवा से बढ़कर मानी गयी है। इस सेवा से बढ़कर कोई धर्म पुण्य नहीं है। अगर सही अर्थो में देखा जाये तो निस्वार्थ सेवा ही असली मानव सेवा कहलाने लायक होगी।

यही सच्ची मानवता को दर्शाती है। हम सभी इस दुनियाँ में आये तो हम सब पहले मानव है। मानव होने के नाते हमारा यह फर्ज बनता है कि मानवता (इंसानियतता) के धर्म का पालन करे। मगर बड़ी विड़म्बना है कि आज हमारा समाज किस दिशा की ओर अग्रसर हो रहा है, उसे देखकर अहसास होता है मानवता व आत्मियता का आभाव देखा जा रहा है। दूसरी तरफ ऐसा माहौल भी बन रहा है, कुछ लोग समाज–सेवा के माध्यम से मानवता का परिचय भी दे रहे है। वो समाज को मानवता का पाठ भी पढ़ा रहे है।

"सेवा हमारी भाषा, पूजा हमारा नारा।

जग का हर एक इंसा, प्राणों से हम को प्यारा।"

समाज–सेवा के कार्यो में पहले की अपेक्षा आज के इस आधुनिक युग में लोगों द्वारा बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने का वातावरण भी बना है। आज प्रत्येक व्यक्ति, संस्था, और हर समाज में मानव जाति के किसी समाज, किसी भी सम्पदाय या किसी भी जाति का त्यौहार पर्व हो बढ़चढ़ कर इंसान वहाँ जाकर समाज के लोगों की सेवा करने में जुट रहा है। बड़ा हर्ष का विषय है, मानवता की खुशबु दिनों दिन समाज में फैले इसी उद्देश्य को लेकर हमने यह समाज–सेवा के इस सुन्दर शीर्षक पर मानवता के सभी उद्देश्यों को इंसान के मस्तिष्क पटल पर स्थाई रखने के प्रयास में यह शोध पत्र का लेखन किया है।

जीवन में समाज–सेवा से ऊँचा स्थान अन्य कोई कार्य का नहीं हो सकता। अतः समाज के प्रत्येक इंसान को अपने सामाजिक एवं पारिवारिक दायित्वों को निभाते हुऐ समाज–सेवा के लिए भी समय अवश्य निकालना चाहिऐ। गरीब बच्चों

को, निराशित व्यक्तियों को, दुखीबेसहारा इंसानों को सहारा देकर उनकी सेवा बंदगी करनी चाहिऐ। यह संदर्भ व्याख्या समाज–सेवा व मानवता के परिपेक्ष्य में समाज–सेवा के लिए समाज को प्रेरित करेगी। इंसानों में दया, प्रेम, दयालुता, परोपकार तथा दूसरों के लिए कल्याणकारी सोच को उजागर करेगी। यही सच्ची समाज–सेवा व मानवता कहलायेगी।

जिस दिन मरोगे उस दिन यह समाज ही

जलाकर अंतिम संस्कार करेगा

समाज का जो कर्ज है वो तो चुका दो यारो

जीते जी समाज सेवा में थोड़ा हाथ तो

बंटा दो यारो

–ःसमाज की परिभाषाऐंः–

गिडिंग्स के अनुसार– ंसमाज स्वयं संघ है वह एक संगढन और व्यवहारों का योग है, जिसमें सहयोग देने वाले एक–दूसरे से संबधित होते है।

मैकाइवर व पेज के अनुसार– समाज चयनों व प्रणालियों की सता व पारास्परिक सहयोग की अनेक समूहों व भागों की मानव व्यवहार के नियंत्रणो और स्वाधीनताओं की एक व्यवस्था है।

स्वामी विवेकानंद एक समाज सुधारक से अधिक एक धर्म गुरु के रुप में जाने जाते है। वो युवाओं को ज्यादा से ज्यादा अपना केरियर बनाने के लिए प्रोत्साहित करते थे। विवेकानंद के अनुसार उन्होंने मानवता के विचारों को अधिक बढ़ावा दिया। समाज में मनुष्य का ही एक बोलबाला रहता है इसलिए समाज मानव से ही बनता है, वही से मानवता का उदय होता है।

उनके मतानुसार मनुष्य में देविय शक्ति होती है वह एक प्रकार से ईश्वर का प्रतिबिंब होता है। मानव जितना अन्दर से पवित्र होगा, उसके अन्दर की देवीय शक्ति उसके बाहर की ओर झलकती है।

हमें विदित है कि समाज और मनुष्य का आपस में इतना गहरा नाता है। दोनो एक होंगे, विचार मिलेंगे तभी असली समाज का निर्माण होगा। इसलिए हम कह सकते है कि समाज उन व्यक्तियों के समूह को इंगित करता है, जिनमें मानवता, इंसानियत के लक्षण दिखाई देते है।

मानवता से ओतप्रोत व्यक्तियों के समूह को समाज कह सकते है। प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक प्राणी के रुप मे अपनी–अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति समाज में ही कर पता है।

वैसे समाज की परिभाषाओं में विभिन्न विद्धानों ने अपने अपने विचारों को रखा। वास्तव में देखा जाय तो व्यक्तियों के बीच पाये जाने वाले संबन्धों और अन्त क्रियाओं द्वारा ही सामाजिक जीवन का निर्माण सम्भव हुआ है।

इस प्रकार हम पाते है कि कुछ भिन्नताओं के बावजूद सभी परिभाषओं में इस बात पर सहमत है कि समाज का असली आधार सामाजिक संबध ही है। समाज रीतियों और कार्यप्रणाली प्रभुत्व व पारस्परिक सहायता, विविध समूहों, श्रेणियों, मानव के व्यवहार के नियंत्रणो व स्वतन्त्रताओ की व्यवस्था है।

अब हम समाज की परिभाषा व अर्थ को समझकर इसी में जो समाज में व्यक्ति रहता है वह समाज के अन्य लोगो की अपनी ओर से क्या सेवाएँ कर सकता है तो आइये समाज सेवा का अर्थ जानने के लिए आगे बढते है। समाज कार्य एक शैक्षिक व व्यावसायिक विद्या है जो सामूदायिक संगढन व अन्य तरिको से लोगो व समूह के जीवन–स्तर को खुशहाल बनाने की चेष्ठा करता है। समाज सेवा (Social Service) एक ऐसा नेक कार्य काफी है, जिसमें इंसान की सेवा करने का प्रकल्प होता है। किसी न किसी तरह से उद्देश्य बस एक ही होता है, मानव की सेवा की जाये। समाज के सामाजिक कार्य करने वाला व्यक्ति होता है, जहाँ सामाजिक कार्य समाज सेवा से अलग होता है। सामाजिक कार्य को पेशेवर के रुप में आंका है।

बेईमानी के पैसे पर जो पलते नहीं

गलत रास्तों पर जो कभी चलते नहीं

ऐसे हेाते है कुछ अच्छे लोग भी

जो कभी किसी का बुरा करते नहीं

समाज सेवा

प्रस्तावना–समाज सेवा एक व्यापक अवधारणा है। किसी भी समाज को एक सामान्य स्तर से उपर उठाने के उद्‌देश्य से किये गये कार्य को समाज सेवा के रुप में स्वीकार किया गया है।

समाज सेवा का अर्थ– इस शब्द का मतलब स्बैच्छिक समाजिक कार्य कर्ताओ के द्वारा किसी भी इंसान की आवश्यकता की पूर्ति करने से है। इसमें न तो विधिवत असवश्यकताओं का अध्ययन किया जाता है, न ही साधनों पर विचार। और न ही इस बात पर विचार किया जाता है सामने वाला व्यक्ति अपनी सहायता स्वयं कर सके। समाज सेवा में किसी प्रकार के कोई प्रशिक्षण की भी आवश्यकता नही है। इस सेवा में सेवा करने वाला स्यमं ही अभिप्रेरित होकर मानवता लिए हुए सामनें वाले की सेवा करता है। मानव सेवा को ध्यान में रखते हुए वह दूसरे का कल्याण करनें की मंशा से यह पुनित कार्य करता है।

समाज सेवा के उदाहरण

1) आग की लपेटों में जलती हुई इमारत में फँसे लोगो को बचाने का अनुपम सेवा कार्य। उन्हें बाहर निकालने में मदद करना।

2) कही बाढ आजाऐ तो वहाँ पर फॅसे लोगो को बाहर निकालकर सुरक्षित स्थानो तक पहूँचाना। उनके लिए राहत सामग्री की व्यवस्था करना।

3) सड़क पार कर रहे बुजुर्गो, व्यक्तियों की मदद करना।

4) विकलांग व्यक्तियों को सड़क पार कराना। इस प्रकार कई प्रकार से हम समाज सेवा कर सकते है।

समाज सेवा की परिभाषाओं में विभिन्न विद्वानों के विचारो को भी जान सकते है–

हेरी एम केसिडी के अनुसार– वे संगढित कार्य जो प्रत्यक्ष रुप से प्रथाओं व रुढियों से संबधित है और जो मानव साधनों की रक्षा और उन्नति के लिए कार्य करते है, वह समाज सेवा है।

श्रीमती दुर्गाबाई दशमुख के अनुसार– समाज कल्याण का अर्थ साधारण समाज सेवा जैसे शिक्षा, स्वास्थ आदि से भिन्न है। समाज कल्याण के विशिष्ट कार्य में समाज के दुर्बल विकलांगो को मदद व लाभ पहुॅचाने के अतिरिक्त, शिशुओं, महिलाओ व अंगभंगो, मंद बुद्धि मनुष्य व इसी प्रकार अन्य इंसानों के हित में की गई सेवाओं से है।

समाज सेवा की विशेषताएॅः–

कैसिडी ने इस संदर्भ में अपनें विचार रखे है–

1) समाज सेवा समाज द्वारा अपने ही व्यक्तियों की सुरक्षा मानव हितार्थ संसाधन के विकास स्वरूप प्रदान की जाने वाली सेवाएॅ है।

2) इसके अन्तर्गत एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति की सेवा भावना से प्रेरित सेवा की जाती है।

3) इसके लिए न तो किसी प्रशिक्षण की जरूरत होती है, न किसी निश्चित विधि की अपितु व्यक्ति में मानवता की भावना कूट कूट कर भरी होती है।

4) सामाजिक सेवाओं में मनुष्य संसाधनो की सुरक्षा के साथ–साथ सामाजिक सहायता बीमा, बालकल्याण, सार्वजनिक स्वास्थ्य, मनोरंजन, आश्रम, श्रम सुरक्षा हेतु मान्यता का भी आवहन किया।

5) साधारण तौर पर सामाजिक सेवाओं में ऐसी सेवाओ को लिया गया जो पूरी आबादी की क्षमताओं व कौशल को बनाए रखने व विकसित करने व आर्थिक सामाजिक कल्याण की भावना लिऐ हुऐ हो।

इस प्रकार हमें समाज सेवा के अन्तर्गत इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा, जिसमें मनुष्य की मानवता को कही आंच नही आये उसके कल्याण, उसकी हर तरह से खुशी का ध्यान रखते हुऐ उसे अपनी सेवा अर्पित करनी होगी। जिससे

सामने वाले को ऐसा आभास हो कि वास्तव में मेरी सेवा हो रही हो। वह न अपने आप को दीन समझे, और न ही ऐसा विचार आये कि उसकी जबरदस्ती सेवा की जा रही हो। तो वह असली मानव सेवा मानी पाएगी। और सच्ची सेवा होतीभी वही है, जिससे सेवा करवाने वाला संतुष्ट हो जाऐ।

चेहरे पर फेसबुक सी रौनक है

दिल व्हाट्सप्प हुआ जा रहा है

समाज से कटकर भी

इंसान सोशल हुआ जा रहा है

समाज सेवा क्यों आवश्यक है ?

मानव समाज में ही रहता है, और समाज के लोगो की ही सेवा करता है। लोगो की उन्नति करना, उनके जीवन स्तर को सुधारना, उनकी मनोदशा पर ध्यान देकर असली जीवन जीने की राह बताने के लिए इस समाज सेवा की आवश्यकता है। इंसान की हर तरह से प्रगति हो तभी समाज में सुधार आता है, और मानव का विकास दिखाई देता है। इसलिए हम कह सकते है कि मनुष्य का श्रेष्ट धर्म है कि वह मानव की मानवता की भावना से उसकी सेवा करे। ताकि वह अपने आप को एक समाज का हिस्सा मानें। मनुष्य ही ईश्वर की सबसे बडी सृष्टि है।

व्यक्ति और समाज दोनों एक दूसरे के उपर निर्भर है। माने तो दोनों एक दूसरें के पूरक है। दोनों का सामन्जस्य होगा तो समाज आगे बढ़ेगा और व्यक्ति मजबूत होगा। समाज की सेवा करना मनुष्य की एक सामाजिक जिम्मेदारी भी बनती है। उसका उत्तरदायित्व है, कि वह समाज में रहकर, समाज में सेवा कार्य करें। इसी सोच को लेकर अपना रोल अदा करें। यदि समाज को खुशहाल देखना चाहते

है, तो प्रत्येक व्यक्ति के दिल में एक दूसरें के प्रति मानवता इंसानियत का भाव समाया हुआ होना चाहिए। यदि ऐसी भावना आ जाएगी तो यह एक स्वर्ग बन जाएगा। यहॉ तक युगों–युगों से महापुरूषों ने भी इस सेवा कार्य के महत्व को समझा है और समाज सेवा को अपनाया है।

"किसी ने कहा है सदियों की इबादत से बेहतर है वो एक लम्हा,

जो बिताया है हमने किसी इंसान की खिदमत में।"

यानि इंसान की सेवा करना मानवता की सच्ची पहचान है। मानव की सेवा करना, भगवान की पूजा करने से भी उँचा माना गया है।

समाज में कई व्यक्ति ऐसे है जिनकी शारीरिक क्षमता, योग्यता, आर्थिक स्थिति, एक जैसी नहीं है। इस असमानता की खाई को दूर करना, सभी को साथ लेकर चलना मानवता की सच्ची पहचान हागी। कई व्यक्तियों की जरूरतों को निजीतौर पर भी पूरा करना संभव नही इसलिए जो इंसान हर क्षेत्र में सक्षम है, उनकी मदद लेकर उन असमक्ष व्यक्तियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए समाज सेवा की आवश्यकता महसूस होती है।

सामाजिक प्राणी होने के नाते वह समाज से अलग भी नही रह सकता। सब मनुष्य एक दूसरे पर निर्भर रहते है। अतः मानव की आत्मा में दूसरे मनुष्य की सेवा भावना बसती है। मनुष्य की उन्नति इसी मानसिकता पर आधारित है।

हमें विदित है कि आज का युवा राष्ट्र का निर्माता माना जाता है। यदि उसमें इस सेवा की भावना का पौधारोपण हो गया तो समाज आगे बढ़ जाऐगा। देश को शिखर पर ले जाने की जिम्मेदारी भी युवाओं पर ही है।

मगर बड़ी विडम्बना है कि आज का युवा युवतियाँ पाश्चात्य संस्कृति का शिकार हो चुके है। वो अपने देश के प्रति दायित्व होने चाहिऐ, उनको हांसिये पर रख दिया हैं समाज सेवा से दूर होते जा रहे है। आज की इस आधुनिक शिक्षा पद्धति ने विद्यार्थियों में सेवा भावना का लोप ही कर दिया है। युवा परिश्रम से दूरिया बनाने लगे है। उनके पास समाज के दीनदुःखियों की दांसता सुनने का

समय नही है। वो अन्य मार्ग पर चल रहे है। और गलत दिशा की और जाकर अपना और समाज का पतन करने में लगे हुऐ है।

आज का युवा शिक्षित तो हो चुका है, मगर वह अब खेतो में काम करने से कतराता है इसीलिए हमारे पास प्रभु की दी हुई जमीन, अन्य जल वगेरह संसाधन होते हुए भी दूसरों पर आश्रित है।

गाँवों की दशा और भी बिगड़ी हुई है। लोगों का नैतिक पतन हो चुका है। क्योंकि गांवो में लोग अन्धविश्वास जादूटोना व छूआ छूत का बोलबाला होने से मानव जाति पर एक अभिशाप ने तांडवनृत्य कर रखा है। इसलिए मेरी अनुसंधान रिपोर्ट में मानव जाति को आगाह करना चाहूँगा, कि जो समाजसेवी है, उनका कर्तव्य बन जाता है कि वे अपने चरित्र बल से समाज में व्याप्त ये सामाजिक कुरीतियों पर प्रकाश डालते हुऐ उन्हें दूर करना होगा, समाज का उद्धार तभी होगा। लोगों में प्रेम, प्यार, मनष्यत्व का पाढ पढाना होगा। समाज की उन्नति में स्त्री जाति की संकीर्णताएँ दूर करनी होगी।

क्योंकि स्त्रियां ही चरित्रवान नागरिकों की जननी है। वास्तव में स्त्रियों का अपना स्थान है, उन्हें उचित सम्मान देना होगा।

अतः आइये हम सब मिलकर समाज सेवा को अपनाकर इस देश व विश्व को एक मानवतावादी सिद्धान्त पर चलने को कहे, जिससे चहूँओर प्रेम, प्यार का वातावरण बन सके।

ईश्वर की दृष्टि में सभी मनुष्य समान है मगर सामाजिक जीवन में उनमें कई अन्तर दिखाई देते है , उन्हें सेवा के माध्यम से उस असमानता की खाई को दूर किया जा सकता है। इसी तरह समाज में कई विकलांग, असहाय, दलित, गरीब व्यक्ति है, जिनकी समस्याओं को दूर करना एक व्यक्तिगत पहल से असम्भव है, इसलिए जो अमीर समाज में निवास करते है। उनकी मदद की आवश्यकता पड़ती है।

धरती पर प्राकृतिक आपदाएँ बाढ़, भूकम्प, सूखा व घरो में आग व विभिन्न बीमारियों ने अपना प्रकोप कर दिया है जिससें लोगों के जीवन को अस्त–व्यस्त कर दिया है, उन्हें फिर से अपनें आप को सुव्यवस्थित करने के लिए समाज सेवा की आवश्यकता होती है।

यदि सक्षम व्यक्ति उन निहत्थे, असहाय लोगों की समाज सेवा के लिए आगे नही आयेंगे तो उनका उनका कौन है, जो उन्हें वापिस अपने घर का सपना साकार कर पायेगा।

अतः समाज की उन्नति, खुशहाली व सुखी रखने की विचार धारा के अनुसार समाज सेवा की आवश्यकता होती है। तभी मानव की मानवता एवं सेवा भावना का मूल्यांकन हो पाता है।

मनुष्य की मानवता यही संदेश देती है, कि उसे प्राणीमात्र की समाज सेवा करनी चाहिऐ।

किसी का किया एहसान कभी भूलो मत

अपना किया एहसान कभी याद करो मत

समाज सेवा कैसे की जा सकती है?

समाज सेवा करने की कोई सीमा नहीं है। फिर मनुष्य की दृढ़ इच्छा शक्ति, विश्वास, संकल्प हो तो कोई भी मुश्किल नहीं है। समाज सेवा करने के बहुत दरवाजे खुले है। कमी है तो सेवा करने वालों की। आज के इस आधुनिक युग में सेवा कार्य के बहुत विकल्प है।

1) हम किसी वृद्धाश्रम में, बुजुर्गो के साथ रहें, जिनके साथ हर तरह से साथ निभाऐ, उन्हें खुशी दें क्योंकि उनके अपनों ने तो साथ छोड़ दिया उनके अपने बनकर सेवा कार्य करें।

2) अस्पताल में जाइये, बाहर ऐसे मरीज भी मिल जाएँगे, जिन्हें सहारो की पूरी जरूरत होती है।

3) अनपढ़ व्यक्तियों को पढ़ाकर उनकी सेवा हो जाएगी।

4) यदि आप सक्षम है तो किसी भी गरीब बच्चे की शिक्षा का भार उठा लीजिए।

5) अपने आसपास झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले लोगों के बच्चौं को अच्छी ज्ञान की बाते, सभ्यता, संस्कृति की शिक्षा दीजिऐ। उन्हें साफ सफाई, गंदगी, पानी की उपयोगिता, कूड़ा कचरा डालनें आदि के बारे में सलाह देनी चाहिऐ।

6) कई NGO से जुड़कर आप व्यक्तियों की सेवा कर सकते है।

7) जरूरत मंद जानवरों की देखभाल की जा सकती है, आवश्यकता पड़ने पर उन्हें अस्पताल भी ले जा सकते है।

8) आज के युग में नशें का ज्यादा चलन है। आप ऐसे नशे करने वालों को नशे से होने वाले नुकसान के बारे में बताकर सेवा कार्य कर सकते है।

समाज सेवा करने के कई तरीके है। यदि इंसान इंसानियत की भावना रखता है, तो अवश्य मानवता का आदर करते हुऐं असक्षम व्यक्तियों की सेवा करनें का पुण्य कमा सकता है। संसार में रहो तो मानव की आवश्यकता को भी समझो और उसे पूरा करके पुण्य कमाओ।

- किसी ने कहा है कि मत सोच कि तेरा सपना क्यों नही पूरा होता,

हिम्मत वालों का इरादा कभी अधूरा नहीं होता,

जिस इंसान के कर्म अच्छे होते है,

उसके सेवा भाव से किया गया कार्य कभी अधूरा नही होता।

इसलिए समाज में रहना है, तो सामाजिक प्राणी बनकर और मानवता को साथ रखकर इंसान की सेवा को उच्य स्थान देना होगा। इस संसार में आये है, तो यूँ ही नही जाना है, कुछ ऐसे सेवा कार्य करके जाना है जिन्हें पीछे से लोग याद करें। तब तो जीवन की सच्ची सार्थकता होगी। नही तो वैसे ही लोग कहेंगे कि –

"वो आये जरूर दुनियाँ में, आकर चले गये।

बेमकसद सी जिन्दगी बिताकर चले गये।"

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है–प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक अरस्तु ने कहा है– मनुष्य स्वभाव से एक सामाजिक प्राणी है उनके अनुसार किसी व्यक्ति से पहले समाज

आता है। समाज ही ऐसा मंच होता है, जहाँ मानव का विकास संभव है। बिना समाज के व्यक्ति अथुरा माना जाता है, वह जो भी कर्म करता है, समाज के बीच रहकर ही करता है। यदि व्यक्ति गलत राह पर चलने लगता है, तो समाज ही उसे रोकता है। समाज ही मानव के विकास हेतु कार्य करता है। हाँ यदि मानव समाज में रहता है, तो उसे समाज के लोगों की सेवा करनी पड़ेगी। उन्हें हर तरह से सुविधाएँ मुहैया करानी होगी, कंधे से कंधा मिलाकर उनकी आवश्यकता की पूर्ति करनी होगी, तभी मानवता की सच्ची सेवा समझी जाएगी। मनुष्य को क्यों याद किया जाता है। हाँ उसे नहीं उसके कर्मो को याद करते है। वो सदा अमर हों जाता है।

" नियम यह है विधाता का, सभी आकर चले जाते है।

मगर कुछ लोग ऐसे होते है, जो जाकर भी नहीं जाते है।

न वे अवतार होते है, न वे भगवान होते है,

कर्मयोगी सच्चें अर्थो में फकत इंसान होते है।"

हम जिस समाज में रहते है, उन्ही के बीच में हमारी सारी गतिविधियाँ घटित होती है। इसलिए हमें निस्वार्थ भाव से लोगों की हर तरह से मदद उनके कल्याण की बात सोचकर कार्य करना चाहिऐ। इससे हम समाज के व्यक्तियों के साथ–साथ राष्ट्र की व्यवस्था में योगदान देते है। पड़ोसियों की सेवा करना भी एक समाज सेवा का ही अंग माना गया है।

समाज सेवा करना मानवता का सबसे बड़ा धर्म माना गया है। इससे बड़ा धर्म कोई हो ही नही सकता। आज हमारे देश का भविष्य युवाओं पर निर्भर है। अतः प्रत्येक युवाओं का फर्ज बनता है, वह सच्चे दिल से समाज की सेवा करे। यही सेवा भावना पूरे देश व विश्व का कल्याण व भला कर सकती है। जिस प्रकार हर व्यक्ति अपने परिवार के लिए तन, मन व धन से सेवा करता है, उसी प्रकार समाज के प्रति भी उसका पूर्ण दायित्व बन जाता है जीवन की असली सार्थकता का मालुम तभी पड़ता है। जब मानव एक दूसरे के दुःख दर्द में साथ निभाते है।

वसुधैव कुटुम्बकम की भावना प्रदान रखते हुऐ मनुष्य को मनुष्य की सेवा करनी चाहीऐ। हमें अपने ज्ञान का उपयोग समाज के विभिन्न मंचो पर जा–जा कर करना चाहिऐ। उन्हें आधुनिक बातों की जानकारी भी देनी चाहिऐ जिससे

समाज के लोगों उन योजनाओं के विषय में जानकारी हो सके, और उनका कन्याण हो सके। यह भी एक समाज सेवा का उत्तम कार्य होगा।

जो मुसीसतों के मारे है उनका हाथ थाम लो

जरूरतमंद की मदद करने को ही काम मान लो

मानवता का अर्थ, परिभाषा –

यदि मानव जीवन मिला है, तो सबसे पहले मानवता का विचार यानि हृदय में दूसरों के प्रति सद्–विचार, लोक मंगलकारी भावना कल्याणकारी भावना, धर्म, संस्कृति पर चलने की भावना आदि का होना अतिआवश्यक है। हमारा उद्देश्य ही लोक मंगल की कामना होना चाहिऐ।

मानवता वह है जो किसी जाति धर्म व एक व्यक्ति विशेष को नहीं देखता, वह सबसे मधुर प्रेम व्यवहार, सबके प्रति सच्ची सोच रखता है। मनुष्यता मानवतावाद– जिसमें संसार के सभी मनुष्यों की मंगल कामना का विधान हो।

कबीर जी के अनुसार – मानव के लिए सर्वाधिक मूल्यवान, जीवन मूल्यों को माना है, जो केवल शिक्षा से नही आते, अनुभव से आते है। वो कहते है अनुभव ही सच्ची शिक्षा है, वही सच्चा शिक्षक है। कबीर काव्य के भाव जितने प्रभावशाली है, भाषा उतनी ही विलक्षण भी है।

संसार में मानवीय मूल्यों की महता हेतु जिन–जिन महापुरूषों नें अपने जीवनकाल में मानव के हितार्थ संघर्ष किया है उनकी प्रासंगिता प्रत्येक युग में वैसी की वैसी बनी रहती है। जब तक मनुष्य का अस्तित्व कायम रहेगा। क्योंकि उन सबके आदर्श विचार लोक मंगल कारी, जनहितार्थ, जीवनोपयोगी, सर्वधर्मो को महत्व देने वाले जो है। मसीहा, गुरूनानक, महात्माबुद्ध, रैदास, कबीर जी आदि संतो के विचारों की उपयोगिता पहले थी, उतनी आज भी है, उनमें किसी प्रकार की कटौति नही हुई है। वो हमारा आज भी मार्गदर्शन कर रहे है।

सच्ची मानवता के पक्षधर वैसे तो हर संतों के विचारों में समाया होता है, मगर मानवता के पुरोधा मेरे विचार से कबीरदास जी है। विभिन्न दुःखों से उभरने के लिए समय–समय पर इनकी वाणी की सुगन्ध फैलती है।

इस बात को स्पष्ट किया जा सकता है।

"हिन्दू तुरक के बीच में, मेरा नाम कबीर।

जीव मुकतावन कारने, अविगति धरा शरीर।।"

संत कबीर जी एक विलक्षण व्यक्तित्व के विचारक, उदारधर्मगुरू परम संत महान समाज सुधारक व मानवता के पक्षधर माने जाते है। सुप्रसिद्ध आलोचक हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने कबीर को रहस्यवाद के सीमित घेरे से निकालकर जाति–धर्म निरपेक्ष मानव के रूप में प्रतिष्ठित किया।

वैसे भी मानवतावाद ही एक ऐसा मुख्य साधन है जो एक ऐसे समाज का निर्माण करता है, जिसमें समता सदाचार, नैतिकता की नीवं बनी रहती है। कबीरदास जी सारी मानव–जाति का उपकार व समाज में समता की भावना बनाए रखना चाहते थे। कबीरदास जी में प्रत्येक मानव को उचित मानवीय सम्मान देने की उत्कर्ष प्रबल अभिलाषा समाहित थी। जो मानवता की वास्तविक परिभाषा को उजागर करती है।

दौलत भी मिलेंगी इज्जत भी मिलेंगी

अगर सेवा करोंगे माँ बाप की

तो जन्नत भी मिलेंगी

मानवता का जनक– हमें मानवता का अर्थ तो मालुम पड़ गया, मगर इस शब्द को सार्थक करने वाले जनक कौन है। मानवता के जनक पेट्रोक है। पेट्रोक एक शास्त्रीय विद्वान थे, जिन्हें मानवतावाद का जनक माना जाता है।

परोपकार ही सच्ची मानवता है। मानव का सर्वोपरी गुण दूसरों की भलाई करना है। अलग–अलग धर्मों की मानवता की आवश्यकता ही प्रतिपादित की गई है। इसका कारण है कि मानवता ही मानव होने की पहचान है। जब दो लोग

झगड़ते है, एक दूसरे से कहते है– इंसान बन जा। हालांकि शारीरिक रूप से तो दोनों ही इंसान होते है।

आज के इस युग में मनुष्य अपने बारे में ही ज्यादा सोचता है। स्वार्थपरख व्यक्ति बन गया है, दूसरे की फिक्र बिल्कुल नहीं करता। बेचारे जानवरों की तो छोड़ो, उसे इंसान की फिक्र नहीं। वक्त के साथ–साथ मानव की भावनाएँ बदलती जा रही है। समाज, जाति, धर्म के बंधन में वह इतना जकड़ गया है, वह अपने वास्तविक धर्म मानवता को भूल गया है। मनुष्य आज दूसरों की मदद करने के लिए हजार बार सोचता है, जितना हो सके वह उसकी मदद करने से बचने की कोशिश करता है। मगर इस भावना से लिप्त दुनिया में दूसरी तरफ कई ऐसी इंसानियतें भी जिंदा है, उन्हें गरीब, बेसहारा, निशक्त, लोगों के कल्याण की चिन्ता है। उन्हें दूसरों के दुःखों को दूर करने की चाह है, और वे इंसान अपने सद्कर्मों को अजांम दे रहे है।

स्वाद मत देखो प्रसाद लेनी है तो
घड़ी मत देखो सेवा करनी है तो

ऐसी ही सच्ची मानवता का उदाहरण–कुछ दिनों पहले जब मैं स्कुल जा रहा था तो मैंने देखा कि एक महिला (टीचर) मेरे आगे–आगे चल रही थी। उसकी वेषभूषा, चेहरे से सुन्दरता झलक रही थी। वह महिला कुछ जल्दी में लग रही थी। शायद महिला टीचर को कुछ देर हो गई होगी। थोड़ी आगे जाने के बाद मैंने देखा की सड़क के बीचों बीच एक कुत्ते का बच्चा गढ़े में फस गया था। सड़क पार नहीं हो रही थी। मैंने सोचा, पिल्ला मर सकता है। बारीस की वजह से पील्ला कीचड़ में गदां हो चुका था। मेरे जाने के पहले ही उस महिलाटीचर ने उसे गोद में उठा लिया, और सड़क के उस ओर सुरक्षित पहुचाँ दिया। उसने एक पल भी नहीं सोचा, कपड़े गदें हो जाएगें। बस उसकी मानवता पिल्ले को सुरक्षा प्रदान करना था। वहाँ खड़े सभी व्यक्तियों को वह सबक देकर चली गई, उन लोगों में मैं भी था।

इसलिए हमें जो नेक कार्य करना है, उसके बारे ज्यादा सोचने की बजाय, तुरन्त कार्य शुरू करके अगले की मदद करनी चाहिये। केवल सोचने में ही अपना समय व्यतित नहीं करना चाहिये। इंसानियत वास्तव में नेक कार्य करवाती है।

स्वामी विवेकानन्द हिन्दू धर्मों को अन्य धर्मों से श्रेष्ठ मानते थे। परन्तु उनका मूल संदेश समावेशिता का है। मानव अपने जन्म के पश्चात् संस्कारों से ही वास्तव में इंसान बनता है। आज हम आधुनिकता में देखते है अश्लिलता व अपराधों को अपना वर्चस्व बना रखा है। इन्होंने मानवता को खो दिया है। आज के युग में कुछ ही गिने चुने माता–पिता ही होंगे, जो अपने बच्चों को संस्कारित देखना चाहते है।

"काम करो ऐसा कि पहचान बन जाए, हर कदम चलो की निशान बन जाए।

यहाँ जिन्दगी तो हर कोई काट लेता है, जिन्दगी जीओ इस कदर मिशाल बन जाए।"

मतलब इस दुनिया में आये ही हो तो मानवमात्र की सेवा का भाव लेकर दूसरों के कल्याण ज्यादा से ज्यादा हो, ऐसा जीवन जीओ ताकि दुनियाँ मरने के बाद भी याद रखे। मैं तो मानव के लिए यह कहूँगा कि समाज में जो व्यक्ति निवास करता है, वह किसी न किसी वस्तु की आवश्यकता महसूस करता है। उसकी आवश्यकता की पूर्ति करना मानव सेवा होगी। वह हमें अन्तर्मन से आशीर्वाद देगा।

हमारा मानव जीवन ऐसा होना चाहिऐ, दूसरों के लिए एक आदर्श हो। इसके लिए समाज सेवा के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए इंसान को इंसानियत की भूमिका निभाते हुऐ एक दूसरे से व्यवहार करते रहना चाहिऐ।

"हर धर्म, हर मजहब, हर ईमान कहता है।

खिदमत कर इंसान की, जिसमें भगवान रहता है।"

अतः भगवान की सेवा से बढ़कर इंसान की सेवा करना बहुत ही बड़ा धर्म माना गया है। परोपकार, निस्वार्थ, प्रेम की भावना से किसी व्यक्ति के साथ किया गया व्यवहार समाज सेवा कहलाता है। आज के परिपेक्ष्य में समाज सेवा का दायरा बहुत बढ़ गया है। क्योंकि पुराने जमाने में व्यक्ति की इतनी जरूरतें नहीं थी। इसलिए ज्यादा सेवा की भी आवश्यकता नहीं थी। मगर बदलते आधुनिक युग में मनुष्य की आवश्यकताऐं इतनी ज्यादा बढ़ गई। आमदनी एवं जनसंख्या बढ़ने के साथ–साथ कार्यों का बल भी बढ़ गया। सेवा कार्यों का दायरा भी बढ़ने लगा। हर सक्षम व्यक्ति के दिमाग में असक्षम व्यक्ति के लिए कुछ कर गुजरने की बात दिलों में खटकने लगी। मानवता की घंटी हृदय में बजने लगी है। उसका हृदय

पिघलने लगा, लोगों की सच्ची सेवा का भाव पनपने लगा। आज स्थिति यह है कि एक से एक बढ़कर व्यक्तियों की संख्या सेवा कार्यों की तरफ बढ़ने लगी है। कई संस्थाएँ, धनी व्यक्तियों ने अपनी कमाई का भाग समाज सेवा करके अपने को धन्य समझ रहा है। मानवता का भाव लेकर समाज के लोगों की सेवा की जाएगी, उससे सेवा करने वाले व्यक्ति को आत्म संतुष्टि मिलेगी। समाज सेवा एक ऐसा सत्मार्ग है, जो स्वर्ग का दरवाजा खोलता है। सच्चे ह्रदय से की गई सेवा इंसान की इंसानियता को उजागर करती है। महसूस करा देती है कि वास्तव सेवा कार्य एक उच्च कोटि का आभूषण है, जिससे व्यक्ति के मानवीय गुणों की ओर इंगित करता है। मनुष्य चमचमाने लगता है। सेवा कार्य का बल्ब पूरे समाज में जलने लगता है। पूरी दुनिया में प्रकाश फैल जाता है।

सच्ची मानव सेवा कार्य को आज बड़े–बड़े उद्योग घराने के उद्योगपतियों ने अपना रखा है। वो अपनी कुल कमाई में से बहुत बड़ा हिस्सा समाज के सेवा कार्यों में खर्च कर देते हैं। उदाहरण समाज सेवा को समर्पित किया जीवन बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउडेंशन दुनिया के साथ भारत में भी अलग–अलग समस्याओं जैसे– प्रजनन, मातृ, नवजात शिशु और बाल स्वास्थ्य और पोषण, स्वच्छता, कृषि विकास, लेंगिंग समानता व डिजिटल वित्तीय समावेशन आदि को लेकर कार्य कर रहा है। कम्प्यूटर क्षेत्र में ड़ंका बजाने वाले बिल गेट्स ने दुनिया में नाम कमाया। दों दशकों तक बने रहे दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति। 1987 में पहली बार बिल गेट्स का नाम फोर्ब्स की दुनिया में अमीरों की सुची में आया था। उसके बाद लगातार उनकी स्थिति मजबूत बनती गई। 1995 से 2017 तक (2008,2010 से 2013) को छोडकर दुनिया के सबसे अमीर इंसान बने रहे। अक्टूबर 2017 में अमेजन के संस्थापक जेफ बेजोस ने बिल गेट्स को पीछे धकेल दुनिया के अमीर व्यक्ति होने का खिताब हासिल किया। मगर मौजूदा समय में समाज सेवा को बिल गेट्स ने अपना जीवन समर्पित कर दिया। अपनी कमाई का बड़ा हिस्सा समाज सेवा के खातिर दान कर दिया 29 हजार 571 करोड़। फिर भी दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति है।

साल 2000 के बाद से बिल गेट्स का सबसे बड़ा दान है, माइक्रोसोफ्ट के 6 करोड़ 40 लाख शेयर दान किये। मैं बिल गेट्स के लिए कहना चाहुंगा– ये एक महामानव है जिसमें मानवतावाद के जितने भी लक्षण होने चाहिए, भरपूर भरे है, तभी इतनी बड़ी रकम समाज सेवा हेतु अर्पित कर दी। धन्य है ये मानव इन्हे

कोटि–कोटि साधुवाद। जो इंसान समाज के प्रति ऐसी सेवा भावना रखते है उसके पास कभी भी धन की कमी नही आती है। सच्ची सेवा करने से व्यवसाय में बढ़ोतरी ही होती है। तभी तो किसी संत ने कहा है कि मनुष्य की सेवा से बढ़कर कोई धर्म नही है। पूजा का सबसे सर्वोतम प्रकार ही दीन–हीन मानवो की सेवा करना है, दुनिया में कई ऐसे महामानव बहुत है, जिन्होंने अपना जीवन समाज सेवा में लगा रखा है।

जिस दिन मरोगे उस दिन एक पेड़
लेकर साथ जलोगे प्रकृति का जो
कर्ज है वो तो चुका दो यारों
जीते जी दो पेड़ तो लगा दो यारों

मानवता के विभिन्न लक्षण–

भारतीय संस्कृति में सेवा का मुख्य उद्देश्य मनुष्य मात्र की सेवा करने से ही है व्यक्ति का मूल्यांकन सेवा व सद्‌गुणों के आधार पर किया गया है। तभी मानवता का सर्वोतम लक्षण सेवा है। यानि एक दूसरे के प्रति आदरभाव माधुर्यभाव, समर्पण, समस्याओं का निदान करना ये सब सेवा कार्य ही है।

किसी के प्रति अंहिसा का भाव रखना भी सेवा कार्य है। प्रेम की भावना, वात्सल्य, दया का भाव भी सेवा का उदाहरण है। सेवा के भाव से व्यक्ति समाज में अपनी छवी बना सकता है।

महावीर स्वामी कहते है मेरी उपासना भी अधिक महान है किसी बूढ़े रूग्न व असहाय की सेवा करना। यदि मनुष्य में एक दूसरे से प्रेम की भावना नही है तो एक पत्थर व उसमें कोई फर्क नही है। जब एक पत्थर के टुकड़े को तोडते है तो क्या पास में पडे पत्थर के टुकड़े में कुछ संवेदना होगी, नही। मगर मानव के समक्ष ऐसा हो तो उसकी चेतना विकसित हो तो संवेदना अवश्य होगी।

इसलिए आधुनिकता की इस चकाचौंध में मानवता में स्पंदन खो रहा है। इसी के कारण आज दुनियां में साम्प्रदायिक भ्रष्टाचार बेईमानी का बोल–बाला हो चुका है। किसी संस्कृति में मानवता की सुंगध समाही हुई रहेगी तो वह समाज हमेशा खुशहाली में रहेगा। सदा हरा भरा रहेगा। पूरे समाज में प्रेम, भाईचारा,

सहयोग की भावना, एक दूसरे के प्रति भाईबन्धुता की भावना रहेगी। वह स्थान एक पवित्र जगह बन जाऐगा। तभी कहा है, किसी व्यक्ति के पास धन दौलत होने से उसका मूल्यांकन नही होता। असली मूल्यांकन तो वह है, व्यक्ति अपनी धन दौलत के हिस्से में से कितना दान किया है। गरीब, बसहायो के लिए क्या किया है।

मानवता की सच्ची खोज तभी सार्थक होगी, जब आज के अंधानुक्रम में व्यक्ति अपनी कमाई के साथ–साथ कुछ हिस्सा समाज में सेवा कार्य में भी लगाये। ताकि समाज में रहने वालें असहाय व्यक्तियों में भी ऐसी संचार की भावना आये, कि हम भी समाज का हिस्सा है। इसके लिए हमें मिलजुल कर समाज में जाग्रति लानी होगी। एक जुट हो कर समाज सेवा करने के लिए आगे आना होगा। साथ–साथ निस्वार्थता की भावना लेकर। फिर देखो एक नया पुष्प खिलता नजर आयेगा।

हमेशा दूसरों से व्यवहार सुन्दर रखो, जिससे सामने वाला आपकी और बढ़ता चला आये। अपनी बात करने का अंदाज खूबसूरत रखो, ताकि आप भी खूबसूरत सुन सको।

"प्रेम की धारा बहती है, जिस दिल में

चर्चा उसी की होती है, हर महफिल में"

☐ जीवन में समाज सेवा का महत्व–

आज विश्व में चारो तरफ चोरी, अंहिसा, छीना झपटी, बेईमानी, आतंकवाद जैसी भंयकर बीमारियों ने अपना जाल फैला रखा है। इसके बीच मानवता का कोई मोल नहीं रह गया है। मानवता की धज्जियां उड़ रही है। किसी ने कहा मनुष्य का राम निकल गया है। भाई–भाई को समझता नही है, रिश्ते नाते चकनाचूर हो रहे है। इंसान इंसान को कुछ भी महत्व नही दे रहा है। इस बीच यदि हम मानव सेवा की बात करे तो काफी सोचने का मुद्दा हो जाऐगा। लेकिन में समझता हूँ कि आदमी में ही मानवता व सेवा का भाव समाया हुआ रहता है। वह मन में यह संकल्प लेले कि मुझे असहयोग की भावना मिटाकर सभी मनुष्यों की सेवा करनी है।

"मंजिल मिले न मिले इसका कोई गम नही।

मगर इस जुस्तं जूं की आरजूं में मेरा कारवां तो है।"

यदि हमारी भावना सेवा करने की है, तो अवश्य पूरी होगी। वातावरण वैसा हो जाऐगा, बशर्ते कि हमें कुछ लोगों की आलोचनाएँ भी सुनने को मिलेगी। एक दिन ऐसा आयेगा, जब लोग आपकी सेवाभावना की कद्र करना
शुरू कर देंगे।

सेवा भावना से यदि कोई इंसान अपना कार्य करता है, तो वह सर्वत्र पूजा जाऐगा। उसके सेवा कार्य की सर्वत्र प्रशंसा होगी।

सेवा हमारी भाषा, पूजा हमारा नारा, जग का हर एक इंसा प्राणों से हमको प्यारा।

- भूखे को देंगे रोटी, प्यासे को देंगे पानी।

  उजड़े हुए चमन को, फूलों भरी कहानी, सेवा हमारी.....

- हम बालचर्य है ऐसे, जैसे सुबह की शबनम।

  होठो पे है गुंजन, आँखे हमारी पूनम, सेवा हमारी.....

सेवा का भाव लिए हम कोई कार्य करते है, तो उसमें हमे सफलता ही मिलती है। संत कबीर जी ने तो अपना पूरा जीवन ही लोगों की भलाई करने में लगा दिया। व्यक्ति महान कब बनता है। किसी ऊँचें कुल में जन्म लेने से व्यक्ति महान नही बनता है। वह अपने कर्मो से महानता को हासिल करता है। कबीरदास जी के विचारो में समाज सेवा आज पेशेवर लोग कर रहे है। हमारे देश में यह पेशा बन गई है। देश में कई ऐसे संगठन बन गये है जो यह कह रहे है कि हम समाज की सेवा करते है, मगर असलियत है वो दूसरों से चंदा लेकर काम चलाते है। वो चंदा तो लेते है सेवा के नाम पर साथ–साथ अपनी यात्राओं एवं रहने खाने की राशि भी उसमें से ही लेते है। और कहते है कि हम सेवा कार्य करते है। इससे उनका भी स्वार्थ पूरा हो जाता है। कबीर जी के अनुसार यह सच्ची सेवा नही है। यह तो स्वार्थ की सेवा हो गई।

सेवा का भाव असल में निस्वार्थ होना चाहिऐ। स्वयं के खर्चे लगाकर लोगों की सेवा होनी चाहिऐ।

ना सजदे से, ना दुआ से
ना मंदिर मस्जिद में माथा टेकने से
ईश्वर अल्लाह खुश होते है
समाज सेवा करने से

जीवन में समाज सेवा का महत्वः–

जैसी भी सेवा से समाज का भला हो, उसे ही समाज सेवा की संज्ञा दी जाती है। समाज की सेवा कई तरीकों से की जा सकती है। जैसेः–गर्मी के दिनो में लोगों के लिए पीने के पानी की सुविधा उपलब्ध कराना। गरीब लोगों के लिए पानी के टेंकरों की व्यवस्था करके, पीने के पानी हेतु प्याउ लगाते है। पक्षियों के लिए परींडो की व्यवस्था कराना। तथा उन्हें पानी का सदुपयोग करने की शिक्षा देकर समाज की सेवा की जा सकती है। जहाँ सेवा का भाव होता है, वहाँ मानवता साथ अवश्य रहती है। यदि दिल में मानवता, इंसानियता नही है, तो समाज की सेवा हो ही नही सकती।

इसी तरह गरीब लोगों की किसी भी तरह से सेवा की जा सकती है। उन्है। राशन सामग्री उपलब्ध कराना, गरीब लोगों को कपड़ों की व्यवस्था करना, गरीब लोगों की बेटियों का विवाह कराना, या और हर तरह से उन्हें आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना समाज सेवा का अच्छा उदाहरण है। गरीब बच्चौ की पढ़ाई का खर्चा उठ़ाना, उन्हें शिक्षित करना, उनके लिए आवास की उचित व्यवस्था करना मानव सेवा हो सकती है।

इसके अलावा हमारे परिवार में विवाह व अन्य कार्यक्रम होते है, उसमें कई प्रकार की भोज्य सामग्री बच जाती है, उसे गरीब लोगों में, या शहरों में वृद्धाश्रम या अन्य प्रकार के आश्रयालय होते है, जहाँ सामग्री को काम में लिया जा सकता है। यह भी समाजसेवा का अच्छा उदाहरण है।

आज के इस वर्तमान युग में प्रश्न उठता है कि निस्वार्थ समाज सेवा कौन करता है। जिसके मन में दयालुता, परोपकार, भलाई, सहयोग एवं विशाल ह्रदय तथा दूसरों के प्रति प्रेम की भावना भरी होगी, नहीं इंसान निस्वार्थ समाज

की सेवा करने के लिए आगे आयेगा। बेईमान, स्वार्थी व्यक्ति सेवा नहीं कर सकता।

मेरे उपर उदाहरण देकर वास्तविक सेवाकार्य को बताना चाहूँगा। जब भी स्कूल में गरीब बच्चों की फीस की बात आती थी, आज से 20 वर्ष पहले। उनके ड्रेस, स्वेटर की बात आती थी। मैं उनके लिए स्कूल ड्रेस की व्यवस्था कर देता था। सर्दियो में गरीब बालक बालिकाओं के लिए गरम स्वेटरों की व्यवस्था कर देता था। कई बच्चों की फीस चुकाकर पुण्य हो जाता था। आज तो सरकारी शालाओं में सरकार ने हर तरह की सुविधाओं की भरमार कर दी। फिर भी यदि मेरे लायक बच्चों के लिए एवं शाला में अन्य कई प्रकार से सेवा करने का मौका मिल जाता है। कुछ पैसा स्वंय की जेब से लग जाता है, तो आनन्द की अनुभूति एवं संतुष्टि होती है। यह है असली इंसानियतता का आनन्द। कार्य करने के बाद मन में शान्ति मिलती है कि हमने कुछ मानव के कल्याण के लिए किसी ने सेवा कार्य करने का मौका दिया है।

बुरे कर्म करने का खौफ रखता हूँ

सत्कर्म की राह पर कदम बेखौफ रखता हूँ

यकीन है मेरे खुदा मुझसे खुश होंगे

मैं जनता की सेवा करना का शौक रखता है

<u>वाणी से सेवा कार्य</u>:– हम एक दूसरे की मीठी वाणी बोल कर भी सेवा कर सकते है। कबीरदास जी ने कहा है–

"ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय।

ओर न को शीतल करे, आपऊ शीतल होय।"

किसी दूसरे व्यक्ति से व्यवहार करते समय अपनी भाषा को नियंत्रण में रखकर बात कहनी चाहिए। कटु वचनों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। जैसे किसी

इन्सान को कोई वस्तु देकर सेवा कार्य कर रहे है। मगर उससे उसके बदले आप शालिन व्यवहार नहीं कर रहे है तो वह सेवा निरर्थक हो पाएगी। इसलिए मधुर भाषा का प्रयोग करते हुए सामने वाले का मन जीतना चाहिए। वास्तव में यही सच्ची समाज की सेवा होगी।

मधुर वाणी सभी को अपना बना लेती है। जिस प्रकार से कोयल अपनी मीठी वाणी से कानों में रस घोलती है, ठीक उसी प्रकार मधुर वाणी व्यक्ति को आकर्षित व प्रभावित कर लेती है।

सेवा कार्य करने वाले को सामने वाले से मीठा बोलकर ही उसके साथ व्यवहार करना चाहिए। नहीं तो की गई सेवा निरर्थक मानी जाएगी।

कहते है शब्दों के बाण लौटकर वापिस नहीं आते हैं, उनका प्रभाव होकर ही रहता है। तलवार का घाव तो भर जाता है, लेकिन कटु वचनों का घाव जिन्दगी भर नहीं भरता है। मीठे वचन एक तरह से दवाई का काम करते है, घायल मन पर मधुर लेप कर देते है।

अंधे की सन्तान अंधी– द्रौपदी द्वारा बोले गए शब्द दुर्योधन के प्रति महाभारत के भंयकर युद्ध का कारण बने।

मीठे वचनों के द्वारा भी समाज की सेवा की जा सकती है। क्योंकि उस सेवा में मानवता समाई हुई रहती है। जहाँ मानवता है वो सच्ची मानव की समाज सेवा बन जाती है। कबीरदास जी कहते हैं, कि–

आप पेड़ तो बबूल का

बोते हो, और इच्छा आम खाने की रखते हो। यह सम्भव नहीं है। अतः किसी से कड़वा व्यवहार करके उससे लगाव रखना चाहते हो तो यह सम्भव नहीं है। और हम यह चाहते है कि सभी लोग हमारे से मित्रता का व्यवहार रखे, तो हमें मीठी वाणी का ही प्रयोग करना होगा। परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी विपरित क्यों न हो, हमें सहजता से ही पेश आना होगा। आपस में प्रेम की भावना से ही किसी इंसान के साथ व्यवहार करें। शरीर में कोई सुन्दरता नहीं होती, इंसान सुन्दर नहीं होता, बल्कि सुन्दरता उसके कर्म, उसकी मानवता, उसके द्वारा व्यवहार में लाये गए मधुर वचनों में देखने को मिलती है।

राजनेता बन समाज सेवा के मैं काम करूंगा
हमेशा जरूरतमंद लोगों के साथ मैं चलूंगा

सजीव प्राणी व मानवताः– जब हम समाज सेवा की बात करते है, तो समाज में रहने वाले मनुष्य की सेवा करने से अर्थ लगाया जाता है। मगर आज जानवरों के आगे इंसान अपनी मानवता को खोने लगे है। हमारे दादा–दादी, नाना–नानी कहानियां सुनाते थे। आस–पास में रहने वाले जीवजन्तुओं से व्यक्ति की दोस्ती हो जाती थी। मनुष्य के सच्चे दोस्त बन जाते थे। वैसे भी जानवर जितना वफादार होता है, उतना तो इंसान भी नही होता। आदि युग में इंसान इन्ही प्रकृति प्रेमियों से रिश्ता रखता था, असली मानवता की पहचान होती थी। मनुष्य व जीवों का यही प्रेम पूर्वक संबध किस्से कहानियों में सहचर संबध का प्रमाण बनकर उभरा था।

मोगली की कहानी सबने सुनी है। ऐसी कहानियाँ इंसान व जीवों में संबन्ध को उजागर करती है। वास्तव में देखा जाय तो मनुष्य ने तो अपनी मानवता को खो दिया है। मगर पशु पक्षी अपनी इंसानियता के साथ–साथ व्यवहार करते है। उनका भी अपना समाज होता है। और समाज में सभी जीव अपनी क्षमता के अनुसार एक दूसरे की सेवा करते है। इंसान के बच्चौं की भी रक्षा करते है। फिर वह लोक प्रसिद्ध पंचतत्व की कहानियाँ हो जिसे शिक्षा के प्रारम्भिक स्तर पर बच्चौं को पढ़ाया जाता है। महाराणा प्रताप के चेतक हो या रानी लक्ष्मीबाई के घोड़े का जिक्र हो। जिन्होंने अन्तिम घड़ी तक साथ निभाया।

मनुष्य व जीव–जन्तुओं के आपसी संबन्धों के ऐसे कई उदाहरण है। जिन्हें बुजुर्गो द्वारा कहानियों, किस्सों के मार्फत ज्ञान दिया जाता है। हम समझते है कि मानवता केवल मनुष्य पर ही परिभाषित नही होती है। जो जीव जन्तु इस धरती पर जन्मा है, उनमें भी मानवता बसी है।

मगर बड़ी विड़म्बना है बदलते समय में मनुष्य की भौतिक सुख की लालसा ने प्रकृति को छिन्न–भिन्न कर दिया। प्रकृति के साथ छेड़कानी शुरू कर दी। जीव–जन्तुओं पर मनुष्यों ने हमला बोल दिया उनके साथ मानवता को दूर कर दिया। विकास की अंधाधुंध दौड़ में सभी जीव–जन्तु अब तक मनुष्य के साथ थे। उसका सहयोग करते थे। वो पूंजी के प्रभाव से मूल्य में बदल गये। आज के इस कलयुग में पशुपक्षियों की बड़े स्तर पर तस्करी की जा रही है। पूरा का पूरा बाजार इसी तस्करी का शिकार हो चुका है। क्योंकि हमें मालुम है जीवित पशु–पक्षी जीवित अवस्था में वैसे उपयोगी होते है, मरने मे बाद उनकी कीमत और बढ़ जाती है। उनकी खाल, दाँत, सीगं, पंख सभी का व्यापार करने लग गया, और मानव ही उनका उपयोग करने वाला हो गया। पहले मनुष्य व जीव–जन्तु

सहचर की भावना से कार्य करते थे। मगर मनुष्य के लोभ में आ जाने से यह संबन्ध दूर होता जा रहा है।

जीव–जन्तुओं की सेवा भी समाज सेवा का ही उदाहरण है। यह कथन भारत सरकार के जीव–जन्तु कल्याण बोर्ड़ के सदस्य मोहन सिहं आहलुवालिया का है। ऐसी मान्यता है कि मनुष्य की योनि अनेक जन्मो के बाद मिलती है।

मनुष्य ही उचित अनुचित का आभास कर सकता है। वह समाज में रहकर मनुष्य समाज की सेवा तो करता ही है, साथ ही अपंग, बेसहारा, बीमार पशु पक्षियों की भी सुरक्षा करता है, तो वह एक अनोखी सेवा कार्यो में गिनती होती है। यदि कोई जन्तु बीमार हो जाए तो उसे अस्पताल लेजाकर दवाई, पानी दिलाना, मरहम पट्टी करवाना, आदि सेवा कार्य किया जा सकता है। इसके लिए कई धर्मार्थ संस्थाएँ आगे होकर सेवा कार्य कर रही है। उदाहरण स्वरूप जीवजन्तुओं की सेवा में आज के इस युग में गौशालाऐ अपना महत्वपूर्ण रोल अदा कर रही है। वहाँ उन गायों की अच्छी देखरेख हो रही है। सरकारी सहायता भी सभी गौशालाओं को मिलती है, और कई धर्मार्थ संस्थाएँ भी इस नेक कार्य में अपना महत्वपूर्ण सहयोग देकर समाजसेवा व मानवता के इस सुन्दर वाक्य को चरित्रार्थ कर रही हैं।

समाज सेवा की और आज प्रत्येक धर्म, जाति, सम्प्रदाय के लोगों का रूझान दिखाई दे रहा है। हर कोई व्यक्ति इस सामाजिक कार्य में बढ़चढ़ कर हिस्सा ले रहा है। और पुण्य कमाकर अपना जीवन सफल बनाना चाहता है। जिस इंसान के दिल में प्राणी के प्रति संवेदना होगी वही इस नेक कार्य में हिस्सा लेगा। ऋषि मुनियों, संतमहात्माओं, एवं सभी महापुरूषों नें इस समाज के सेवा कार्यों को करने की अलख जगाने का सद्कार्य किया। वो समाज के व्यक्तियों को यही प्रवचन देते थे, कि मनुष्य योनि में जन्म लिया है, तो मानवता के सिद्धान्त पर चलकर एक दूसरे इंसान को हमेशा सुख पहुचाँने का कार्य करें। किसी भी व्यक्ति को किसी भी तरह से दुःख नहीं पहुँचे, ऐसी भावना से कार्य करें। गाँधी जी के बताऐ रास्ते अहिसां परमो धर्म पर चलने का प्रयास करें।

तभी सच्ची मानव सेवा और मानवतावाद के सिद्धान्त का पालन होगा।

इंसान की सेवा प्रभु की भक्ति से भी बढ़कर माना गया है। तभी किसी संत ने कहा है– कहते है "सभी वेद पुराण, बिना सेवा के नही कल्याण" हर समाज, हर धर्म, हर इंसान यही कहता है कि यदि मनुष्य की योनि मिली है, तो सद्कर्म कर, तभी स्वयं का, समाज का और राष्ट्र का कल्याण सम्भव है। यदि बेईमानी, भ्रष्टाचार और अनैतिकता के जाल में फँस गया तो, स्वयं का अहित होगा ही

होगा, समाज एवं राष्ट्र का भी भला नहीं होगा। क्योंकि अध्ययन की गहराई में जाने से यह निकल कर आया कि दुनियाँ में आज धरती पर अधर्म, बढ़ गया है, मनुष्य अनैतिकता का शिकार हो चुका है। आदमी प्रेम की भाषा भूल चुका है। एक दुसरे को कोसने में लग गया है। मानवता होनी चाहिए, उसे भूल गया है। बस स्वार्थ की भावना ने घेर लिया है। इस युग में मानव, मानव को कोस रहा है। एक दूसरे के प्रति प्रेम की भावना नहीं है। बस केवल स्वयं का स्वार्थ पूरा होना चाहिए। तभी आए दिन कई तरह के अनोखे कांड होते आ रहे है।

मैंने यह निस्कर्ष निकाला कि प्रेम नही होना, मनुष्य की लोभ भावना है। व्यक्ति ने पैसे को सर्वोपरी माना है। जो कुछ है, पैसा है। बस पैसा कमाने के पीछे वो हद भी पार कर देता है। वो अनैतिक कार्य करने पर तैयार हो जाता है, जो एक इंसान को नहीं करने चाहिए।

उसकी इंसानियतता (मानवता) का लोप हो चुका है। एक दूसरे के खून का प्यासा हो चुका है। इसका एक ही कारण सामने आया है। आधुनिक शिक्षा का प्रसार। पुराने ऋषिमुनी विद्यार्थियों को अपने आश्रम में रखकर शिक्षा देते थे। नैतिक शिक्षा, धर्म की आज की शिक्षा विद्यार्थियों को ये सब विपरित होने की ओर अग्रसर कर रही है।

विद्यार्थी भी नहीं चाहते कि हम अच्छे नागरिक बने। संस्कारी बने। ईमानदार, संस्कारित बने। बस मशीनरी जिन्दगी में पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करने की होड़ मची हुई है। इसके पीछे कई कारक जिम्मेदार है। यदि इन कारकों को महत्व दिया जाता रहेगा तो मैं समझता हूँ कि आने वाला युग ऐसा आयेगा, व्यक्ति अपने रिश्ते, नाते, मनुष्यता सब भूल जायेगा। केवल स्वार्थपूर्वक साँचे में ढ़ल जायेगा।

मानव की सेवा तो दूर अपनों की सेवा भी नहीं हो पाएगी। और तभी किसी महात्मा ने कहा है– "सेवा नहीं तो मेवा तो नहीं"

मनुष्य की जिन्दगी यदि बेहतरीन बनानी है, तो एक दूसरे मानव की भावना को समझकर स्नेह, प्रेम के साथ नर सेवा, नारायण सेवा के सिद्धान्त को अपनाना होगा। दुनियां बदल जाएगी, यदि नर सेवा शुरू कर दी किसी ने। सेवा में आज अग्रणी संस्था है, नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर। जो मानव की निःशुल्क समाजसेवा कर रही है।

मैं स्वंय वहाँ गया, और अनुसंधान किया, और पाया कि वास्तव में विकलांगता के क्षेत्र में यह संस्था लोगों की सेवा कर रही है। इसके संस्थापक है

कैलाश जी अग्रवाल। पोलियो रोगियों की असमर्थता को दूर करके उनको स्वावलंबी बनाने में यह संस्था अपना निस्वार्थ सेवा कार्य कर रही है। इसे आई. एस. ओ. 9001 प्रमाण पत्र प्राप्त है। इसकी स्थापना 1985 में की गई थी। इनका समाज सेवा क्षेत्र भारत ही नहीं अपितु विदेशों यू. एस. ए., यूके, कनाडा, दक्षिणी अफ्रिका, सिडनी, बहरीन, दुबई, कांगो, पेरिस आदि देशों में है।

इस संस्था पर मैं अपनी ओर से सामान्य जानकारी जुटा रहा हूँ। यह संस्थान पोलियो के रोगियो के निःशुल्क ऑपरेशन के साथ बैशाखी व ट्राई साईकिलें उपलब्ध कराता है। स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करता है। संस्थान में अब तक करीब 73,500 से ज्यादा पोलियो के ऑपरेशन हो चुके है। करीब 1 लाख 70 हजार बैशाखियों के साथ हजारों ट्राई साइकिलों का वितरण किया जा चुका है।

यहाँ की खुशनुमा जिन्दगी यहाँ के साधकों द्वारा की जा रही असली नर सेवा समाज सेवा का एक अनुपम उदाहरण है। यहाँ की जा रही निस्वार्थ भावना से की गई सेवा का प्रतिफल है।

यह संस्थान वास्तव में जरूरत मंद लोगों का सहारा बन रहा है। संस्थान के सेवा कार्यों में निर्धन लोगों, बेसहारा इंसानों, धुमक्कड़ जीवन जीने वालों के लिए खाद्यसामग्री, सर्दी में कंबलों की व्यवस्था करना स्वेटरों एवं आर्थिक सहायता उपलब्ध करना है। संस्था जगह–जगह अपने संस्थान के शिविर आयोजित करके लोगों की सेवा एवं मानवता की पहचान करा रही है। संस्था के सभी सदस्य निस्वार्थ रूप से अपनी सेवाएँ देते है। आज के इस व्यस्ततम युग में भी मानव सेवा का उदाहरण यहाँ के साधक पेश कर रहे है। संस्थान को करोड़ो रूपये का दान आ रहा है। बड़े–बड़े घराने के लोग, छोटे–छोटे दानदाता भी अपना सहयोग संस्थान को कर रहे है।

हाथ उनके ही धन्य होने है

मानवता की सेवा करने वालो के

जितने परमात्मा की प्राथना

करने वाले होठ

–:नारायण सेवा संस्थानः–

संस्थान का मुख्य उद्देश्य विकलांगों की मानव सेवा करना है। जो कबीरदास जी के मानवतावाद के सिद्धान्त को सार्थक करता है। और वैसे देखा जाए तो मनुष्य की समाज सेवा में विकलांगो की सेवा करना अपने आप में एक विशिष्टता रखता है। क्योंकि विकलांगता तो प्रभु की देन होती है, मगर उसकों मनुष्य द्वारा दूर करने का प्रयास असली मानव की सेवा में आंका जाता है।

तभी इस संस्थान के साधकों के लिए कह सकता हूँ

" सदियों की इबादत से बेहतर है वो एक लम्हा,

जो बिताया है हमने किसी इंसान की खिदमत में ।। "

जो व्यक्ति मनुष्य की सेवा करने का मन में विश्वास रखता है, उसके सपने अवश्य पूरे होते है। भगवान भी उसकी पूरी मदद करता है।

संस्थान जो भी सेवाएँ प्रदान कर रहा है, उन्हें मदद की है विभिन संगठनो, निगमो, दानदाताओं व्यक्तियों ने, जिनके सहयोग से आज नारायण संस्थान सेवा कार्यो में अग्रणी है। पूरे विश्व में अपना लोहा मनवा रहा है।

"हाथ कंगन को आरसी क्या" कहावत को चरितार्थ करता है। इनके सेवा कार्य यानि संस्थान में इलाज कराने के लिए विदेशो से लोग आ रहे है और ठीक होके जा रहे है। घर जैसा यहाँ पर माहोल मिलता है। अपनापन संस्थान के सभी डॉक्टर्स, नर्सेस, अन्य कार्मिको का वात्सल्यपूर्ण, प्रेम का व्यवहार, वहाँ की साफ–सफाई रोगियों की सेवा सुरक्षा , उनकी देखभाल, वहाँ समय पर दवाई देना, शुद्ध खाना आदि अनेक निःशुल्क एवं निस्वार्थ सेवाओं की बोछार होना संस्थान के सेवा कार्यों को चार चाँद लगा देती है।

संस्थान के द्वारा उच्च कोटि की सेवा करने पर भारत सरकार ने संस्थान के संस्थापक कैलाश जी मानव को भारत के प्रतिष्ठित पुरस्कार पद्मश्री से सम्मानित किया है। तभी कबीरदास जी एवं अन्य सभी संत महात्माओं ने समाज सेवा का स्थान उच्च बताया है। हे मानव तूने धरती पर जन्म लिया है तो सभी मानवो की निस्वार्थ सेवा कर, और अपना जीवन सफल बना।

मैं स्वयं नारायण सेवा संस्थान से सन 2000 से जुड़ा हुआ हूँ। और मानव के कल्याणार्थ अपना कर्तव्य निभा रहा हूँ। समय–समय विकलांगता शिविरों में

जा–जाकर अपनी सेवाएँ प्रदान की। मेरे कार्यो की प्रशंसा करते हुऐ जिला कलेक्टर आर. सी. भट्ट (नागौर) ने मुझे नर सेवा करने पर सम्मानित किया। नारायण सेवा संस्थान ने भी मेरे द्वारा नर सेवा करने के उपलक्ष में संस्थान के सर्वोत्तम पुरस्कार लाइफ टाइम एचीवमेन्ट पुरस्कार देकर मेरा हौंसला अफजाई किया।

आज मैं तो यहाँ तक कहना चाहूँगा, कि सरकार भी इस ओर अपना पूर्ण फर्ज अदा करे तो शायद विकलांगता काफी हद तक कम हो जाऐगी। वैसे समाज में समाज सेवा का दायरा बहुत बढ़ रहा है। लोगों में जागरूगता भी बढ़ी है। मैने अपने इस शोध कार्य में पाया कि सरकारी सहायता विकलांगता को पूरी नही मिल रही है। कारण साफ जाहिर है। भ्रष्टाचार का बोलबाला। लोगों में स्वार्थता, पैसे का लालच आ जाना। जो कार्य विकलांग व्यक्तियों के लिए होना चाहिऐ, समय पर नही होता। उन्हें कई चक्कर लगवाते है। कभी बाबुजी नही मिलते है, तो कभी अधिकारी नही मिलते। बेचारे विकलांग इंसान अपनी किस्मत को कोसकर रह जाते है, कई अधिकारी रिश्वत भी मांगते है। असहाय व्यक्ति क्या नहीं करता, पैसे देकर कार्य कराना पडता है। खैर निष्कर्ष के तौर पर यही सामने आता है जो भी संस्थाएँ इस विकलांगता के क्षेत्र में कार्य कर रही है, उन्हें मानव सेवा कार्य को स्थान देते हुऐ अपना रोल निभाना होगा। मानवतावाद के सिद्धान्त को व्यवहारिकता में निभाना होगा। तभी सच्ची समाज सेवा की प्रस्तुति मानी जाऐगी।

और सरकारी अधिकारीयों को भी में निवेदन करना चाहूँगा कि वो भी इन असहाय, निशक्तजनों की भावना को समझते हुऐ उनके हर कार्य को प्राथमिकता से सम्पन्न करा कर उनकी दुआऐं प्राप्त करें, और अपना जीवन सफल बनाऐं। जैसे माता पिता की आत्मा से निकला हुआ आशीर्वाद व्यक्ति के जन्म जन्मान्तरों तक की रक्षा करता है, उसी तरह निःशक्तजनों की आत्मा से भी एक ऐसी दुआएँ निकलती है जो सामने वाले इंसान के जन्मों तक की रक्षा करती है। अतः मानवता को अपने ह्रदय में स्थान देते रहे, और इंसानों की सेवा करते रहे।

नारायण सेवा संस्थान जैसी दुनियां में कई सामाजिक संस्थाएँ अपनी मानवता की पहचान करवा रही है और इंसानों की सेवाएँ कर रही है। इसी क्रम में मैं मदर टेरेशा की जीवनी को प्रस्तुत कर रहा हूँ। मदर टेरेशा भी सच्ची मानवता की मिशाल थी, जिन्होंने अपने आप को मानव के कल्याण एवं सेवा कार्यों के लिए समर्पित कर दिया था। पूरा जीवन समाज सेवा में अर्पित कर दिया था।

मदर टेरेशा का जन्म 26 अगस्त 1910 को हुआ था, और मृत्यु 5 सितम्बर 1997 को हो गई। उनकें जीवन की यात्रा का वृतान्त बताने जा रहा हूँ। जिसमें हमेशा गरीब, असहाय, बेसहारा, दीन दुःखी इंसानों हेतु ही परोपकारी कार्य किये, और आज वो इस संसार में नहीं है, मगर उनके द्वारा किये गये सेवा कार्य को हम सब ताजिन्दगी याद करते रहेंगे।

मदर टेरेशा के बारे में मैं दो लाइने लिखने जा रहा हूँ–

" समुद्र सूख सकते है, पर्वत उड़ सकते है, दूसरें भूल सकते है,

मगर मदर टेरेशा जी के सेवा कार्य को कोई भूल नहीं सकते।"

यह शख्सियत रोमन कैथोलिक नन थी, जिन्होंने 1948 में स्वेच्छा से भारतीय नागरिकता ले ली थी। इन्होंने कलकत्ता में मिशनरीज़ ऑफ चैरिटी की स्थापना की। 45 सालों तक गरीब, बीमार, अनाथ और मरते हुए लोगों की इन्होंने मदद की और सच्ची मानवता की पहचान कराकर मिशनरीज ऑफ चैरिटी के प्रसार का मार्ग प्रशस्त किया।

1970 तक वे गरीब व असहायों की मदद के लिए मानवीय सेवा के लिए प्रसिद्ध हो गई। माल्कोम मुगेरिज के कई वृत्तचित्र और पुस्तक जैसे ''समथिंग ब्यूटिफुल फॉर गॉड'' में इसका उल्लेख किया गया है। इनके सेवा कार्यों की प्रशंसा स्वरूप भारत सरकार का सर्वोच्च पुरस्कार भारत रत्न 1980 में देकर सेवा कार्य को आगे बढ़ाया। और तो और 1979 में नोबेल शांति पुरस्कार भी मिला जो टेरेशा जी की समाज सेवा (मानवता) को इंगित करती है।

इनके सेवा कार्य की श्रृंखला केवल भारत में नहीं थी अपितु उनकी मृत्यु तक के समय यह आंकड़ा 123 देशों में 610 मिशन नियंत्रित कर रही थी। इसमें एच आई वी/एड्स, कुष्ठ और तपेदिक के रोगियों के लिए धर्मशालाएँ/घर बनाना शामिल थे। इनकी मृत्यु के पश्चात् इन्हें पोप जॉन पॉल द्वितीय ने धन्य घोषित किया और कोलकता की धन्य की उपाधि से विभूषित किया। खुद के लिए तो हर कोई जीता है, मगर दूसरों के लिए उनकी सेवा में कोई अपने को समर्पित कर देता है तो मैं समझता हूँ कि असली मानवता की परिभाषा को उजागर कर देता है।

मदर टेरेसा दीन–हीनों की माँ कहलाती थी। छोटी सी उम्र में ही मदर टेरेसा ने लोगों की सेवा करने का जिम्मा उठा लिया था। बचपन में इनकी माँ ने ही सिखाया था मदद का पाठ। इनके पिता की मृत्यु 1919 में हो गई थी, जिसके बाद टेरेसा की देखभाल उनकी माँ ने की। पिता की मृत्यु के पश्चात् घर की आर्थिक हालात भी नाजुक हो गई थी, लेकिन उनकी माँ ने मिल–बाँट कर खाने की शिक्षा दी थी।

इस सीख से बचपन से ही मानवता उनके अंदर आ गई। इनकी मानवता में रूचि के बारे में कुछ तथ्य व सार सामने आए, जिनकी बदौलत इनके सेवा कार्यों को पहचान मिली। उनसे जुड़ी खास बातें निम्न हैं–

• मदर टेरेसा 1929 में भारत आई और दार्जिलिंग के सेंट टेरेसा स्कूल में प्रवेश लिया।

• 24 मई 1931 को अपनी पहली धार्मिक प्रतिज्ञा ली, उनके द्वारा स्थापित संस्था मिशनरीज ऑफ चैरिटी आज 123 देशों में एक्टिव है, इसमें कुल 4500 सिस्टर है।

• 1946 में उन्होंने गरीबों, असहायों की सेवा का संकल्प लिया था।

• 1950 में टेरेसा ने निस्वार्थ सेवा हेतु कोलकत्ता में मिशनरीज ऑफ चैरिटी की स्थापना की थी।

• उन्होंने नोबेल शांति पुरस्कार, भारत रत्न, टेम्पटन प्राइज, आर्डर मेरिट और पद्मश्री से नवाजा गया।

• 2016 में उन्हें सेंट पीटर स्क्वायर में पॉप फ्रांसिस द्वारा संत घोषित किया गया था। सेंट की उपाधि से विभूषित होने वाली टेरेशा भारत की पहली महिला थी।

इस प्रकार मैं कह सकता हूँ, व्यक्ति को याद नहीं किया जाता है, बल्कि उसके कार्यों को याद किया जाता है। यदि सद्कर्म इंसान करता चलता जाता है, तो सर्वत्र स्वर्ग जैसा वातावरण हो सकता है। सभी में मानवता की झलक दिखाई देने लगती है। हाँ यहाँ यह जरूर कहना चाहूँगा कि मानवता की विचार धारा वाले व्यक्ति की आधुनिक युग में कोई जगह नहीं होती। उसकी लोग हँसी उड़ाने में

पीछे नहीं रहते। मगर सही इंसान को ऐसे लोगों को नजर अंदाज करके अपना कार्य को अंजाम देते रहना चाहिऐ।

गाँधी जी भी समाज सेवा में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। उनका जीवन इतना सादा था, यह हम उनकी वेशभूषा से ही अंदाजा लगा सकते है। तन पर एक सफेद धोती, उसी को लपेटकर अपने तन की सुरक्षा करते थे। गाँधी जी राजनीति में भी अपना रोल अदा करते थे, मगर केवल राजनीति में हिस्सा लेना उनको अच्छा नहीं लगता था। राजनीति में गरीब, असहाय, भूखे, कमजोर व्यक्तियों की सेवा नही हो सकती।

उनका कहना था कि राजनीति में जनता की सेवा किसी पद पर चुने जाकर ही की जा सकती है। वो बिना पद पर रहे, कुष्ट रोगियों की सेवा करते थे, अछूतो की सेवा करते थे। आधुनिक भारत में सवर्ण वर्ग के समाजिक व राजनीतिक सुधारकों में गाँधी जी ही केवल एक मात्र ऐसे व्यक्ति थे जो अछूतता को न केवल हिन्दू धर्म पर एक कलंक मानते थे, बल्कि इस ऊँच नीच की दीवार को समूल नष्ट करना चाहते थे। उनका कहना था, यदि मानव ने जन्म लिया है, तो सबसे पहले वह मानव है, उसमें मानवता का लक्षण होना आवश्यक है। यदि एक मानव दूसरे मानव से प्यार, प्रेम नही रखता तो उसे जीने कोई हक नही है।

उधर कबीर जी के मतानुसार यदि मनुष्य में मानवता के लक्षण नहीं है, तो जीवन पत्थर के समान है। गाँधी जी की दृष्टि अस्पृश्यता "एक सौ सिर वाला दैत्य" था। उन्होंने कहा कि मनुष्य को समाज सेवा करनी है तो इसके इस विचार धारा को बदलना होगा। तभी समाज के लोगों की असली सेवा हो पाऐगी। जनरल डायर वाली विचार धारा को छोड़ना होगा, जो हिन्दु इन अछुतो से दूर रहना चाहते है, और यह कहकर कि हम उनकी सेवा कर रहे है। वास्तव में गाँधी जी अंव्यजों की दयनीय स्थिति हेतु सवर्ण हिन्दुओं को दोषी मानते थे।

गाँधी जी ने अस्पृश्यता को भारतीय समाज का सबसे बड़ा जोड़ माना। उनके अनुसार प्रत्येक भारतीय को सच्ची मानवता का समाज से नाता जोड़ना है, तो प्रत्येक इंसान, हर मानव से प्रेम करके व्यवहार करे, जिससे मानवता की सुगधं इस संसार में फैलेगी और इस आधुनिक चकाचौंध में भी इंसान अपनी असली प्यार की खुशबू फैला पायेगा। तो आइये हम सब मानवता की सुगधं को प्रत्येक व्यक्ति तक फैलाकर भारत की एकता, अखंडता, संस्कृति की रक्षा करें। भारत के

ऋषि मुनियों, महापुरूषों, संतो एवं चिंतको के स्वप्न को साकार करे। वसुदैव कुटुम्बकम् की विचार धारा को साकार करे।

तुम करो मदद और मददगार बन जाओ

समाज सेवा करके तुम महान कहलाओ

मानवतावाद व स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद एक मानवतावादी चिंतक माने जाते है। उनके अनुसार मनुष्य का जीवन ही एक जीवन है। उनके अनुसार धर्म न तो पुस्तको में है न ही धार्मिक सिद्धान्तों में है, प्रत्येक व्यक्ति अपने ईश्वर का अनुभव स्वयं कर सकता है।

डॉ. मनोज चतुर्वेदी के अनुसार विवेकानंद भारतीय चेतना एवं चिंतक के आधारस्तंभं थे। उनका सम्पूर्ण जीवन मनुष्य जाति के लिए समर्पित था। लेकिन उन्होंने सेवा का संकल्प स्वामी रामकृष्ण जी के श्री चरणों में बैठकर प्राप्त किया था। देवी भक्ति से प्रेरित होकर मानवजाति के कल्याण हेतु उन्होने कार्य किया। वो चाहते थे कि प्रत्येक भारतीय अच्छे इंसान बने, ताकि देश तरक्की करें, देश में प्रेम, भाईचारा, सौहार्द्र का वातावरण बने।

विवेकानंद जी राष्ट्रवादी थे, मगर उनका राष्ट्रवाद, समावेशी और करूणामय था। जब भी वो देश में भ्रमण करने लिए निकलते, गरीबों की दशा देखकर दु:खी हो जाते थे। वो समाज के लोगों को यही संदेश देना चाहते थे, हमेशा प्रेम, परोपकार की भावना रखतें हुऐ दीन–हीनो की सेवा करो, वो भी निस्वार्थता की भावना से। सेवा कराने वाले को यह आभास नही होना चाहिऐ कि वह लाचारी से अपनी सेवा करवा रहा है।

वो मानते थे देश में शांति का वातावरण बनाने के लिए इंसान की इंसानियतता को समझना होगा। प्रत्येक मनुष्य को उसकी कद्र करने की सोचनी होगी। जाति पाति से उपर उठकर मानवतावाद के सिद्धान्त पर चलना होगा।

हाँलांकि आज के युग में मानवतावाद के सिद्धान्त को मानने वालों की संख्या कम है। मगर फिर भी यदि व्यक्ति अपने साथ मनुष्य के प्रति दयालुता का भाव रखेगा तो अवश्य उसकी भावना बदल जाऐगी। और वह निस्वार्थ बेसहारा, अपंग, निशक्तजन, दीन हीनो की मदद करने के लिए आगे आऐगा। विवेकानंद जी

कहते कि मनुष्य मनुष्य का दुश्मन बन चुका है, लेकिन मानवतावाद उस पर मरहम का काम करती है। इसीलिए विवेकानंद हमेशा मानवतावाद पर चिन्तन किया करते थे, उनका सम्पूर्ण जीवन मानवजाति की सेवा में बीता वो सभी धर्मो का आदर करते थे। वो कहते थे, भारत एक धर्म निरपेक्ष राज्य है। यहाँ सभी धर्मो के लोग निवास करते है। अपने अपने धर्म की रक्षा करना उनका धर्म भी है। इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति को सभी की भावना की कद्र करते हुऐ कल्याण की भावना बनाऐ रखनी होगी। इसी में सबका कल्याण है।

दस में से शख्स होता है कोई एक

जो काम करता है कुछ नेक

मदद करता है जो किसी को मुसीबत में देख

ऐसा शख्स होता नहीं हर एक

समाज सेवा व विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ

आज के इस दौर में समाज सेवा का प्रचलन खूब बढ़ गया है। दुनियां भी हजारों लाखों की संख्या में विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ अपना सेवा कार्य कर रही है। लाखों लोग इन संस्थाओं से जुड़कर समाज सेवा पर कार्य कर रहे है। कुछ सामाजिक संस्थाओं की जानकारी मैं अपने शोध के आधार पर देना चाहुगाँ। कई NGO के माध्यम से अपना सेवा कार्य कर रहे है, तो कई ट्रस्ट अपना सेवा कार्य कर रहे है। भारत में शीर्ष 10 एन. जी. ओ. कार्य कर रहे है।

☐ CRY(बाल अधिकार और आप) गैर सरकारी संगठन–

इनका कार्य क्षेत्र– स्वास्थ्य सेवा, पोषण, शिक्षा, बालश्रम से सुरक्षा, बाल विवाह से सुरक्षा।

अधिकारिक वेबसाइट– www.cry.org

☐ स्माइल फाउण्डेशन– कार्य क्षेत्र–हम शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, आजीविका महिला अधिकारिकता और आपदा प्रतिक्रिया पर काम करना।

वेबसाइट– www.smilefoundationindia.org

☐ गिव इंडिया फांउडेशन– निर्माण संगठन

कार्य क्षेत्र– गिव इंडिया एक ऑनलाइन दान मंच, आपको पारदर्शिता व विश्वसनीयता के लिए मूल्याकंन किये गये एन. जी. ओ. से पसदं के कारण का समर्थन करने का अनुमति देता है।

वेबसाइट– www.giveindia.org

☐ गूंज– गैर सरकारी संगठन– यह भारत के 23 राज्यों के कुछ हिस्सों में आपदा राहत, मानवीय सहायता और सामूदायिक विकास का कार्य करता है। कार्य क्षेत्र– हम शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, आजीविका, जल, स्वच्छता, पर्यावरण पहुँच और बुनियादी ढ़ांचे और आपदा राहत पर काम करती है।

वेबसाइट– www.goonj.org

☐ केयर इंडिया– यह 68 वर्षों से भारत में काम कर रहा है। गैरलाभकारी संगठन है जो गरीबों व सामाजिक अन्याय को कम करने पर ध्यान देता है। गरीब व वचिंत समुदाय की महिलाओं व लड़कियों को सशक्त बनाना और उनके जीवन और आजीविका में सुधार लाना। भारत के 90 से अधिक जिलों को कवर करते हुये 14 राज्यों में 43 परियोजनाओं के माध्यम से 31.5 मिलियन लोगों तक पहुँचा।

कार्य क्षेत्र– स्वास्थ्य देखभाल, जल, लिगं, स्वच्छता खाद्य सुरक्षा, आपतकालिन प्रतिक्रिया, आर्थिक विकास, जलवायु परिवर्तन, कृषि व आपता राहत।

वेबसाइट– www.careindia.org

समाज सेवा के क्षेत्र में हाँलाकी लाखों संस्थाएँ अपना रोल अदा कर रही है, अपनी सेवाएँ प्रदान कर रही है। मगर फिर भी इनके उपर लोगों की अंगुलियाँ उठ रही है। क्यों? ऐसा क्यों हो रहा है? या तो संस्था में काम करने वाले साधको का

सेवा करने का रवैया ठीक नहीं, या फिर वो भ्रष्टाचार में लिप्त है। पूर्ण रूपेण निष्ठा से अपना कार्य कर नहीं रहे है। स्वार्थरूप की बू उनमें झलक रही है। यहाँ पर हाँलाकि मैंने शोध के आधार पर पाया। मैं इन संस्थानों में भी गया हूँ, कई लोगों के सम्पर्क में भी आता हूँ। इन संस्थाओं द्वारा मानव की सेवा भी की जा रही है। वो भी निःशुल्क सेवा।

सेवा करने वालो से किसी भी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता है। मुफ्त में उनकी सेवा बन्दगी की जाती है, समाज–सेवा का उदाहरण प्रस्तुत करती है। मगर संस्था के पदाधिकारियों द्वारा एवं साधकों द्वारा सेवा कराने वालों में भेदभाव की ग्रन्थी अवश्य बनी होती है, और जिनकी पहुँच होती है, उनकी देखभाल अच्छी तरह से होती है, और जिनकी कोई पहुँच नहीं होती उनकी उपेक्षा होती है। उनकी कोई सुनता भी नहीं है।

सेवा तो उनकी करनी ही पड़ती है, जो किसी संस्था में आया है, इलाज कराने के लिए, तो इलाज तो होगा ही होगा। लेकिन एक तो रोगी संतुष्ट होकर वापस हँसता हुआ जाता है, दुआएँ देकर जाता है, वह दुसरी तरफ यह कहते हुए कि साधकों ने उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया, केवल पैसे वालों को ही तवज्जों दी जाती है। ऐसा भाव मानवता की श्रेणी में नहीं आता है।

समरसता का भाव, मानव मानव सब एक है, ऊँच–नीच, जाति–पाति की छोटी सोच को रखने वाला असली मानवतावादी हो नहीं सकता। इसके लिए सेवा करने वाले को इस भेदभाव से ऊपर उठकर किसी इंसान की सेवा करनी होगी।

"हर धर्म हर मजहब हर ईमान कहता है।

खिदमद कर इंसान की जिसमें भगवान रहता है।"

फिर भी मैं उन सभी एन जी ओ को अपनी सेवाएँ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रदान करते हुए समाज सेवा का एक उदाहरण पेश कर रही है। उन्हें धन्यवाद करता हूँ।

समाज सेवी बन कर

जरूरत मंदों का सहारा बनूँ

मेरे दिल की खवाहिश है

मैं कुछ ऐसा काम करूँ

सेवामय जीवन से समाज सेवा करो

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत।

इसका भाव यह है कि इस चराचर युग में सभी प्राणी सुःखी हो, इन्हें किसी प्रकार से कोई कष्ट नहीं हो। सभी स्वस्थ हो, सभी का मंगल हो, सबका कल्याण हो। कोई भी दुःख का भागी न बने।

वास्तव में इतने सुन्दर मन के भाव से यदि कोई व्यक्ति इस समाज में अपनो से व्यवहार करे तो धरती पर असली मानवता की सुगन्ध फैल जाएगी। इसके लिए हमें मन के इतने सुन्दर भावों को अपनी अन्तरात्मा से अपनी सामर्थ्य शक्ति व योग्यता के अनुसार कार्य रूप में परिणित करने के लिए तत्पर रहना पड़ेगा। समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक समाज सेवा करनी होगी।

यह मानव जीवन हमें मिला है, तो यह सार्थक तभी होगा जब प्रत्येक प्राणी की मनोदशा हम समझेंगे, उसकी हर समस्या व दुःख दर्द को दूर करेंगे। मानव सेवा के लिए ऋषि मुनियों, सन्तों ने अपने शास्त्रों में एक महान उद्देश्य बताया है– सर्वे भवन्तु सुखिन। का भाव प्रत्येक प्राणी में जग जाये तो व्यक्ति की वह निष्काम सेवा होगी। निष्काम उपासना होगी। इस प्रकार कल्याणकारी जीवनचर्या समाज सेवा के लिए तैयार हो जाएगी।

श्री मद्भागवतगीता में भगवान कृष्ण कहतें है "सर्व भूतहितेरता" यानि जो व्यक्ति सम्पूर्ण प्राणीयों के लिए हित में रत है, यानि सबका भला सोचता है, वह मुझे प्राप्त करता है मगर यह प्राप्ति उसी को होती है जिसके मन व इन्द्रियाँ वश में है और बुद्धि सब के प्रति समता का भाव रखती है।

सन्नियभ्योन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः।

ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूत हिते रताः।।– (गीता 1214)

असली मानवता यदि व्यक्ति में होगी तो वह समाज के किसी व्यक्ति के प्रति दुर्भावना नहीं रखेगा, किसी को कष्ट नहीं पहुँचाएगा, किसी का अहित नहीं करेगा, न करने देगा। यह असली समाज सेवा के दायरे में आंकी जाएगी। हिसां, असत्य, चोरी, व्याभिचार अपने लिए अप्रिय होते है, वे दूसरों के लिए भी प्रिय नहीं हो

सकते। इसी लिए मानव का असली धर्म सनातन धर्म ही है, अर्थात् उसे मन, वाणी व कर्म द्वारा प्राणियों के साथ कभी द्रोह नहीं करना चाहिए।

सेवा वो भी समाज के लोगों के लिए होती है। समाज सेवा तभी सार्थक होगी, जब वह निष्काम होगी। बिना स्वार्थ के आज व्यक्ति एक इंच भी आगे नहीं बढ़ता। फिर यदि स्वार्थरूप में केवल अपना उल्लू सीधा करने के लिए समाज की सेवा करता है, तो वह दिखावा माना जाऐगा। मैंने कई संस्थाओं में काम किया उन लोगों के साथ में रहने का मौका मिला, जो अपने आप को समाज सेवक कहते है।

समाजसेवी शब्द का अपमान करके वो अपने को आगे दिखाने का नाटक रचते है। समाज सेवा के नाम से अपना प्रदर्शन करते है, इसलिए कि लोग उन्हें पहचाने। मैं समझता हूँ कि वो असली मानवतावाद की श्रेणी में नही आते है।

जैसी भी सेवा होती है वह भौतिक कामना की पूर्ति हेतु होती है मगर असली कल्याण भगवत प्राप्ति व जीवन्मुक्ति वो निष्काम रूपी सेवा से ही प्राप्त होती है। समाज सेवा वह राजमार्ग है जिस पर चलकर विद्वान मनिषि से लेकर सामान्यजन तक सभी अपने अपने लक्ष्य तक पहूँच सकते है। किसी के लिए कोई निषेध नहीं है।

श्री भर्तृहरिने ने नीतिशास्त्र में सेवाधर्म को उनतीव गहन तथा योगियों के लिए भी अगम्य व असाध्य बताया है– सेवाधर्मः परमगहनों योगिनामप्यगम्यः । गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी बताया "सब ते सेवक धरमु कठोरा।" यह इसलिए कि सेवक भले कितनी सावधानी व लगन से कार्य करे, भूल से चूक हूई हो, उसके किये कार्य पर पानी फिर जाता है। सेवा कार्य करने वाले को अपनी प्रशंसा से हमेशा दूर ही रहना चाहिये। क्यों कि इससे उसमें अभिमान की पुट आ जाती है। जो विनाश का कारण बन जाती है। इसलिए सेवा कार्य को अतीव गहन व अगम्य बताया है।

इसलिए मेरे विचार में सच्ची मानवता का वही व्यक्ति हकदार है जिसके हृदय में सदा दूसरों के प्रति सदाचार, कल्याण दूसरों का हित व परमार्थ का भाव समाया हो। उस इंसान का चरित्र शीशे के समान निर्मल हो, हृदय नम्र हो, जो दूसरो के लिये अपना जीवन न्यौछावर करादे, वही सच्चा समाज सेवक कहलाने कर असली हकदार होगा।

ना दौलत से ना शोहरत से ना बंगला–
गाड़ी रखने से

मिलता है सुकून दिल को किसी गरीब
की मदत करने से

समाज सेवा–सहानुभूति और उदारता का प्रतीकः–

समाज सेवा का भाव मन में आते ही व्यक्ति के हृदय में एक ऐसी भावना आ जाती है कि वह अपने आप को दूसरों की भलाई, कल्याण एवं परोपकार के लिए कार्य करे। इसके लिए उसे सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करना होगा। निष्काम का भाव लिए इंसान की सेवा करनी होगी।

(ब्रह्मलीन योगिराज श्री देवराहा बाबाजी के अमृत वचनों कल्याण–सेवा अंक गीताप्रेस, गोरखपुर पेज न. 61) को मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिनकी अमृतवाणी से प्रेरित होकर इंसान समाज सेवा से जुड़कर मानवता का संदेश देने में सफल होंगे।

- ☐ प्रेम ही सृष्टि है, सब के प्रति प्रेम भाव रखो।
- ☐ भूखों को रोटी, दुखियों के आँसू पोंछो, उससे जितना फायदा होता है, वो वर्षो के जपतप से भी नहीं मिलता।
- ☐ गीता का सार है, दुःखी को सांत्वना देना, उन्हें कष्ट में मदद करना तथा भय से निकालना, मानवता है।
- ☐ आत्म–चिन्तन, दैन्य–भाव व सद्गुरू सेवा ये तीनों ही मानवता की निशानी है।
- ☐ रोजाना जितना हो सके कुछ दान अवश्य करें, इससे लोगों में त्याग की प्रवृति का विकास होगा, समाज सेवा होगी।
- ☐ प्रेम व स्नेह दूसरों की सेवा करना ही सबसे बड़ा धर्म होता है।
- ☐ अठारह पुरानों में व्यासदेव के दो ही वचन है–परोपकार ही पुण्य है, दूसरों को पीड़ा पहूँचाना ही पाप है।
- ☐ मेहमानों का हमेशा आदर–सत्कार करो। अतिथि का गुरू एवं देवता की तरह सम्मान करो।

- ☐ गौऐं जहाँ भी रहती है, उस स्थान को शास्त्रों ने तीर्थ–सा पवित्र कहा है। यहाँ प्राणों का त्याग करने से मनुष्य तुरन्त मुक्त हो जाता है।

- ☐ जिस घर में गरीबों का आदर होता है, न्यायद्वारा अर्जित सम्पत्ति है वह घर वैकुण्ठ के समान है।

- ☐ जो व्यक्ति अपनी मधुरवाणी, सद्विचार, कुशल व्यवहार, सदाचार से सबको खुश रखता है वह सबको प्रिय लगता है। मनुष्य तो अपने आप में प्रेम का, दया का, सेवा का आनन्द का मूल रूप होता है।

- ☐ सम्पत्ति पाकर भी जिसमें दान की भावना नहीं है वे भाग्यहीन है।

- ☐ अपना मानवजीवन ऐसा बनाओ कि तुम्हारा जीवन देखकर लोग प्रसन्न हो जाये। जो परिवार में लोग है वो आपस में प्रेम से रहो, देखो फिर घर एक स्वर्ग बन जाएगा।

- ☐ यदि आप व्यक्ति से मित्रता की भावना रखोगे तो उसके प्रति ईर्ष्या पनपेगी ही नहीं।

- ☐ दुःखीजनों की हमेशा सहायता करो। पीड़ा में उन्हें आश्वासन दो उन्हें हर तरह से सम्बल प्रदान करो, ताकि दुःखियों का दुःख दूर हो जाए। वो आपको सच्चे दिल से आर्शीवाद देगा। जिससे सम्पूर्ण विश्व आत्मीय बन जाएगा।

समाज सेवा पग–पग पर दिखती है। हाँ हमनें इस संसार में जन्म लिया है, प्रभु ने इस सुन्दर मनुष्यता की श्रेणी में अवसर दिया है, तो आइये हम इस पावन घर पर अपना मानवता का परम धर्म निभाते हुऐ अपनी समाज–सेवा का अनुपम उदाहरण पेश करें।

इस पुनित कार्य करने वाले पर हाँलाकि कई व्यक्ति ईर्ष्या करते है, क्योंकि वो मानवता व समाज सेवा की परिभाषा से अनभिज्ञ है। वो सेवा कार्य करने वाले को पागल कहते है। वो यूँ सोचते है कि ये नैक कार्य क्यों कर रहे है। यह उनकी नासमझी कहो, ओछी बुद्धि कहो या फिर उनकी संगत का असर कहो।

मगर मैंने अपने उन वर्षों के सेवा कार्यों से यही निष्कर्ष निकाला कि मनुष्य को अपने कार्य में लीन रहना चाहिये। सदैव सद्कर्मों के साथ अपने नित्यकर्म करते रहने चाहिये। कभी किसी का बुरा नहीं सोचना चाहिऐ। कबीरदास जी ने सही कहा है–

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।

जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।

मैं सभी आदरणीय महानुभावों से इस शोध के मार्फत यही कहना चाहूँगा कि यदि आप इस जन्म को व आने वाले जन्म को सुधारना चाहते है, तो निस्वार्थ समाज सेवा करो व असली मानवता का सन्देश घर–घर पहूँचाना होगा। यह विश्व एक स्वर्गरूपी स्थान बन जाएगा। जहाँ मानवता ही मानवता दिखाई देगी।

किसी बेसहारा का तूम सहारा बन जाओ

जो नहीं करता कोई वो करके दिखाओ

किसी की मुसीबत में मदद कर

उसके मुरझा चुके चेहरे पर खुशी ले आओ

मानवता ही एक असली जीवन है।

सेवा का भाव मन में आते ही सबकी बाँहे खिल उढ़ती है। मन में दूसरों के प्रति दया का भाव आते ही समाज–सेवा व मानवता प्रस्फुटित होने लगती है।

यह सेवा का भाव हर किसी साधारण इंसान के बस की बात नहीं है। यह सेवा भी भाग्यशाली व्यक्ति के लिए लिखी होती है। सेवा हर किसी के बस की बात नहीं है। खुद की सेवा ही नहीं होती स्वयं का काम भी पूरा नहीं होता, वह दूसरों को क्या दे देगा। सेवा करना एक बहुत बड़ा उपकार का कार्य माना गया है। "सेवा" शब्द सुनने में अवश्य छोटा है यह देखने सुनने, पढ़ने व बोलने में, लेकिन इसके भाव, अर्थ व परिणाम उच्च कोटि के है। सेवा एक वशीकरण का मंत्र है। सेवा चाहे कैसी भी हो, किसी की भी हो, होगी तो समाज के व्यक्तियों की ही।

मैं सेवा को समाज सेवा ही मानता हूँ। कोई फर्क नहीं है। सेवा करने वाला मानव ही होता है। और मानव में यदि मानवता होगी तो वह समाज के लोगों की सेवा करेगा।

हाँ इतना जरूर है सेवा का तात्पर्य निष्काम सेवा से होता है। स्वार्थवश की कामना से की गई सेवा असली मानव सेवा नहीं है।

निष्काम सेवा के अनोखे लाभ होते है।

1. इससे मनुष्य के अहंकार का विनाश होता है व विनम्रता का विकास होता है।
2. मन में निर्मलता व एकाग्रता आती है।
3. खुली आँखों से समाधि के आनंद की दिव्यानुभूति।
4. मनस्व (आत्मा–परमात्मा)–में स्थित अर्थात् ईश्वरदर्शन।
5. पुनर्जन्म की समाप्ति व मोक्ष पद की प्राप्ति।

परहित के समान कोई श्रेष्ठ धर्म नहीं–कर्तव्य नहीं–

परहित सरिस धर्म नहीं भाई।

मानवता के सिद्धान्त का पालन सेवक को करते हुऐ ही मनुष्य की सेवा करनी होगी। इस सेवा कार्य से व्यक्ति के अन्तकरण में एक विशेष प्रकार की सात्विकता, स्थिरता, प्रसन्नता व सद्भावना का उदय होता है। तभी मैं कहना चाहूँगा कि यदि सेवा करने वाले का हाथ दूसरे हाथ को चन्दन लगाता है तो जिस हाथ पर चन्दन लगा है, वह तो शीतल होगा। साथ–साथ जिस हाथ ने चन्दन लगाया है वह भी ठण्डा होगा। यही वास्तविक मानवता की निशानी होगी।

रोगियों व दीन दुःखियों की सेवा समाज सेवा करने के प्रकल्पों में कई प्रकार से सेवा कार्य हो सकता है। मगर रोगियों व दीन दुःखियों की देखभाल करना उनकी सेवा करना श्रेष्ठतम माना जाता है। यह सेवा एक तरह से तीर्थ हो जाता है। डॉ. श्री गणेशदत्त जी सारस्वत कहते है दीन दुःखियों की सेवा करना वास्तव में

एक तीर्थ के समान है। पुराने जमाने में लोगों के मन में दीनों के प्रति वात्सल्य, प्रेम का भाव भरा रहता था। उनके दिलो में असहाय लोगों के लिए परोपकार की भावना हुआ करती थी। मगर ज्यों–ज्यों समय बीतता गया, लोगों का रवैया पैसा कमाना बन गया। दया भाव, कल्याण कारी कार्यों से विमुक्त होते गये।

लोगों की दीन दुःखियों के प्रति दूरिया बड़ती जा रही है। उन्हें हाँसिये पर छोड़ अपना ही जीवन, अपना ही परिवार अच्छा लगने लगा। यहाँ मैं समझता हूँ कि व्यक्ति में मानवता में कमी का आना है। तभी दीनो की सेवा सुश्रषा नहीं हो पाती। जबकि महर्षि अगस्त्य लोपामुद्रासे कहते है जिसने इन्द्रिय समुदाय को वश में कर लिया है, वह मनुष्य जहाँ भी रहता है, वही उसके लिए कुरूक्षेत्र, नैमिषारण्य तथा पुष्कर आदि तीर्थ है–

निगृहीतेन्द्रियग्रामों यत्रेव च वसेन्नरः।

तत्र तस्य कुरूक्षेत्र नैमिषं पुष्कराणि चः।।(स्कन्दपुराण.काशी.6/40)

गौतम बुद्ध कहते है, जिस व्यक्ति को मेरी सेवा करनी है वो व्यक्ति पीड़ित मानव की सेवा करें। बन्धुत्वभाव से की गई सेवा की अपेक्षा आत्मभाव से की गई सेवा सर्वोत्तम मानी है। सहृयता का भाव जहाँ होता है वहाँ देवता निवास होता है। व्यक्ति में यदि दीन दुःखियों के प्रति करूणा का भाव होगा तो सर्वत्र मानवता की सुगन्ध सर्वत्र फैलेगी। और सभीजन अपने आप को भयमुक्त, आनन्दित व खुशी महसूस करेंगे। चहूँओर शान्ती का माहोल बनेगा। सेवा कार्य और मानवता का प्रभाव वातावरण को मनोरम बना देता है। दीनों की सेवा निस्वार्थ भावना से यदि कोई व्यक्ति करता है, तो परलोक में उन्हें स्वर्ग मिलता है। दुखी असहाय व्यक्ति अपनी दुआएँ देगा।

प्राण प्रण से दूसरों की सहायता करना मानवता का प्रथम कर्तव्य होता है। परदुःखनिवारण महान पुण्य माना गया है, और परपीड़ा महान पाप इसलिए हमें गरीब को बिल्कुल नहीं सताना चाहिऐ। यदि अपने पास उसे देने के लिए कुछ नहीं है, तो उसे आप अपनी मीठी–वाणी से तो उसके दुःख दूर कर मन को हल्का कर सकते है।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जी की दीन–दुःखियों के प्रति समाज सेवा का आदर्श उदाहरण सच्ची मानवता को दर्शाता है। इनके द्वारा उदवरित विचारों से वास्तव में मानवता की सुगन्ध में इजाफा होगा। जिन लोगों में इंसानियतता की कमी आ गई है, उन में मानवता का संचार होगा। श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर अपने मित्र श्री गिरीश चन्द्र विद्यारत्न बंगाल के एक कालना नामक गाँव जा रहे थे। रास्ते में उनकी नजर एक मजदूर पर पड़ी, जिसे हैजा हो चुका था। उसके मैले कपड़े से दुर्गन्ध आने के कारण लोग उसके नजदीक नहीं आ रहे थे। मजदूर बेचारा असहाय हो चुका था। विद्यासागर जी बोले–आज हमारा सौभाग्य है। विद्यारत्न ने पूछा–क्या सौभाग्य? विद्यासागर जी ने कहा–हमें दीनहीन की सेवा का अवसर मिल रहा है। इससे बढ़कर और क्या सौभाग्य होगा। यह बेचारा ऐसे पड़ा है। यदि इसका कोई अपना पास में होता तो यह यहाँ रहता? अपन ही आज इसके स्वजन बन जाते है।

एक दरिद्र, मैले–कुचेले दीन मजदूर का उस समय स्वजन बनना, जबकि हैजे जैसे रोग में स्वजन भी दूर भाग जाते है, परन्तु विद्यासागर तो थे ही दया के सागर और साथ में उसके मित्र विद्यारत्न भी। विद्यासागर ने मजदूर को पीठ पर लादा और विद्यारत्न ने गढ़री सिर पर उठाई दोनों कालना पहूँचे। उन्होंने मजदूर का ईलाज कराया, और कुछ पैसे देकर वहाँ से लौटे।

इसी प्रकार नाग महाशय के सेवाभाव के भी उदाहरण पेश करना चाहूँगा। क्योंकि ऐसे महामानवों के उदाहरणों से उन व्यक्तियों के दिलों में मानवता के भाव उमड़ पड़ते है, जिनके दिलों में सेवाभाव नहीं है। उनके दिल कठोर पत्थर के समान होते है। उनमें सेवा–भाव जगाने के लिए ऐसे उद्वरन सहायक होते है।

नागमहाशय का सेवा भाव तो विचित्र ही था। एक दिन उन्होंने एक गरीब को झोपड़ी में पड़े देखा तो अपने घर गये और बिछोना लाकर उसे दिया और उसे सुलाया। इसी तरह एक बार उन्होंने एक व्यक्ति जाड़ो में ठिठुर रहा था, उसे अपनी कम्बल दी, स्वयं रातभर ठिठुरते रहे और उस गरीब की सेवा करते रहे।

एक और उदाहरण से मनुष्य की मानवता की भावना में वृद्धि होगी। एक दिन नागमहाशय के घर में मेहमान आ गये। सर्दी के दिन थे, वर्षा हो रही थी। घर के अन्दर चार कोठरियां थी लेकिन तीन में पानी टपकता था। केवल एक कोठरी सूखी थी। अन्य में बैठने के लिए जगह नहीं थी। उन्होंने अतिथियों को वह कोठरी दे दी

और अपनी पत्नि को साथ लेकर बरामदे में आ गये। बाहर आकर पत्नि से बोलें–आज हम बड़े भाग्यशाली है कि हमें अतिथियों की सेवा करने का अवसर मिला है। आओ अपन भगवान का स्मरण करने में रात्रि व्यतित करेंगे।

तो इन उदाहरणो से मैं इन निर्णय पर पहूँचा हूँ कि समाज में जिन व्यक्तियों के दिलो में यदि मानवता का प्रेमरूपी प्रसाद नहीं है, यदि वो ऐसे उदाहरण पढ़ेंगे, विचारों को पढ़ेंगे तो अवश्य उनका हृदय पिघलेगा। वो मनुष्य की निस्वार्थ सेवा करने के लिए आगे आयेंगे। क्योंकि हम जानते है कि कोई भी कार्य इतना आसान नहीं होता, सुधार करने में समय लगता है।

Rom was not built in a day (रोम एक दिन में नहीं बना था) उसको अस्तित्व में आने में काफी वर्ष लगे थे। इसलिए इंसान के स्वभाव को बदलने में समय लग सकता है।

मनुष्य ही तो एक प्राणी है, जिस में दया भाव समाया हुआ है। और वह समाज में रहता है। समाज में होने वाले क्रिया–कलापों से अवगत होता है। और यदि वह मानवता के सिद्धान्त को समझ लेगा तो वह समाज सेवा की परिभाषा को भी अच्छी तरह समझ पाऐगा। एक दूसरें को देखकर दूसरें का भला, कल्याण व परोपकार के कार्य को करना शुरू कर देगा। बस जरूरत है उसे अभिप्रेरित करने की। तो आइये हम सब मिलकर समाज में ऐसा वातावरण बनाए, जिससे प्रेरित होकर लोगों में मानव सेवा करने का भाव उत्पन्न हो। समाज में एक सोच बदलेंगे, लोगों को समझाऐंगे, मानवता की अलख जगाऐंगे। इसके लिए हमें समाज में जो भी भ्रष्टाचार फैला हुआ है, उसे जीतना है। मानव मानव को प्यार कैसे करे, उसके मन को कैसे जीते, मानव के प्रति प्रेम की भावना को जगाना होगा।

तुम ऐसे ही लोगों की सेवा करते जाओ

सेवा करते करते आगे बढ़ते जाओ

लाओ गम भरे चेहरों पर खुशियां

लोग की मुस्कान की वजह बनते जाओ

मानवता की पहचान कैसे हो

भाग्यशाली वह होता है जिसे समाज में सब लोग प्यार करते है, चाहते है, बढ़ाई करते है। इसके पीछे उसके अन्दर सच्ची इंसानियतता विद्यमान होती है। वह इंसान अपने आप को समाज के लिए समर्पित कर देता है जो अपना परिवार भी चलाता है और दूसरे समाज के लोगों को साथ लेकर समाज सेवा करता है।

हाँ प्रश्न उठता है कि मानवता की पहचान कैसे हो तो जिस व्यक्ति में सादगी भरी हो, उसके विचारों में दया, क्षमा, करूणा, प्रेम, मृदुवाणी भरी हो ये सब मानवता के लक्षण है। इन सब की जाँच कर व्यक्ति में मानवता का पता लगाया जा सकता है। इस दुनियां में अरबों की आबादी भरी पड़ी है। तरह–तरह के लोगों का जमावड़ा है। इंसान की पहचान करना कठिन है कौन कैसा है? असली मानवता की पहचान व्यक्ति के कर्मो से होती है। इसलिए धरती पर जन्म लिया है तो उसे अच्छे कर्म करने चाहिऐ। यदि मानवता का अंश है तो वह किसी का बुरा नहीं करेगा। उसके मन में किसी के प्रति बदले की भावना नहीं होगी। उसे चाहिऐ बदला न लेकर सामने वाले को ही बदल दे।

आज इंसान की सोच है कि उड़ने को पर मिले और परिन्दा सोचता है कि रहने को घर मिले। यह बात किसी महान व्यक्ति ने अपने प्रवचनों में कही थी। उन्होंने यह भी कहा था कि व्यक्ति को उसकी छोटी सोच व पांवों की मोच उसे जीवन में आगे नहीं बढ़ने नहीं देती। इंसान की पहचान बूरे समय में और ज्यादा अच्छे समय में होती है। ये दोनों समय ऐसे होते है जिसमें व्यक्ति का व्यवहार डगमगा जाता है। इसलिए उसे सयंम के साथ पेश आना होगा।

सुख के साथी सब होते है दुःख में नहीं क्योंकि व्यक्ति स्वार्थी हो चुका है। सुख में व्यक्ति को नोचता रहता है परन्तु दुःख में दो शब्द भी जताने वाले बहुत कम मिल पाते है। बेसहारे की मदद करना तो दूर की बात उसे देख कर रास्ता ही बदल लेते है। क्या मालुम वह कुछ मांग नहीं ले।

दरअसल आज के युग में मानवता बची ही नहीं है। किसी को किसी से कोई मतलब नहीं है। रिश्तो की महता खत्म हो चुकी है। जो रिश्ते निभ रहे है, बस समझों उसको ढ़ोया जा रहा है।

जब तक स्वार्थ है, स्वार्थ मिटा रिश्ता खत्म। परमार्थ का शब्द नहीं है, ऐसे इंसानों में। इंसानियतता की कोई चीज नहीं है।

चाहे डॉ. बन जाओ, इंजीनियर बन जाओ, वकील बन जाओ, मगर जब तक उससें मानवता या इंसानियतता का भाव नहीं आयेगा, सब कुछ बेकार है। उन पेशेवरों में दूसरों के प्रति दया का, परोपकार का भाव अवश्य समाहित होना आवश्यक है।

एक डॉ. था। विदेश से डॉक्टरी पास करके अपने गाँव में आया। थोड़े दिनों में ही उसकी सरकारी ड्यूटि लग गई। अब क्या था? एक और सरकारी डॉ. बन गया, अच्छी तनख्वा थी। बाकी के समय में घर पर रोगियों को देखने लगा। खूब पैसा आने लगा। दूसरी तरफ उसका अस्पताल में रोगियों को देखना कम पसन्द होने लगा। उसकी क्लिनिक पर रोगियों की भीड़ जमा होने लगी। लेकिन वह गरीब लोगों के उपर दया का भाव नहीं रखता था। उनसे भी पूरी फीस लेता था। अब उसको छोटा–बड़ा, गरीब, दीन–दुःखी, बेसहारे की तरफ कोई ध्यान नहीं रहता। केवल पैसों के लिए कार्य करता था। बोलने का ढंग नहीं। गरीब लोगों की तो वह बिल्कुल नहीं सुनता। उन्हें गलत शब्दों से सम्बोधन करने लगा।

डॉ. ने इंसानियतता से अपना मुँह मोड़ लिया। मानवता ने चुप्पी साध ली। उसके दिन पलटने लगे। कई गरीबो की बेदुआओं ने उसकी डॉक्टरी पेशे को फैल कर दिया। उसका धन्धा कमजोर पड़ने लगा। सरकारी अफसरों ने उसकी क्लिनिक पर छापा मार दिया। नौकरी चली गई। सस्पेंड हो गया। हाँलात बिगड़ गये। इसके पीछे मानवता के गुणों के बारे में बताया गया। उसने समाज के लोगों से माफी माँगी और गरीब, दीनदुखियों, बेसहारा लोगों का जीवन में निःशुल्क ईलाज करने की सौगन्ध खाई। कुछ ही दिनों में क्या होता है। उसे पुनः बहाल किया जाकर सेवा में ले लिया जाता है। धन्धा उसका पहले से ज्यादा प्रभावी चलने लगा।

अस्पताल में भी मरिजों को अच्छी तरह देखता, खुद के घर पर भी रोगियों की सही सेवा करता। यहाँ तक कि उसमें इतना बदलाव आ गया। बेसहारा, दीनदुखियों के लिए दवा का प्रबन्ध भी निःशुल्क करने लगा। यह सब सच्ची मानवता का उदाहरण है।

आज तक लोगों ने हर क्षेत्र में ज्ञान अर्जित किया है। कर रहे है, और करते रहेंगे। विद्धानों ने हर क्षेत्र में अनुसंधान किया, कर रहे है और करेंगे। हर टोपिक के उपर अनुसंधान हो रहा है। आज अनुसंधान करने वाला मानव ही है लेकिन मानवता पर शोध पहली बार ही हुआ है।

वास्तव में मानवता पर शोध करना अपने आप में विश्व में अनोखा कार्य है। आज देश का नैतिक पतन हो रहा है। सारा विश्व माया जाल में भटक गया है। पुराने जमाने में आदमी आदमी से प्रेम करता था। एक दूजे का सहारा बनता था। दूसरे की पीड़ा समझता था। आज की स्थिति बिल्कुल विपरित हो चुकी है।

मनुष्य स्वार्थी हो चुका है, उसमें बसी मानवता जा चुकी है। मानवता का पतन हो चुका है।

"कितनी उम्र पाई है यह नहीं देखना है।

जिन्दगी कैसे गुजारी है यह देखना है।"

जो इस संसार में आया है, वापिस जाएगा मगर जीवन में कुछ ऐसे नेक कार्य कर जाए तो उसके जीवन की सार्थकता होगी। अन्यथा जाना तो है ही। इसलिए यदि मनुष्य मनुष्य के लिए कुछ भलाई, सद्कार्य, परोपकार का कार्य, सेवा कार्य करके जाऐ तो पीछे से उसके कर्मो को अवश्य याद किया जाऐगा।

मानवता यही संदेश देती है, कि मनुष्य को काम, क्रोध, लोभ, मोह से हमेशा दूर ही रहना चाहिये। यह मनुष्य के शत्रु है। ये मनुष्य को नष्ट कर देते है। इनसे बचने का एक ही उपाय है, अविधा का नाश। लेकिन अज्ञानता को दूर करना होगा। तभी व्यक्ति में मानवता की भावना जाग्रत होगी। इसी मानवता के बल पर वह सन्मार्ग को प्राप्त करके दुर्व्यसनों का त्याग करेगा।

इसलिए इंसान के पतन को दूर के लिए मानवता के लक्षणों का प्रचार प्रसार करना होगा। समाज में सौहार्द्र वातावरण बनाना होगा। शालाओं में शिक्षा पद्धत्ति में बदलाव करके बच्चौं को नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाना होगा। हमारा देश विभिन्नताओं का देश है। हमारे यहाँ विभिन्न जातियों, धर्मो के लोग निवास करते है,

विभिन्न भाषाएँ बोली जाती है। खान पान, वेषभुषाएँ, त्यौंहार मनाये जाते है। फिर भी देश में इतना होते हुऐ भी एक है।

देश में सर्वे भवन्तु सुखीनः के सिद्धान्त पर मानने वाले लोग निवास करते है। अपने–अपने धर्मो को मानना, उसी अनुसार देश में एकता अखंडता को बनाऐ रखना, हर जाति के लोग अपनी–अपनी संस्कृति के अनुसार जीवन–यापन करते है। यह सब मानवता का पालन करते है। सभी का अपना–अपना समाज है। आपस में समाजिक कार्य में एक–दूसरें का हाथ बंटाते है। यहाँ सब समाजसेवा एवं मानवता को प्रोत्साहन देने का कार्य ही करते है।

मगर आज के इस युग में मानवता कहाँ चली गई है, इसका पता लगाना अति आवश्यक हो गया है। क्योंकि पहले के जमाने में व्यक्ति व्यक्ति को देखकर खुश होता था। आपस में सेवा करते थे। एक साथ रात में अपनी बातों को एक–दूसरें के साथ कहते थे। बैठते थे। पराया दुःख दूर किया करते थे। पड़ोसी यदि बीमार हो गया होता, उसे तुरन्त अस्पताल पहुँचाते थे। ब्याव–शादियों में मालुम ही नहीं पड़ता कि शादी का काम कैसे पूरा हो जाता था?

इस प्रकार हम देखते कि पहले के जमाने में कई कार्य ऐसे हो जाते थे, कारण आपस में एक–दूसरें के प्रति प्यार, प्रेम और एक दूसरें की मदद करने एवं दूसरें से ईर्ष्या का भाव न होना था। मनुष्य चतुर नहीं था, जितना अब हो गया है।

पहले प्रेम की धारा सभी मानवों में बहती थी। एक दूसरें को गले लगाते थे। तभी प्रेमी व्यक्ति के लिए कहा गया हैः–

"आँसू जब सम्मानित होंगे, समाज सेवकों को याद किया जाऐगा।

जहाँ प्रेम की चर्चा होगी, उनके सद्कर्मो को याद किया जाऐगा।"

मनुष्य के लिए सद्कर्म ही सच्ची मानवता होती है। उनके अच्छे कर्मो से ही मानवता का उदय होता है। लेकिन आज की चकाचौंध ने मनुष्य में जो मानवता भरी थी, इसका धीरे–धीरे पतन होने जा रहा है। मनुष्य अपने रिश्ते, नाते, सम्बन्ध, दोस्त, सगेसम्बन्धियों व सब को भूल गया है। क्या मालुम नैतिकता कहाँ चली गई है? वो आपसी मेल जोल, एक साथ बैठना, हँसी मजाक करना, प्यार से बाते करना,

एक दूसरें के दुःख को दूर करना। मनुष्य केवल अपने स्वार्थ के लिए कार्य करने लग गया है। दूसरों से उसको कोई मतलब नहीं है।

अशिक्षित को शिक्षा दो

अज्ञानी को ज्ञान

शिक्षा से ही बन सकता है

मेरा भारत देश महान

मानवता का पतन

मानव उल्टे कार्य करने लगा है। इसके पीछे मनुष्य स्वयं ही मानवता के पतन का कारण है। वह लालच और अहंकार में पागल हो चुका है।

मेरे विचार में मनुष्य को इन माया जाल के जंजाल से निकलकर बाहर आना चाहिऐ। समाज में सभी से घुलकर व्यवहार करना होगा। एक दूसरें को समझकर, मदद करनी होगी। निष्काम के आधार पर मानवता के सिद्धान्त पर चलकर लोगों के कल्याणार्थ कार्य करना होगा। तो मैं समझता हूँ कि मानवता अपने आप ही प्रस्फुटित होने लगेगी।

यदि मानव यह दृढ़ संकल्प ले ले मुझे गलत कार्य करने ही नहीं है, तो वह मानवता के सिद्धान्तों को पा लेने में सक्षम हो जाऐगा।

"कुछ कर गुजरने के लिए, मौसम नहीं मन चाहिऐ।

साधन सभी जुट जाऐंगे, दृढ़ संकल्प चाहिऐ।।"

जहाँ मानवता रहेगी समाज सेवा की विचार धारा अपने आप ही शुरू हो जायेगी। यदि किसी समाज, राष्ट्र व किसी भी क्षेत्र को ऊँचाईया देनी है, तो मानवता उसमें अपना अहम रोल अदा करती है। सभी सफलताएँ, मनुष्य की उत्कृष्ठ सोच, सद्विचारशीलता कर्मढ़ता एवं प्रेम भावना से ही मिलती है। ये सब सुन्दर कार्य मनुष्य में मानवता से ही सम्भव होगा।

यदि मानव लोभ, अहंकार में खो गया है, तो उन्हें इनसे निकलकर वापिस भलाई, नेक, परोपकार कार्य, कर्तव्य–निष्ठा एवं सभी मानव–जाति एवं यहाँ तक कि सभी जीवजन्तुओं से प्यार करना होगा। उनको साथ लेकर, उनके हर विचारों को समझकर, उनके दुखदर्द में भागीदार बनकर, उनको संबल प्रदान करके असली मानवता का परिचय देना होगा।

फिर देखो नजारा कैसे बदलता है? मानवता की सुगन्ध चहूँओर फैलने लगेगी। मानव–मानव में प्रेम बढ़ने लगेगा। सौहार्द्रता का वातावरण बन जाऐगा।

हमें मानव धर्म का पालन करते हुऐ जीवन को सफल बनाना है।

सबकी मदद करो और

इस बात का करो प्रचार

एक दिन समाज बदलेगा अगर

कोशिश करेंगे मिलकर लोग हजार

समाज सेवा एक चुन्नौतिपूर्ण कार्य

हाँलाकि मानते है मानवसेवा एक उच्च कोटि की सेवा में आती है। हर किसी के बस की बात भी नहीं है। यह किसी के भाग्य में लिखी होती है, तभी इंसान सेवा का लाभ ले सकता है।

पुराने जमाने में समाज सेवा अति सुगमता से की जाती थी। व्यक्ति एक दूसरें से प्यार करता था। एक दूसरें की परेशानियों को समझकर उसें कम करने की सोचता था। समाज के लोगों की हर समस्या का निवारण करता था। कारण प्यार था, आपस में सौहार्द्र वातावरण। पुराने जमाने में वैमनस्यता का भाव, एक दूसरें से ईर्ष्या स्वार्थता का भाव नहीं था। लोग परोपकार, कल्याण की सोचा करते थे।

मगर धीर–धीरे जमाने के रंग बदलते गये। लोगों में प्रेम भाईचारा, परोपकार, कल्याण की भावना की जगह, रागद्वेष, ईर्ष्या, स्वार्थ भावना ने अपना स्थान ले लिया। समाज में लोगों की दूरियां बढ़ने लगी। लोग अपने रिश्ते नाते, संबन्ध को भुल गये। समाज में सारा रागद्वेष, झगड़ाप्रसाद, कटुता, जैसी बुराइयाँ बढ़ने लगी।

आज के वर्तमान परिपेक्ष्य में पहले की तुलना की जाती है, तो मैं समझता हूँ, इंसान बस अपना ही विकास करने में जुटा है। उसे केवल परिवार का विकास ही करना है। स्वार्थ केवल स्वयं एवं परिवार तक ही सीमित हो गया है। दूसरें का उसे कोई मतलब नहीं है। इसलिए समाज में व्यक्ति की मानसिक भावना यही हो चुकी है, कि दूसरों के दुःख दर्द को परे रख दिया है। दुनियाँ चाहे मरे या भाड़ में जाऐ। उसे कोई मतलब नहीं है। आज पड़ोसी तक एक दूसरें से सम्पर्क में नहीं रहना चाहता। पहले के जमाने में लोग जब नया मकान बनाता था, तो सब से पहले यही पूछता कि पड़ोसी कौन है? उसका स्वभाव कैसा है? काम आयेगा या नहीं? यदि पड़ोसी का आचरण शुद्ध, परोपकारी नहीं होता तो वहाँ बसने की सोच नहीं सकता। वह वहाँ रहने के लिए मना कर देता।

दूसरी तरफ पहले समाज में घुलमिल कर रहता था। एक दुसरे के हर कामों में हाथ बटांता था। मालिक को ब्याव शादी, मृत्युभोज व अन्यं सामाजिक कार्यों को सम्पन्न करने में किसी प्रकार की दिक्कत नहीं आती थी। दूसरे समाज एवं पड़ोसी मिलकर सेवा–भावना से कार्य सम्पन्न करा देते थे। उनमें मानवता भरी पड़ी थी। लोगों में एक दूसरें के प्रति प्रेम जो उमड़ता था।

लेकिन आज शहरों की तरफ हम जाये और सोचे तो इसके विपरित कार्य हो रहा है। व्यक्ति परमार्थ के लिए कुछ नहीं कर रहा है। मानवता का पतन हो रहा है। तभी तो इंसान एक दूसरें का साथ निभाने में शर्म महसूस कर रहा है। वह यह नहीं सोचता है कि यदि मैं दूसरें के लिए कोई कार्य नहीं करूँगा, समाज के लिए काम नहीं आऊँगा तो मेरे लिए कौन आगे आऐगा? मेरा काम कौन सुधारेगा?

इसलिए इंसान को दूसरों के लिए कार्य करने की मन में सोच रखनी चाहिऐ। तभी किसी ने कहा है–

"स्वार्थ आगे परमार्थ शरमा रहा, प्यार की आड़ में घृणा पल रही।

मौत मंडरा रही पग–पग पर, पर सत्ता की मदहोशी में होश न रहा।"

आज का इंसान (मानव) आधुनिकता की चकाचौंध में रिश्ते–नाते को भुलाकर जीवन जी रहा है। केवल कमाई (पैसा) के पीछे पड़ा हुआ है। वह यह नहीं जानता कि समाज में व्यक्ति की सेवा करके ही वह आगे अपना स्थान बना पायेगा। पैसा,

चकाचौंध तो कुछ ही दिनों की होती है। आखिर मनुष्य के मनुष्य ही काम आयेगा। मानवता का सार यही कहता है। जिस व्यक्ति में इंसानितता नहीं है, उसका जीवन बेकार है। वह इस संसार में आया जरूर है, मगर मानवता का अंश उसमें नहीं है तो वह केवल जीता–जागता रोबोट के समान होगा। एक दिन इस दुनियाँ से चला जायेगा। पीछे कुछ भी नहीं बचेगा। इसीलिए कहा जाता है कि मनुष्य योनि मिली है, तो समाज के लिए कुछ करके जाए। तन, मन और धन से समाज की अपनी सामर्थ्यता के अनुसार सेवा की जाऐ। धनी इंसान अपनी हैसियत से सेवा कार्य करे। गरीब इंसान अपनी हैसियत से करे। मगर हर इंसान को सेवा भाव रखकर समाज के दीन–दुखी बेसहारा एवं आवश्यकता वाले इंसानों की मदद अवश्य करनी चाहिऐ।

हम जानते है कि समाज सेवा करना एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। पग–पग पर हमारे सामने कई प्रकार की समस्याएँ आती है। उन्हें दरकिनार करते हुऐ व्यक्ति को नजर अंदाज करके सेवा कार्य करने होंगे। मानवता की असली सुगन्ध तभी फैलेगी, जब प्रत्येक इंसान में एक दूसरें व्यक्ति के प्रति सेवा भावना प्रस्फुटित होने लगेगी। ऐसा कोई भी कार्य दुनियाँ में नहीं है, जो व्यक्ति के बस में नहीं है। हाँ कठिन जरूर हो सकता है।

तभी किसी ने कहा है–

"मंजिल मिले ना मिले इसका कोई गम नहीं।

मगर इस जुस्त जूँ की आरजूं में, मेरा कारवां तो है।"

कहने का तात्पर्य यह है कि किसी कार्य में सफलता मिले या नहीं मिले, लेकिन उसे प्राप्त करने के लिए मेरी कोशिश तो जारी है। और फिर समाज के लोगों की भावना ही तो बदलनी है। मानव–मानव को मानवता का पाढ़ ही तो पढ़ाना है। वह पिघल जाऐगा। क्योंकि मनुष्य इतना कठोर इंसान नहीं होता मानवता प्रत्येक व्यक्ति इंसान में होती है। बस आवश्यकता है, उसे प्यार, प्रेम, स्नेह वात्सल्य और भाईचारे से व्यवहार करने की। फिर देखो, मानवता की खुशबू से सारा वातावरण महक जाऐगा। प्रत्येक व्यक्ति में समाज सेवा की भावना जाग्रत हो

जाऐगी। व्यक्ति स्वयं के लिए कार्य न करके परमार्थ के लिए सेवा कार्य करने लग जाऐगा। इसके लिए हमें मानवता को सर्वोपरी मानना होगा।

आधुनिक युग में सच्ची सेवा भावी मानव बनना एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। आज के इस आधुनिक युग में सेवा–भावी व्यक्ति को उस तरह से देखा जाता है, जैसे किसी पागल व्यक्ति को देखते है, उसे सब मूर्ख बताते है। कहते है लो आ गया श्रवण कुमार, और तो और जो व्यक्ति समाज की किसी न किसी प्रकार से भला या सेवा की भावना रखता है, तो जनता कटाक्ष करती है, और उसकी ओर इंगित करती है, कि इसका उक्त सेवा–कार्य में स्वार्थ होगा। तभी यह कार्य कर रहा है।

यदि व्यक्ति कोई सेवा–कार्य को आगे होकर अंजाम देना चाहता है, तो उसके कई समस्याएँ जन्म ले लेती है। प्रत्येक व्यक्ति की आलोचनाएँ सुनने को मिलती है। लोग उसके साथ नहीं होते। सेवा–कार्य में पैसो की दिक्कत का सामना करना पड़ता है। यूँ तो हम जानते है कि इंसान कोई भी कार्य करेगा तो लोग उस पर अंगुलियाँ तो उठायेंगे ही क्योंकि लोगों की जुबान को कौन रोक सकता है। हम जनता की स्वयं के पैसे लगाकर, स्वयं का समय खर्च करके, सेवा–कार्य करने की निस्वार्थता लिऐ सेवा–सुश्रुषा करते है, मगर कई इंसान उस कार्य से जल जाते है।

हर चुनौतियों को मनुष्य जीत सकता है बस एक चीज को रखे याद कि हमें सेवा–कार्य को ध्यान में रखते हुऐ आगे बढ़ना है। पीछे की तरफ नहीं देखें। जिसने चुनौतियों का सामना कर लिया, समझलो वह जीत जाऐगा। यही मानवता की सच्ची पहचान होगी, क्योंकि सभी हीरे कोहिनूर नहीं होते। सेवाभावी की पहचान ही उसे उसकी चमक को चमका देती है।

चुनौतियाँ तो आपके सम्मुख अपना अलग–अलग रंग बदलकर आऐगी। और आपको सामने वाले प्रतिद्धन्धी हर प्रकार से परास्त करने की कोशिश भी करेंगे। मगर आपको निराश नहीं होना है। अपने लक्ष्य को याद रखकर समाज–सेवा का जो बीड़ा उढ़ाया है उसे पार लंगाना है।

क्योंकि तभी किसी ने कहा है–

"हम खिलाये खूने दिल से, गर किसी पत्थर पर फूल।

बेशबब, बेवास्ता, बेकार जल जाते है लोग।"

कार्य हम कर रहे है, लोग बिना मनलब ही हमारे कार्यो से जल जाते है। इसलिए मैंने तो मानवता का गुण हर जगह कुछ ही इंसानों में पाया। जिनके संस्कारों में समाज के प्रति कुछ परोपकार की भावना होगी, वह अपने आप ही आगे आकर समाज की सेवा करेगा। हर प्रकार की उसके सामने चुनौती उसे कुछ न कुछ नया सिखाकर की जाऐगी।

चुनौतियों ही मनुष्य को साहसी बनाती है। फिर समाज–सेवा कार्यो के लिए समर्पण, करूणा व कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है। सेवा कार्यो को अन्जाम देने के लिए असक्षम लोगों की निजी जरूरते, परिवारिक जरूरते या सामुदायिक जरूरतो को पूरा करना पड़ता है। इसलिए सामाजिक कार्य भी चुनौतियों से अछूता नहीं है।

मगर फिर आज के परिवेश में समाज–सेवा आज के युग में युवाओं द्वारा की जाने लगी है। हम आजके युवावर्ग को सलाह देना चाहेंगे कि जो भी सेवा–कार्य में चुनौतियाँ आये उनका सामना नऐ नजरिये से करे। वो समाज–सेवा और राष्ट्र–सेवा को प्रथम स्थान पर रखे। देश में फैली सामाजिक कुरीतियाँ नशा, दहेजप्रथा, भ्रूणहत्या, बालविवाह, छूआछूत तथा निरक्षता को दूर करके समाज–सेवा व मानवता को सार्थक करके, अपना सहयोग प्रदान करे। यह कार्य आज का युवा कर रहा है और करेगा। बस आवश्यकता है, युवाओं को कुछ मोटिवेशन की।

"कौन कहता है, आसमान में छेद नहीं हो सकता।

जरा तबियत से एक पत्थर तो उछाल कर देखो यारों।"

फिर देखो आने वाली सभी चुनौतियाँ एक–एक करके आपसे दूर चलती जाती दिखाई देगी।

गाँवो में आजके आधुनिक सुविधाओं इंटरनेट, सुखे जलस्तर, उबड़खाबड़ रास्ते, अपर्याप्त स्वास्थ सुविधाएँ एवं आवागमन की सुविधाओं का आज भी आभाव है ऐसे में इन क्षेत्रों में सामाजिक सेवा–कार्य को करने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। आज का युवा इन सब चुनौतियों का सामना करने में सक्षम साबित को

सकता है। तथा लोगों तक सभी सुविधाओं को उपलब्ध कराकर समाज–सेवा व मानवता की सुगन्ध फैलाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

समाज–सेवा के चुनौतिपूर्ण कार्य में जनता का पूर्ण सहयोग होना भी अति आवश्यक है। बहुत से लोग परोपकारी भावना को नहीं समझते और अपना नजरिया नकारात्मक अपनाऐ हुऐ है। वो कहते है, बेसहारों की मदद करने से वो और आलसी हो जाएँगे। वो मुफ्त की सहायता की कोई कद्र नहीं समझेंगे। तो ऐसे लोगो की सोच को भी बदलना होगा। उन्हें मानवता का महत्व बताना होगा। समाज–सेवा पर प्रकाश डालकर उन्हें विश्वास में लेना होगा।

समाज–सेवा के कार्य में रूढ़िवादिता का भी चुनौती के रूप में महत्वपूर्ण स्थान है। इंसान के विकास में सब से बड़ी बाधा रूढ़िवादी सोच है। इस कुंठित विचार धारा को उसके दिल से नहीं निकाला जाऐगा, तब तक सार्थक बदलाव की उम्मीद नहीं की जा सकती। सुदुर पूर्व इलाकों में आज भी इंसान एक दूसरे से भेदभाव करते नजर आयेंगे। जाति के आधार पर, रंग रूप के आधार पर तो कुछ कई आधार पर। यह भी एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। लोगों की मानसिकता बदलनी होगी।

इसके लिए किसी एक दो चार इंसानो से बदलाव नहीं आयेगा। हमें सब को मिलकर समाज सेवा–कार्य को शहरों से लेकर ढ़ाणी–ढ़ाणी तक इसकी महता तथा सेवा–कार्य की जानकारी उपलब्ध करानी होगी। प्रचार–प्रसार करना होगा। समाज में विभिन्न प्रकार से हो रहे, भेदभाव को दूर करना होगा। समाज–सेवा किसी भी सम्प्रदाय की समानता के लिए अति आवश्यक है।

किसी भी समस्या व चुनौति को स्वीकार करने के लिए कठोर दृढ़ विश्वास एवं संघर्ष करने की जरूरत पड़ती है। जिसने भी आज तक जीवन में किसी भी कार्य के लिए संघर्ष किया, वह उसका कार्य पूरा हुआ है।

तो किसी ने कहा हैः–

"मिलतें है फूल तो कांटे भी मिलते है।

सुखो के साथ दू:ख भी मिलते है।

फूलों को छोड़कर कांटो से प्यार करो,

जीवन में संघर्ष से ही स्वयं फूल खिलते है।"

समाज–सेवा, मानव की सेवा एक उत्कृष्ठ कार्यो में मानी जाती है। यदि यह भाव समाज के प्रत्येक मनुष्य में आ जाता है, तो हम समझेंगे। समाज में एक नई चेतना जगेगी, नया उजाला होगा, दुनियाँ में मनुष्य मनुष्य को फिर प्यार करने लगेगा। इंसान के मन में इंसान के प्रति जो वैमनस्यता थी, वो दूर हो जाऐगी। पुरानी संस्कृति, विचार, मानव, रितिरिवाज, देश में सम्प्रभूता छा जाऐगी। पुरानी विचारधाराओं का भी मानवता के संबन्ध में चुनौतियों को बताया, वर्तमान में इन चुनौतियों का सामना करने में संघर्ष तो करना होगा। मगर पूरे माहौल का अध्ययन करने के पश्चात यही निष्कर्ष निकला कि आने वाले भविष्य में युवावर्ग एवं सभी मनुष्यों में सेवा–भाव एवं मानवता की लहर समाही हुई होगी। आज भी युवावर्ग को सामाजिक–सेवा कार्यो में लिप्त पाया गया। हर सेवाकार्यो में वह आगे आकर मानवता का परिचय दे रहा है।

अभी तो असली मंजिल पाना बाकी है

इरादों का इम्तिहान बाकी है

तोली है मुट्ठी भर जमीन

अभी तोलना आसमान बाकी है

अच्छे मानव की क्या पहचान

जिस व्यक्ति ने इस संसार में जन्म लिया है, उसे अपने समाज में रहना है। अब प्रश्न उठता है कि अच्छे और बुरे मानव की पहचान कैसे हो। मनुष्य अपने कर्मो से ही अच्छा बुरा इंसान बनता है।

जिस व्यक्ति ने स्वार्थ के लिए समाज में कार्य किया है, दूसरें के हित के लिए बिल्कुल नगन्य रहता है। केवल स्वयं के फायदें के लिए ही कार्य करता है। वह मानव नहीं है। उसमें मानवता का अंश बिल्कुल नहीं है। यदि मानवता के लक्षण उसमें होते तो वह स्वार्थ की जगह परमार्थ की सोचता। जिस व्यक्ति ने कभी

उपकार नहीं किया, दूसरों के भले की कभी सोची भी नहीं। दीनदुखियों, बेसहारों की कभी मदद ही नहीं की हो, ऐसा इंसान मानव कहलाने का हकदार नहीं है।

पहले के जमाने में मनुष्य में इसके विपरित सभी प्रकार के मानवता के लक्षण समाये हुऐ रहते थे। मनुष्य मनुष्य को प्रेम करता था। कबीरदास जी कहते है–जिस व्यक्ति में आपस में प्रेम नहीं है, तो उसका मानव जीवन ही बेकार है। वह यहाँ तक है कि धरती पर भार है। प्रेम में ही सारी मानवता समाही हुई है। कबीरदास जी विश्व के महान संतो में से एक महामानव की श्रेणी में पूजे जाते है। आज उनकी सांखियों व दोहों में प्रेम की पुट समाई हुई है।

दूसरी तरफ जिस व्यक्ति में परमार्थ की सुगन्ध आती है। वह दूसरों के हितार्थ ही कार्य में जुटा रहता है। दूसरों के कल्याण की ही बात सोचता है। सारा जीवन दूसरों की भलाई में ही लगाता है। मानवता की सच्ची लगन होती है। ऐसे मानव को अच्छे इंसानों की श्रेणी में लेते है।

"शुभ शक्ति के रहते हुऐ, उपकार नहीं जिसने किया।

होते हुऐ सम्पदा भी नहीं, दान दीनों को दिया।

सुन आर्त वाणी बन्धु की, जिसका नहीं पिघला हिया।

सेवा न की यदि लोक की, तो व्यर्थ वह जग में जिया।।"

मानवता के लक्षण लिए हुए यदि मानव अपना कर्तव्य निभाता जाऐगा तो इस धरती को स्वर्ग बना देगा। क्योंकि मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जो कुछ समझ सकता है।

"अच्छे इंसान के लक्षण,

अच्छे मानव की पहचान"

हर कार्य को करने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। मनुष्य ही तो है, जो भला बुरा सोच सकता है।

☐ दूसरों के प्रति दया का भाव।

☐ लोगों को ऐसे व्यक्ति से मिलना सुकुन देता है।

☐ सब लोग आपकी प्रशंसा करते है।

☐ दूसरे लोग उसे चाहते है।

☐ स्वयं की गलती स्वीकारते है।

☐ हमेशा कल्याण की बाते करते है।

☐ परमार्थ उनको हमेशा शुभ लगता है।

इसके अलावा अच्छे इंसानों में मानवता, नैतिकता, कर्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी, सदाचारी दयालुता आदि समाही रहती है। मानवता के गुण लिए हुऐ इंसानो की तरफ दुनियाँ ऐसे आकर्षित होती है, जैसे लोहे को चुम्बक अपनी तरफ खीचता है। जैसे शहद होगा तो मधुमखियाँ अपने आप ही उसके पास चली जाऐगी।

इतना सोचकर विचारने पर मुख्य बिन्दु यह निकलकर आया कि यदि समाज सेवा करनी है तो मानवता के लक्षणों को साथ रखना होगा। आज के इस चकाचौंध की आधुनिकता के युग में जो तांड़व नृत्य हो रहा है। चहूँओर भ्रष्टाचार, अनैतिकता, दुराचार, दंगाफसाद, बालश्रम, बालविवाह, चोरी, नशाखोरी, धुम्रपान जैसे कार्य हो रहे है। मानवता के पतन का यही कारण है। मनुष्य में मानवता के लक्षणों को उक्त बुराइयों को पीछे धकेल दिया। अब सभी का यह कर्तव्य बन जाता है, कि हमने इस धरती पर जन्म लिया है, तो सभी व्यक्तियों में मानवता की अलख जगाये। जहाँ अनैतिकता दिखाई देती है। तुरन्त उसको मिटाने का प्रयास करे। समूह बनाऐ, लोगों को समझाऐं। अपने स्तर पर सामाजिक जागरूकता जगाने का नैक कार्य करे। समाज में पेंपलेट छपवाकर बाँटे। सभी धर्मो का आदर करे, सभी लोगों को सुन्दर भाव से देखे। फिर देखो नजारा बदलता है या नहीं। अच्छे इंसान की इंसानितता अपनी दिव्य ज्योति जलाती है या नहीं। चहूँओर मानवता का वातावरण बन जाऐगा। लोग एक दूसरे से प्रेम से व्यवहार करने लगेंगे। यही सच्ची समाज–सेवा का उदाहरण बन जाऐगा।

बेहतर समाज का आओ ख्वाब देखें

गरीबों के सवालों का बनकर जवाब देखें

मजबूर हो जाएंगे समाज सुधार करने को

इन नेताओं पर आओ डालकर दबाव देखें

मानव ने मानवता खो दी

आज के इस अंधानुक्रम में मानव मानव नहीं रहा। आधुनिकता के चंगुल में फँस गया है। भले बुरे का उसे होश नहीं हे। आज के मानव में इंसानियतता का लोप हो चुका हे। किसी से प्रेम से बात तक नहीं करता क्या मालुम इस संसार में मानवीय गुणों के वायरस कहाँ चले गये।

तभी विद्वान साहित्यकार एवं प्रणेता ड़ॉ. नानकदास जी मंहत एवं विद्वान लेखक पर्यावरणविद् आदणीय डॉ. अभिषेक कुमार जी की बहुआयामी दृष्टि ने इस और यानि मानवता की और ध्यान गया। और इस पर अनुसंधान करने की सोची। यह मानवता पर अनुसंधान होना दुनियाँ का अनोखा अनुसंधान साबित होगा। हर विषय पर रिसर्च हुई है, मगर मानवता पर फोकस पहली बार होने जा रहा है।

जिसने अपने ह्रदय में दूसरों के प्रति प्रेम, वात्सल्य व कल्याण की भावना नहीं रखी वो मानव एक जीता जागता रोबोट ही है। वह कृत्रिम व्यक्ति क्या है? उसे कुछ ज्ञान नहीं है। जैसा उसे आदेश दिया जाता है, कर लेता है। स्वयं के लिए ही लालची, स्वार्थी बनकर रह गया है। इससे अच्छा तो पशु भी है, जिसके दिल में अपने साथी पशुओं के लिए प्यार, अपनापन व प्रेम झलकता है। यहाँ तक कि वह मनुष्य से भी इतना घुल गया है, वह मनुष्य से भी प्रेम की भाषा बोलने लगा है। फिर मनुष्य में मानवात कहाँ गई? यह एक चिन्तनीय विषय है। इसलिए पुनः मानवता पर शोध करने की आवश्यकता बन गई। आखिर मनुष्य ही तो है, दुनियाँ में जो भी कार्य सम्पन्न होते, उसी के द्वारा। इसलिए मानवता (इंसानितता) का होना अति आवश्यक है। उसे सोचना होगा। एक दूसरे के कल्याण, सद्भाव, प्रेम एवं परोपकार, दयालुता का भाव जगाना होगा, ताकि पुनः यह अमानवीयता का कांटा निकल सके। और मानव एक दूसरे से प्रेम से रहने लगेगा।

आज दुनियाँ के महान संत महात्माओं में कबीर जी का नाम प्रत्येक व्यक्ति की जुबान पर है। इतने सरल, निश्चल, सौहार्द्र, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, दयालु प्रकृति के धनी, आडम्बरों का विनाश करने वाले असली मानवता के पुजारी कबीर दास जी को बारम्बार नमन करने है। जिन्होंने इस संसार में मानवात का पाठ पठाया है।

समाज–सेवा का नाम ही मानवता है। आदरणीय कबीर दास जी महाराज ने प्रत्येक व्यक्ति तक मानवता का प्रचा–प्रसार किया जीवन की सच्चाई का पाठ पठाया। ईश्वर के बारे में पूर्ण ज्ञान कराया। लोगों में प्रेम जगाने, दयालुता एवं परोपकार्य करने के लिए पूरी दुनियाँ में अलख जगाने का नेक सत्कर्म किया।

मैंने कई ग्रन्थों का अवलोकन किया। कई साधु सन्तों के सानिध्य में विचार–विमर्श का मौका मिला। पहले मानव में स्वार्थता की भावना नहीं थी। एक दूसरे के सहकर्मी थे। भलाबुरा समझते थे। दुःखदर्द में इंसान दूसरे के दुःख को कम करने की कोशिश करता था। मगर कबीर दास जी के प्रवचनों ने अमानविय गुणों का सर्वनाश कर दिया। जहाँ–जहाँ कबीर जी एवं उनके शिष्यों ने अपने पाँव रखे, वह धरती, वह जगह पवित्र हो गई। जिस इंसान ने मानवात खो दी वह वापस मानवता (समाज–सेवा) के माध्यम से अपना जीवन सुखी बना सकता है। यदि वह चाहता है। मन में आशा रखता है, तो अवश्य शिक्षा की अलख जगा कर सब कुछ कर पाने में सफल हो जाऐगा। जीवन यूँ ही नहीं मिला है। कुछ नया करो। हौंसला रखो।

"कहानी बन जिये हम तो इस जमाने में।

लगेगी आपको सदियाँ हमें भुलाने में।।"

(पुस्तक माटी पुत्र कुचामन के पृष्ठ संख्या 47)

इंसान ऐसे मानवता के लिए सुन्दर, सत्य कार्य करे, मानव कल्याण के किए कर्म करे। तभी उन्हें लोगों द्वारा याद किया जाऐगा। यही सच्ची मानवता के लिए मिशाल बन जाऐंगे। तभी खोई हुई मानवता वापिस आ जाएगी।

इंसान तभी इंसान कहलाता है,

जब वह अपनी मानवता दिखाता है

मानवता पर अंहकार का हावी होना

आज के युग में मानवता का लोप हो रहा है। इंसान में इंसानियतता रही नहीं। हाँ जरूर कोई 10% लोग इंसान को दुःख दर्द का आंकलन करके उसे दूर करने की कोशिश करते है। वह यह सोचता है, मेरे सिवाय दुनियाँ में बड़ा हो ही नहीं सकता। यह अंहकार ही उसका पतन का करण है। यदि वह इस भावना को ह्रदय से निकाल दे तो उसके ह्रदय में मानवता का जन्म ले सकती है।

व्यक्ति एक दूसरे की टांग खीचने में लगा है। दूसरा व्यक्ति उन्नति कर रहा तो एक के मन में जलन पैदा होगी। क्योंकि उसमें अंहकार भरा रहा है। यह अंहकार मनुष्य में कब पैदा होता है जब उसमें थोड़ा सा भी बुद्धिबल, कोई पद, पैसा, धनदौलत आ जाते है। उसे अपने श्रेष्ठ से कोई नहीं दिखता। इन्ही कारणों से उसका पतन होने लगता है। इसलिए कभी भी इंसान को अंहकारी नहीं होना चाहिऐ।

इंसान का मुख्य धर्म ही दूसरों की सेवा करना है। फिर अंहकारी व्यक्ति सेवा से हमेशा दूर रहेगा। बस दूसरों के लिए ही अपना जीवन लगादो, परोपकार की भावना मन में संजोलो। मानव का अंहकार अपने आप उतर जाऐगा।

इसके लिए हम सबको एकजुट होकर मानवता के लिए खूब प्रचार–प्रसार करना होगा। फिर आज के युग में तो कई साधन हो चुके है, जिनका सहारा लेकर मानवता पर व्याख्यान, सत्संग, पाठ्यक्रमों में मानवता संबन्धी अध्यायों, सार्वजनिक स्थानों पर स्लोगन पेम्पलेट्स (होर्डिग्स) आदि से मनवता की खुशबु फैलेगी। जब चहूँओर मानवता का वातावरण बन जाऐगा तो व्यक्ति की अन्तरात्मा अंहकार को त्याग देगी। इंसान एक दूसरे को समझने लगेगा।

"रे मन ये दो दिन का मेला रहेगा, कायम ना जग का झमेला रहेगा।

किस काम का है जो तूँ, ऊँचा महल बनाऐगा।

किस काम का है जो तूँ, लाखों का तोरा पाऐगा

रथ हाथियों का झुँड़ भी किस काम में आऐगा,

जैसा तूँ आया है, वैसा ही चला पाऐगा।"

इसलिए ऐ मानव मन में किसी प्रकार का अंहम मत कर। संसार में सेवा, परमार्थ के अलावा कुछ नहीं है। दिल में सुन्दर भावना, प्रेम की भावना दूसरों की भलाई में अपना जीवन लगाकर मनुष्य अपने अंदर छिपे अंहकार रूपी राक्षश को भगा सकेगा।

मानव पर्याय की दुर्बलता को पाना तभी सार्थक है जब कि हमारे जीवन में अध्यवसान। रागद्वेष कम हो। जब अंहकार पर विजय पा ली जाऐगी, तो निश्चित रूप से समाज में मानवता रूपी वातावरण से प्रेम सौहाद्र एवं परोपकार के फूल खिलते नजर आयेंगे।

अपने अंदर की मानवता को मरने ना दो

आँखों के सामने कभी जुल्म होने ना दो

मानवतावाद का प्रभाव

मानवतावाद आखिर है क्या? इसका उत्तर ढूँढने में बहुत गहराई में जाने की आवश्यकता नहीं है। मानवतावाद जिनमे इंसान अन्य दूसरे इंसान के दुःख को समझले, महसूस करले। वह उसके कल्याण के लिए कार्य करे। यही मानवतावाद है।

एम. एन. राय के अनुसार–नवीन मानवतावाद व्यक्ति को सम्प्रभुता की घोषणा करता है। वह इस मान्यता को लेकर चलता है कि एक ऐसे समाज का निर्माण करना संभव है जो तर्क पर आधारित हो तथा नैतिकता लिए हो, क्योंकि मनुष्य प्रकृति से ही तर्कशील विवेकी एवं नैतिक प्राणी है नवीन मानवतावाद विश्वव्यापी है। मानवतावाद पर जवाहरलाल नेहरू ने कहा था– पर सेवा, पर सहायता और पर हितार्थ कर्म करना ही वास्तविक पूजा है। यही हमारा धर्म है इंसानियतता है।

जिब्रान के शब्दो में–मानव जीवन प्रकाश की वह सरिता है, जो प्यासे को जल प्रदान कर उनके जीवन में व्याप्त अंधकार को मिटाती है।

मनुष्य समाज में ही तो रहता है। उक्त विद्वानों के अनुसार मनुष्य में यदि मानवता के लक्षण होंगे तो अवश्य ही वह परोपकारी ईच्छा व्यक्त करेगा। यदि उसके मन में समाज के लोगों के लिए कुछ कर गुजरने की भावना होगी, दूसरों के दुःख को समझकर उसे दूर करने की मनसा होगी तो समझलों समाज–सेवा शुरू हो चुकी होगी। समाज–सेवा मानव के मानवतावाद विचारधारा के बिना असंभव है। अतः आज तक कई विद्वानों ने केवल मानवतावाद को रेखांकित ही किया है, जमीन पर उसको असली जामा पहनानें का प्रयास नहीं किया। केवल पुस्तकों में मानवतावाद या समाज–सेवा करने के लक्षण लिखने से कुछ नहीं होगा। व्यवहारिक तौर पर इंसान कार्य करेगा तो लोग भी उसका अनुसरण करने लगेंगें। धीरे–धीरे मानव की सोच में बदलाव आऐगा। वह समाज में रहकर आशावादी दृष्टिकोण अपनायेगा।

इस आज के अंधाधुन्ध युग में मानव बस केवल अपने स्वार्थ पर ही सोचता हे। परमार्थ की कुछ भी नहीं सोचता इसीलिए तो उसमें इंसानियतता का आभाव हो चुका है। उसकी कथनी करनी में काफी अन्तर आ चुका है। "मुख में राम, बगल में छुरी" वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। तभी तो समाज –सेवा व मानवता का पतन हो रहा है। लेकिन हमें नकारात्मकता की तरफ न जाकर हमें आशावादी बनकर मानवतावादीं लोगों की संख्या में इजाफा करना होगा। लोगों की सोच को बदलना होगा।

प्रो. आरनोल्ड टॉयनबी के अनुसार–भारतीय संस्कृति विश्व में सबसे श्रेष्ट मानी गई है। क्योंकि इस में मानव को स्व के स्थान पर "पर" का भाव बताया गया है। लोग अपने लिए जीवन नहीं, अपितु अन्य के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिऐ है। वे धर्म, परमसत्य व संस्कृति पर हित के लिए अपने प्राण न्यौछावर हँसते–हँसते कर दिऐ है। इनके अनुसार मनुष्य समाज में रहकर समाज के इंसान के लिए काम नहीं करता है, तो पशु के समान है। सही अर्थो में वह मानव कहलाने में सार्थक होगा, जब वह समाज के लोगों की सेवा या दुनियाँ के लिए सेवा करेगा।

तभी किसी ने कहा है–

"जन्म लेना और मर जाना नहीं है जिन्दगी,

निश्क्रियता, ऐशो आराम नहीं है जिन्दगी। थामलो गिरते को ,

करो प्यार से बंदगी, करलो समय रहते, सार्थक जिन्दगी।"

कबिरदास जी ने तो मनुष्य की सेवा बड़े प्रेम से करने को कहा है। उनके अनुसार यदि मानव एक दूसरे से प्रेम नहीं करेगा तो उसकी जिन्दगी बेकार है। वह पशुतुल्य है। प्रेम से समाज–सेवा होती है। उसमें वह भावना आ जाती है, बस एक दूसरे की मदद करना ही उसको दिखाई देता है। इसलिए मनुष्य को बड़े प्रेम से समाज के लोगों की तहेदिल से सेवा करके मानवता की खुशबु फैलानी चाहिऐ। लोगों में ज्यादा से ज्यादा प्रेम का पाठ पठाना, बेसहारों को सहारा देना। दूसरो के लिए हमेशा कल्याण की भावना रखना ही सच्ची समाज–सेवा हो सकेगी।

समाज–सेवा करने वाले को लोग पागल बताते है। उनके लिए कई प्रकार से कटाक्ष करते है। मगर उनकी अनदेखी, अनुसुनी करनी होगी और अपने धर्म का पालन करते हुऐ सत्य मार्ग अपनाना होगा। तभी समाज में इंसान अपनी मानवता को साकार कर पाऐगा।

मानवतावाद को आगे बढ़ाने के लिए किसी ने कहा है–

"जब एक दूजे से गले मिले तो मुस्कराते रहिऐ,

दिल से दिल ना मिले कोई बात नहीं, हाथ मिलाते रहिऐ।।"

हाँलाकि मानवतावाद में व्यक्ति की सोच को ही बदलनी होगी। एकात्म मानवतावाद में पंडित दीनदयाल उपाध्याय की चिन्तन की धारा विशुद्ध भारतीय है। इन्होंने एकात्म मानवतावाद का प्रतिपादन किया। इनके अनुसार चिन्तन की शुरूआत व्यक्ति से ही होनी चाहिऐ। व्यक्तियों का समूह ही समाज बनाता है। विभिन्न समूहों को धर्म संस्कृति व इतिहास से जोड़कर ही एक संबल राष्ट्र बनाता है। मानव जाति की एकता में उनका विश्वास था। इसलिए व्यक्ति को केवल अपने लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज के लिए सेवा कार्य करना चाहिऐ। समाज में इससे समरसता बढ़ेगी, प्यार बढ़ेगा, एक दूजे के लिए कुछ कर गुजरने की भावना में वृद्धि होगी। इंसानियतता को लोग समझने लगेंगे।

जो सच्चे और निस्वार्थ मन से

किसी जरूरतमंद की मदद करते है

ईश्वर उनका ना घर खाली होने देता है

ना दिल में उनके लिए प्यार कम होने देता है

मान्यतावाद एक अभिशाप, जिसका हल मानवतावाद

हमारे देश में विभिन्न धर्म के लोग निवास करते है। कई विचारधाराओं वाले लोगों का संगम है। सबको पंथनिरपेक्ष राज्य में रहने का अधिकार भी है। तभी इंसान अपने–अपने रितिरिवाजों को अपनाते हुऐ जीवन जी रहे है। यह एक मान्यतावादी विचारधारा है, जिससें प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने अपने समाज के लोगों को महत्व देता आ रहा है। इससे मनुष्य एक दूसरे से दूर होता जा रहा है। जातिवाद एक ऐसा राक्षश है, जिसने मानव को मानव से दूर कर दिया। जब व्यक्ति एक दूसरे की भावना को ही नहीं समझ पायेगा तो मनुष्य की सेवा का तो सपना ही होगा। अतः परम्परागत विचारधारा मान्यतावाद की परिसीमा से निकलना होगा, और विभिन्न मान्यताओं के सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान देना होगा, तो अवश्य ही मानवतावाद की सुगन्ध फैलेगी।

मानवताः मानव होने की पहली शर्त है। मनुष्य सिर्फ दो हाथ, दो पैर, दो कान, दो आँख, एक जीभ व एक नाक का समुचय नहीं, बल्कि मानवीय मुल्यों का ऐसा समुचय है, जो मानव को दुनियाँ के दूसरे जीवजन्तुओं से अलग श्रेष्ठ बनाता है। केवल मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है, जो दूसरे जीवों की पीड़ा समझ सकता है। वह अतीत से लेकर भविष्य की चिन्ता करता है।

हम जानते है, मानवीय मूल्यों का विकास कोई एक दिन में नहीं हुआ है बल्कि हजारों साल लगे है। भिन्न–भिन्न समय में विभिन्न स्तर पर मानव का विकास हुआ है।

उदाहरण स्वरूप प्रागैतिहासिक काल में मानव गिरि कंदराओं में रहा करता था, और कंद मूल फल आदि खाकर जीवन बिताता था। जब जानवरों ने उन पर हमला किया, तब मानवों ने एक साथ मिलकर उसका प्रतिकार किया। वही से मानवों में एक दूसरे मानव की सहायता करने का मन प्रस्फुटित हुआ। इस प्रकार

हम देखते है, कि बर्बर से विन्रम, दुर्जन से सज्जन बनने की यात्रा मानवों ने कई हजारों वर्षो में पूरी की। जिन लोगों में मानवीय मूल्य का खजाना नहीं है, वे मानव कहलाने लायक हो ही नहीं सकते। हाँ वो लोग मानव होने का नाटक जरूर कर सकते है। मानव के असली आभूषण मानवीय गुण ही होते है। और सोचे तो यही समग्र रूप से मानवता है। इसलिए मानवता ही मानवता होने की पहली शर्त है।

रही बात मानव–सेवा यानि समाज–सेवा में मानव की ही सेवा की जाती है। विभिन्न प्रकार की मान्यताओं को छोड़कर मनुष्य को एक मानवतावाद को अपनाकर एक दूसरे से प्रेम करना होगा, सभी मनुष्य को परमेश्वर को दिया हुआ रूप जानकर आपस में सहयोग करना होगा। जात–पात से उपर उठकर सभी को गले लगाते हुऐ समाज में चहुँओर मानवता की पताका लहरानी होगी। जय मानवता।

मानवता के असली पुजारी डॉ. अभिषेक कुमार जी संस्थापक अध्यक्ष एवं मुख प्रबन्धक निदेशक, दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केन्द्र की मधुर वाणी में कहा है–

"न जीवन जिया जा सकेगा, न मौत आऐगी।

हर तरफ सन्नाटा, गलियों में चीख आऐगी।

अंधेरे छा रहे होंगे, बिजली कौंध जाऐगी।

कभी तन्हाइयों में मानवता की याद आऐगी"

मान्यतावाद आज का नहीं है। इसकी जड़े पुराने समय से ही रूपि हुई है। आज भी पुरानी विचारधाराओं वाले ग्रामीण क्षेत्रों में सुदुर इलाकों में भेदभाव से मनुष्य को जात–पात के आधार पर हाँसिए पर रखा जाता है। उसे अलग–अलग रहने को मजबूर होना पड़ रहा है। जब प्रभू ने इस धरती पर जन्म दिया है, तो पहले वह मनुष्य है। मनुष्य मनुष्य एक होने चाहिऐ। अतः काफी गहराई से अध्ययन करने के पश्चात यह पाया गया है कि जब एक मत, पंथ, सम्प्रदाय के बैनर तले लोग वर्चस्व की लड़ाई लड़ेंगे तो निसंदेह दूसरे मान्यतावादी लोगों से खूनी संघर्ष होगा। और जब लोग मान्यतावाद से बाहर निकलकर मानवतावाद के स्वर में झनकार करेंगे तो अवश्य वातावरण में आपसी सद्भाव, एकता, सहयोग, सौहार्द, प्रेम

व तरक्की प्रस्फुटित होगी। चारों तरफ मानवता का प्रकाश फैलेगा। समाज में लोग आपस में सेवा–कार्यो को अन्जाम देते नजर आऐंगे।

आज के युग में मानवतावाद यानि लोगों में समाज–सेवा का प्रचलन अवश्य बड़ा है। समाज–सेवा में हर कोई व्यक्ति आगे आ रहा है। इसका प्रमुख कारण है लोगों ने समझ लिया कि जो लोग मान्यतावाद के चंगुल में फँसे हुऐ है। पुरानी लीक पर चलने से कोई फायदा नहीं है। दुःख में मान्यतावाद का समाज कोई साथ नहीं देता है, तो धीरे–धीरे मानवतावाद को अपना समाज–सेवा को तवज्जों देने लगा है।

जो व्यक्ति समाज सुधार के लिए आगे आता है, उसे अवश्य कष्टों का सामना करना पड़ता है। मगर उसकी परवाह किये बिना हम सबको सभी में मानवता के बीज बोने होंगे। मानवता की समाज में अलख जगानी होगी। तो ही सच्ची समाज–सेवा होगी। जब व्यक्ति सेवा करते हुऐ संसार से चला जाऐगा, तो अवश्य उसे समाज सदेव उसके कार्यो को याद करेगा। उसकी मानवता के रूप को बार–बार दोहरायेगा। इसीलिए कहा है–

"सूरत से कीरत बड़ी, बिना पंख उड़ जाए।

सूरत तो जाती रहे, कीरत कभी न जाय।।"

किसी को गीता में ज्ञान ना मिला,

किसी को कुरान में ईमान ना मिला,

उस बन्दे को आसमान में रब क्या मिलेगा

जिसे इंसान में इंसान ना मिला।

समाज–सेवा खुद का नजरियां (स्वाभिमत)

आज मैंने समाज सेवा व मानवता पर विभिन्न सामाजिक संस्थाओं, विभिन्न कर्मचारियों, अधिकारियों एवं समाज के प्रबुद्ध नागरिको से उनके समाज–सेवा कार्यो के बारे में जानकारी लेकर उनके विचार जानकर महसूस किया कि समाज–सेवा के प्रति उनका रवैया सकारात्मक है। कई व्यक्तियों का यह कहना हुआ कि हमारे पास

पैसे की तो कभी नहीं है, मगर सेवा करने का समय नहीं है। कईयों का रवैया देखा वो सेवा तो करना चाहते है, मगर पैसे नहीं है। कोई तन से सेवा करने का इच्छुक है, उनके पास पैसा है।

कई इंसानों को पैसे का घमण्ड भी आ गया। वो न तो पैसा खर्च करना चाहते और न ही सेवा कार्य। क्योंकि मनुष्य की सेवा बन्दगी करना हर मानव के भाग्य में लिखी हुई नहीं रहती है।

मेरा इस अनुसंधान कार्य में यही सार निकलकर आया कि समाज–सेवा का कार्य हर किसी के बस का नहीं है।

"बड़ा आदमी बनना अच्छी बात है पर

अच्छा आदमी बनना बहुत बड़ी बात है।"

इस सेवा कार्य के बारे में मैंने यह पाया कि इंसान यदि इस घरती पर आया है, वो उसे स्वयं का ध्यान कम रखकर, दूसरों के लिए अपने को लगा देना ही मानव का सच्चा धर्म है। स्वयं संघर्ष करता रहे, मगर दूसरों के परोपकार की तरफ ध्यान देना ही सच्चा धन है। स्वयं के लिए तो सभी जीते है, परिवार के लिए तो सभी करते है।

जो लोग परिवार के लिए स्वयं के लिए कार्य करते हुऐ दूसरों का दुःख दूर करने की ईच्छा रखते है, वो ही असली मानव कहलाने के हकदार है।

"जीना उसी का जीना, जिसने यह राज जाना।

है काम आदमी का, औरों के काम आना।।"

इसी संदर्भ में मैं जय शंकर प्रसाद जी के कथन को प्रस्तुत करता चाहूँगा

"औरों को हँसते देखो मनु, हँसो और सुख पाओ।

अपने सुख को विस्तृत करलो, जग को सुखी बनाओ।।"

मैंने इस अनुसंधान कार्य करने पर पाया कि 20–30 वर्षो में मनुष्य का समाज–सेवा के प्रति नजरिया बदला है। लोगों की रूचि समाज के विभिन्न कार्यो में बढ़ी है।

पहले दो चार संगढ़न ही ऐसी सेवा हेतु कार्य करते थे, मगर आज के इस व्यस्ततम युग में भी हजारों संस्थाऐ समाज–सेवा के कार्यो में सलंग्न हो चुकी है। एक समय था, जब सेवा कार्य करने वालों को पागल समझा जाता था, लेकिन मीडिया वालों ने समाज–सेवा की गरीमा को ऊँचे शिखर पर लाकर खड़ा कर दिया। आज का युवा वर्ग तो मानो इस और विशेष रूप से आगे आया है। मारवाड़ी की एक कहावत चरितार्थ होती है–"खरबूजे को देखकर, खरबूजा रंग बदलता है। इसका मतलब यह हुआ कि एक युवा को देखकर उसके सेवा कार्य का अनुसरण दूसरा युवा करने लगा। चाहे गौ सेवा हो, विकलांग व्यक्तियों की सेवा हो, किसी भी प्रकार का चिकित्सा संबन्धी शिविर हो, चाहे फिर ब्लड डोनेशन का सेवा–कार्य हो। युवा वर्ग हर कार्य में अपने को संलग्न करके समाज–सेवा व मानवता का परिचय दे रहा है।

हर व्यक्ति किसी न किसी समाज–सेवी संस्थान से जुड़कर समाज–सेवा करना चाहता है। यहाँ तक कि नारी भी इस कार्य में आगे आ रही है। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए उन्हें निःशुल्क सिलाई कढ़ाई, कम्यूटर ज्ञान, चित्रकारी, तथा घरेलू कार्यो को सम्पादित करने का निःशुल्क प्रशिक्षण देने का सेवा कार्य विभिन्न संस्थाओं द्वारा किया जा रहा है। यही सच्ची मानवता की पहचान है।

गरीबी के कारण कई परिवार अपनी बेटियों की शादी नहीं कर पाते है, उनकी शादी का पूरा इन्तजाम ये संस्थाएँ करती है।

मैं कहना चाहूँगा समाज–सेवा का क्षेत्र बहुत विशाल है। यदि मानव चाहे तो किसी भी क्षेत्र को चुनकर समाज–सेवा कर सकता है। अखबार व दूसरे साधनों से पता चलता है कि समाज–सेवा करने के और कौन–कौनसे जरीये हो सकते है। जैसे पर्यावरण सरंक्षण, जनसंख्या नियोजन, नारी सशक्तिकरण, स्वच्छता, स्वच्छ समाज, नशा मुक्ति अभियान, दहेजप्रथा, गरीबी उन्मूलन, अशिक्षा जैसे मुद्दे से आज हर व्यक्ति लाभान्वित हो रहा है।

इसके अलावा मैंने अनुसंधान में पाया कि बड़े बड़े राजनेता भी इस समाज–सेवा मैं अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे है। आज सबको विदित है कि राजनेता के पास पैसे की कोई कमी नहीं होती, मगर कुछ राजनेता सेवा–कार्यो की भी सोचते है, मैं एक राजनेता का उदाहरण देना चाहूँगा। नवीन कुमार राय, कोलकता इनका कहना है कि मौजूदा राजनीति करने वालो के लिए लोगों में यह ग्रन्थी बनी हुई है कि लोग राजनीति में पैसा कमाने के लिए आते है। लेकिन इन्होंने कहा, मेरे पास पैसा तो बहुत है, खूब कमा लिया, लेकिन अब मैं समाज–सेवा करना चाहता है।

इसी प्रकार देश के मशहूर फिल्मी सितारें भी समाज–सेवा में अपनी भुमिका निभा रहे है। उनके पास भी पैसों की भरमार है, वो पर्दे पर नहीं, असल में वो समाज–सेवा कर रहे है। आज के अनेक सितारें आगे आकर खुद गरीबो, बेसहारा, दूखियों के दुखड़े सुनकर उनकी समस्याओं को दूर करने में लगे है। रवि बूले बता रहे है– सिनेमा से समाज–सेवा नहीं हो सकती। सिनेमा से समाज में बड़ा बदलाव या क्रान्ति नहीं आ सकती। इन्हीं सोच के साथ स्वयं फिल्म निर्माता इन दिनों में अपनी सामाजिक सेवा कार्यो में सलंग्न होते दिखाई दे रहे है। ये लोग सेवा कार्य के लिए जमीन पर उतर आये है। और निस्वार्थ सेवा कर रहे है।

उदाहरण अभिनेत्री विद्याबालन सिर्फ टीवी विज्ञापन ही नहीं करती, बल्कि व्यक्तिगत प्रयासों से कई गाँव, कस्बों में उन्होंने शौचालय बनवाऐ है। इसी तरज पर निर्माता–निर्देशक राकेश ओमप्रकाश मेहरा भी शौचालय बनवाने के काम में अंजाम दे रहे है। मगर प्रचार–प्रसार से दूर है।

शौचालय के आभाव में खास तोर से लड़कियों को होने वाली परेशानियों ने मेहरा को इस और प्रेरित किया। समाज–सेवा कार्य में वो अपने आप को कोरपोरेट को अपनी मुहिम से जोड़कर गुजरात में साढ़े तीन सौ टॉयलेट बनवा चुके है।

इसी श्रेणी में इन सितारों में स्वच्छता अभियान के प्रति भी समाज–सेवा करने की होड़ मची है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वच्छता अभियान को काफी सफलता मिली है। मुख्य फिल्मी सितारों अमिताभ अच्चन, सलमान खान, प्रियंका चोपड़ा, कमल हासन, अनुपम खेर से लेकर हेमा मालिनी तक इस पुनित कार्य में जुड़े है।

समाज–सेवा के दायरे में मानवता का परिचय देते हुऐ प्रसिद्ध अभिनेता नाना पाटेकर का उदाहरण देना चाहूँगा। इन्होंने महाराष्ट्र में किसानों द्वारा आत्महत्या देश में पिछले कुछ वर्षो के सबसे दुखद समाचारों में है। राज्य सरकार अपने स्तर पर रोकने का कार्य कर रही है, परन्तु नाना पाटेकर ने अपना रोल समाज–सेवा का ज्वलंत उदाहरण पेश किया। स्वयं के खर्चो से एक बेडरूम वाले अपार्टमेन्ट में रहते हुऐ नाना ने अपनी 90 फीसदी कमाई गरीब किसानों व उनके परिवार को बांट दी।

नाना फॉउंडेशन आर्थिक मदद के साथ–साथ गाँवों में तालाबों नहरों की खुदाई के काम में लगा है। ताकि खेती के साथ–साथ पीने का साफ पानी भी मिले। जरूरत मंदो की मदद से नाना इतने गहरे जुड़े है कि कहते है, मरते दम तक जीने की वजह मिल गई मुझे।

इसी श्रृंखला में अक्षय कुमार भी सामाजिक सेवा में पीछे नहीं है। कोरोनाकाल में अक्षय कुमार ने पीएम केयर्स फंड में योगदान दिया था। प्रधानमंत्री कोष में 25 करोड़ रूपये का दान दिया। उनकी पत्नी ट्विंकल खन्ना ने एक अन्य गैर अलाभकारी संस्था डेविड फॉउंडेशन को 100 आक्सीजन सांद्रक और 5000 नेजल कैन्यूल भेजे। टिवंकल ने इंस्टाग्राम पर सभी से आग्रह किया, वे कोविड–19 से लडने में मदद के लिए आगे आये। इसके अलावा अक्षय स्वयं स्टंट मैन है वे एक्शन हीरो है। एक एक्शन स्टंट डाइरेक्टर की मौत के बाद बीमा योजना शुरू की थी। इसलिए योजना के तहथ अब्दुल के परिवार की मदद की है। दो साल पहले एक स्टंटमैन के परिवार के लिए 20 लाख का मुआवजा पाना असंभव था। मगर अक्षय ने कदम आगे बढ़ाया और 550 स्टंटमैंन के लिए दुर्घटना बीमा पॉलिसी व मेडी–क्लेम बीमा खरीदा।

इसलिए समाज–सेवा का होना जीवन में प्रत्येक व्यक्ति के लिए उतनी ही जरूरी है, जितनी मनुष्य शरीर को अन्य आवश्यक जरूरते पूरी करना। विद्वानों के अनुसार समाज–सेवा के लिए यही अभिमत निकलकर सामने आया है कि समाज–सेवा के बिना मानव जीवन अधुरा है। यदि उसके पास कितना ही पैसा शौर्य क्यों न हो। सेवा के बिना सब कुछ बेकार है। इसलिए कबिरदास जी ने कहा है–

"चिड़िया चोंच भर ले गई, नदी को घट्यो ना नीर।

दान दिये ना धन घटे, कह गये दास कबीर।।"

अतः मानव जीवन मिला है, तो मानव की सेवा करना अनुपम सेवा का उदाहरण होगा। जय मानवता।

समाज से हमारा तात्पर्य किसी समुदाय से मिलकर एक बडे समूह से होता है, जिसमें इंसान मानवीय क्रिया कलाप करते है। मानव से ही समाज का निर्माण होता है। किसी भी संगठित व असंगठित समूह को हम समाज की संज्ञा दे सकते है जैसे प्रार्थना समाज, जैन समाज, विद्यार्थी समाज, हिन्दू व मुस्लिम समाज।

विभिन्न विद्धानो ने समाज का अर्थ अपने–अपने तरीके से लगाया है जैसे समाज शास्त्र में समाज को सामाजिक संबंधो का जाल बताया है। समाज से ही मानव के व्यवहार की स्थिति अवगत होती है।

साथ में कुछ ना लेकर जा पाएगा

सब कुछ यहीं पर रह जायेगा

दुआएँ मिलेंगी गरीब लोगों की

अगर तू उनके लिए कुछ कर दिखाएगा

समाज सेवा व मानवता सार

किसी भी व्यक्ति की सेवा करना बड़ा सरल हो सकता है, मगर समाज की सेवा करना एक दुर्लभ कार्य होता है। एक बड़े समूह की सेवा करना काटों भरी जिन्दगी से खेलने के बराबर होता है। सेवा का रास्ता बड़ा कठिन है। वो ही इंसान इस क्षेत्र में कदम उठाता है, जिसे मान–अपमान, लाभ–हानि, दुःख कष्टों की कोई चिन्ता नहीं है। जिसने अपना जीवन दूसरों की भलाई व कल्याणार्थ लगाया है। वही मानव समाज सेवा के कार्य में आगे आता है।

वैसे देखा जाय तो मनुष्य एक सामाजिक समुदाय का सदस्य है। उसे न केवल स्वयं के बारे में चिन्तित होना चाहिऐ बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग के कल्याण व विकास हेतु कार्य की सोचनी चाहिऐ। यानि जन सेवा, जनार्दन सेवा। मनुष्य में आत्म सन्तुष्टि तब होती है जब वह परमार्थ की भूख मिटाता है, दूसरों की आँखों के आँसूओं को पौछें। उनकी प्यास बुझाये तो असली स्वर्ग का अधिकारी माना जायेगा।

समाज–सेवा मानव के भाईचारे के आदर्श पर आधारित होता है। असहाय, निराश्रित, गरीब वर्गो की मदद के लिए जो हाथ आगे आते है वो ही सच्चा मानव कहलाने का हकदार होगा।

आत्म बलिदान के बिना मानवता का परिचय अधुरा रह जाता है। इसके लिए इंसान को अपना अमूल्य समय व उर्जा खर्च करनी पड़ती है। आज के युग में मनुष्य केवल स्वयं के कल्याण की ही सोचता है, दूसरों की नहीं। मगर वर्तमान में कई मनुष्यों की सोचने की शक्ति में सकारात्मकता को देखा जा रहा है। समाज के निराश्रित, असहाय व्यक्तियों की सेवा में व्यक्ति आगे आ रहा है।

फिर भारत जैसे देश में समाज–सेवा एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। हमारें संविधान के अनुच्छेद 38 में विशेष रूप से बताया गया है कि राज्य लोगों के कल्याण को बढ़ावा देने व उनकी रक्षा करने का प्रयास करेगा। पाँच दशकों की योजना में, समाज कल्याण सेवाओ का उद्देश्य ही बच्चों के कल्याण, महिलाओं व समाज के शारीरिक व सामाजिक रूप से विकलांगों की सेवा करना था। वैसे भी भारतीय संस्कृति में समाज सेवा का स्थान उच्च कोटि का बताया गया है।

मानव पर्याय की दुर्लभता को पाना तभी सार्थक है जबकि हमारे जीवन में अध्यवसान/रागद्वेष कम हो। आज मानवता पर मान्यतावाद का भूत सवार हो चुका है। आज के युग में मानवीय गुणों व नैतिकता का पतन हो चुका है। तभी मानवता पर अनुसंधान किया जाना अति आवश्यक हो गया। दुनियां में निर्जिव वस्तु से लेकर सजीव तक सभी अपने अपने–अपने नियमों में बंधे हुऐ है। विश्व की सबसे श्रेष्ट रचना मनुष्यों को नियमों अनुशासन की डोर में बांधा नहीं जा सकता। उनके बीच दूरियां बढ़ गई है। ऐसे कृत्य व दृश्य आना शुरू हो गये, जहाँ मानव की मानवता शर्मसार होने लग गई। मानव का जीवन बिना नैतिकता, मानवता व आदर्श बिन्दु के परिफलन के बगैर पुष्पित और पल्लवित नहीं हो सकता। इसलिए मानवता पर नये सिरे से अनुसंधान करना जरूरी समझा गया। जबकि ऐसा नहीं है। कि पूर्व में इस पर शोध नहीं हुआ हो। सत्य सनातन, धर्म संस्कृति के अनेक संत, महात्मा, ऋषि–मुनियों ने वर्षो के तप, परिश्रम, अनुसंधान से जो वेद–पुराण, उपनिषद लिखे है, उनका अध्ययन, मनन, चिन्तन व जीवन में उतारने से वास्तव में मनुष्य का जीवन अमृत तुल्य माना जाता है। तथा मानवता के सर्वोच्च बिंदु पर पथ–प्रदर्शक

करने वाला प्रकाश पुंज बन जाता है। मगर आज की आधुनिक जीवनशैली में मनुष्य के पास चिन्तन, मनन, तथा स्वाध्याय के लिए समय कहाँ है। वह इस माहौल से दूर रहना चाहता है।

पौराणिक सभ्यता संस्कृति, इस पृथ्वी पर आये एक के अनेक असाधारण महापुरूषों के जीवन दर्शन व विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों के मूल सार पर अनुसंधान हो जिसमें मानवता के निचोड़, सत्य, प्रेम, आपसी एकता सौहार्द, भाईचारा, कल्याण, सद्भावना के मधुर निर्मल जल की नदियां बहें, जहाँ असंख्य प्यासे जी भर के, रोज पीये।

राजतंत्र का दीपक तो कभी का बुझ चुका है, प्रजातंत्र के दीपक में ज्यादा तेल बचा नहीं है, इस बीच उसके स्वार्थ, काम, क्रोध, मोह, मद लोभ, द्वेष, अहंकार, स्वार्थता, झूठ, कपट, बेईमानी जैसे हृदय विदादक घावों पर मानवता की मरहम लगाना अति आवश्यक हो गया। ऐसे में स्वकल्याण, जगत कल्याण, एवं आधुनिक भारत के नव–निर्माण में समाज सेवा व मानवता पर अनुसंधान प्रासंगिक हो जाता है।

इस अनुसंधान पत्र में इसी बात पर निचोड़ निकालने का प्रयास किया गया है, कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर उसे सारी गतिविधियाँ करनी होती है। मनुष्य खुद के लिए तो सारा कार्य करता ही है, अपने परिवार के लिए भी अपने को लगा देता है, मगर समाज का हिस्सा होने के नाते समाज सेवा का कर्तव्य बन जाता है। दूसरों के दुःख दर्द को समझना, बेसहारा, दीन हीन, दुःखियों के लिए भी वह कुछ करे। अपना जीवन तन, मन व धन से अनके दुखों को समझे और उनके चेहरों पर भी हँसी लाने का पुनित कार्य करे।

मानवता पर संत कबीर दास जी के कबीर दर्शन की परिकल्पना किसी एक जुनुनी मान्यतावाद को जन्म नहीं देती बल्कि विभिन्न मान्यताओं का सात्विक निचोड़, सर्वधर्म सौहार्द, आपसी एकता, अखंड़ता, सहयोग, कल्याण, सामंजस्य व मानवता को उजागर करती है। यही कबीर चौरा एवं कबीर की दुनियाँ का आत्म साक्षात्कार है।

किसी एक मान्यतावाद के परिसीमा में न रहकर विभिन्न मान्यताओं के सकारात्मक पहलुओं पर गौर किया जाए तो वह निःसंदेह मानवतावाद का सर्व श्रेष्ठ बिंदु होगा।

प्रस्तुत समाज सेवा व मानवता के शोध पत्र में समाज सेवा के विषय पर हर क्षेत्र को चिन्हित करने का प्रयास किया गया है, जिसमें इंसान की समाज सेवा करने का उद्देश्य, परिकल्पना, समाजसेवा की आवश्यकता, सेवा करने का तरीका, सेवा के फायदे एवं मानवता की उत्कृष्ठता के गुणों का बखान किया गया है। बड़े–बड़े उद्योगपतियों, संस्थाओं के द्वारा समाज के अभावग्रस्त इंसानों की हर तरह से मदद करने के लिए उनके द्वारा किये जा रहे मानवीय कार्यो को शामिल किया गया है। ताकि उनके इस नेक कार्यो से अभिप्रेरित होकर दूसरे लोगों में सच्ची मानवता के लक्षण प्रस्फुटित हो सके।

तभी किसी ने कहा है कि–

"सबसे बड़े अधिकार सेवा और त्याग से ही मिलते है।"

"मनुष्य की सेवा से बढ़कर और कोई धर्म नहीं।"

"जीवन में अनमोल मानव, हम इसका सत्कार करे।

हम मानव कहलाते है, तो दीन जनों से प्यार करें।।"

हाँलाकि आज के इस अंधाधुंध मशीनी युग में मानव के जो कर्तव्य हो होने चाहिऐ, इंसानियतता होनी चाहिऐ उसका पतन हुआ है। रिश्ते नाते, आपसी भाईचारा, प्रेम, वात्सल्य, प्यार, कल्याण की भावना, परोपकार की भावना का पतन हुआ है। इसका स्थान, बैर, ईर्ष्या, भाईभतीजावाद भ्रष्टाचार, रागद्वेष, लोभ आदि ने ले लिया है। मनुष्य स्वार्थी हो गया है। मगर फिर भी पुराने जमाने की जो सुंगन्ध मनुष्य में आती थी, उसकी भीनी–भीनी महक वापिस लौटती दिखाई दे रही है। इंसान समाज–सेवा के माध्यम से अपने को ढाल रहा है। उसमें मानव के प्रति प्रेम की भावना जाग्रत हुई है। कबीर जी की वाणी एवं उनके सद्विचारों का असर होने लगा है।

मनुष्य में जब तक मानवता के लक्षण उसके आचरण में नहीं आ जाते, तब तक उसका कोई मतलब नहीं रह पाता। भौतिक वस्तुओं को तो पाने में इंसान पूरा जीवन लगा देता है, मगर परमार्थ के लिए कुछ नहीं कर पाता, और धरती से विदा हो जाता है। साथ में कुछ नहीं ले जाता। यह कोई जीवन नहीं है।

असली मानव का जीवन तो वही है, जिसमें सादगी, सुन्दर व्यवहार, प्रेम, सहयोग, कल्याण, सौहार्द, सद्भावना के फूल खिले हो। इंसान के दुनियां से चले जाने के बाद पीछे से उसकी तारीफ हो, तो असली जीवन जीया है, अन्यता वही कहावत चरितार्थ होती है, "जो जन्मा है, उसकी मृत्यु निश्चित है।" जिसके कर्म अच्छे है, उसे सदा दुनियां याद करती है।

इस जमाने में पैसा तो प्रत्येक व्यक्ति के पास हो जाता है, चाहे किसी भी साधन से कमाया हुआ है। मगर मानवता का परिचय कम ही जगह देखने को मिलता है।

"नियम यह विधाता का, सभी आकर चले जाते है।

मगर कुछ लोग ऐसे होते है, जो जाकर भी नहीं जाते हैं।।

न वे भगवान होते है, न वे अवतार होते है,

मानवता से ओत प्रोत व्यक्ति, सच्चे अर्थो में फकत इंसान होते है।"

इसीलिए मनुष्य का एक ही कर्म व धर्म है, सच्ची मानवता। समाज–सेवा वो ही व्यक्ति कर पाता है, जिसमें मानवता (इंसानीयतता) समाही हुई होगी। समाज–सेवा व मानवता का नाता है, जैसे चोली और दामन का होता है।

इस अनुसंधान में यही सार निकलकर आया है, कि समाज–सेवा बिना मानवता के हो ही नहीं सकती। सेवा करने की भावना को मानवता ने ही जन्म दिया है। मानवता के सुन्दर लक्षणों से ही समाज–सेवा रूपी भावना को प्रस्फुटित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। जिस व्यक्ति ने अपने जीवन को मानवता की सेवा में समर्पित कर दिया, वही सच्चा सेवक कहलाने का हकदार होगा।

दुनियां में ईश्वर ने तो हमें एक जैसा बनाया है। जलवायु, स्थान, हमारा रंगरूप, जीने का तरीका अलग–अलग है। गुरूनानक जी कहते है–एक ही पिता की संतान होने के बावजूद हम ऊँचेनीचे कैसे हो सकते है। हम सब एक ही मिट्टी के बने है। जिस दिन यह बात समझ में आ जाएगी, जब मानवता की कलियाँ खिल उठेगी। मनुष्य, मनुष्य को प्रेम करने लग जाऐगा। आपसी भाईचारा, स्नेह, वात्सल्य का भाव व समझ में आ जाऐगा।

"हर धर्म हर मजहब, हर ईमान कहता है।

खिदमत कर इंसान की जिसमें भगवान रहता है।"

सभी धर्मो का यही कहना है, मानवता की सेवा ही सच्चे अर्थो में ईश्वर की सेवा करना है।

एक बार स्वामी विवेकानंद जी अमेरिका प्रवास पर थे, तो किसी ने उनसे पूछा कि कृपया आप मुझे अपने हिन्दू धर्म में दीक्षित करने की कृपा करें। स्वामी जी बोले महाशय मैं यहाँ हिन्दू धर्म के प्रचार के लिए आया हूँ, न कि धर्म परिवर्तन के लिए। मैं अमेरिकी धर्म प्रचारकों को यह संदेश देने के लिए आया हूँ कि वे अपने धर्म परिवर्तन के अभियान को सदैव के लिए बंद करके प्रत्येक धर्म के लोगों को बेहतर इंसान बनाने का प्रयास करे। इसी में हर धर्म की सार्थकता है।

वर्तमान में हमनें जाति पाती के आधार पर मानवता को भुला दिया है। उस ईश्वर को भी बांट दिया है। हर धर्म एक पवित्र अनुष्ठान भर है, जिससे चेतना का शुद्धिकरण होता है। धर्म समाज–सेवा व मानवता के मानवीय गुणों का विचार स्त्रोत है, जिसके सुन्दर आचरण से व्यक्ति अपने जीवन को चरितार्थ कर पाता है। समाज–सेवा के लिए न तो पर्याप्त संसाधनों की जरूरत होती है और न भौतिक वस्तुओं की। बस जरूरत है, केवल मानव के प्रति सुन्दर इंसानियतता को समझने की दृढ़ ईच्छाशक्ति की।

मानव रूप अल्लाह की रचना का एक चमत्कार है। इसके अपेक्षाकृत मामुली ढाँचे के भीतर संपूर्ण ब्रह्माण्ड का एक सूक्ष्म जगत समाया है। इसलिए शायद यह उचित है कि हम इंसानों को अपने स्वरूप पर गर्व हो।

अंहकार अक्सर दंभ में बदल जाता है, जो मानव जाति को निम्न समझे जाने वाले लोगों का शोषण व उन पर अत्याचार करने के लिए प्रेरित करता है। मनुष्य को उसके अंहकार पर चेतावनी देते हुऐ, इमाम हसन कहते है–"तुम्हें इतना गर्व किस बात पर है?" आपकी शुरूआत तरल पदार्थ की एक दुर्गंधयुक्त बूंद से होती है, आपका अंत एक सड़ी हुई लाश है और बीच में आप बर्बादी के एक बर्तन (ओर कुछ नहीं) है।

अतः असली जीवन मानव का कपटरहित, ईमानदारी, निहत्थों की सुरक्षा एवं सदैव मानव के कल्याणार्थ ही होना श्रेष्ठकर होगा।

समाज–सेवा व मानवता पर मैं कहना चाहूँगाः–

"जिस दिन मरोगे उस दिन यह समाज ही जलाकर अंतिम संस्कार करेगा।

समाज का जो कर्ज है, वो तो चुका दो यारो,

जीते जी समाज–सेवा में थोड़ा हाथ तो बंटा दो यारो।।

निस्वार्थ भाव से की गई सेवा का भी फल मिलता है,

जब किसी गरीब का चेहरा आपकी मदद से खिलता है।"

तभी किसी सन्त ने कहा है–इंसान तभी इंसान कहलाता है,

जब वह अपनी मानवता दिखाता है।

तो आइये हम सब मिलकर इस धरती पर प्रत्येक इंसान में मानवता के बीच बोऐ और सच्ची समाज–सेवा करने के लिए अभिप्रेरित करे।

अंत में मैं सभी को कहना चाहूँगाः–समाज–सेवा से बढ़कर इस दुनियां कुछ भी नहीं है। मेरा यह समाज–सेवा व मानवता पर किया गया शोध कार्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को प्रेम, सौहार्द, वात्सल्य, करूणा की भावना, प्यार, परोपकार से ओतप्रोत कर देगा, जिससे चहूँओर एक स्वर्ग का सा वातावरण बनाने में मददगार साबित होगा। राष्ट्र में, विश्व में, अत्यन्त शान्ति, प्रेम, का संदेश देने में

राम बाण का कार्य करेगा। इन्ही शुभकामनाओं के साथ–जय मानवता, जय इंसानियतता, सदा अमर रहे।

जीवन का मकसद हमने जान लिया

दिल में हमने ठान लिया

मानवता को हमने पहचान लिया

समाज सेवा ही हमने धर्म बना लिया।

सर्वे भवन्तु सुखिनः